₹ 20

जनवरी 2014

हिन्दी भाषियों की मासिक पत्रिका

क्रान्ति

- सरदार पटेल और धर्मनिरपेक्ष भारत
  —डॉ० रामबहादुर वर्मा
- मस्जिदे नबवी का निर्माण
  —मौलाना मु० मुजीबुद्दीन क़ासिमी
- उद्देश्यपूर्ण व्यक्तित्व के धनी : डॉ० मुक्तानी
  —डॉ० हसन रज़ा
- जीवन में नफ़रत की कोई जगह नहीं
  —डॉ० मुहम्मद अहमद
- लोकतंत्र कम, अभिनय और प्रदर्शन ज़्यादा
  —विद्या प्रकाश

SHALIMAR

RESTAURANT



Special Items

CHICKEN

- Murg Mumtaz
- Chicken Malaysia
- Jalwa Kabab
- Tirangа Kabab
- Seekh Kabab
- Multani Kaban

SEA FOOD

- Fish Tandoori
- King Prawns Tandoori
- Fish Angara

VEG

- Paneer Tikka



CHICKENS KABABS

- Chicken Tandoori
- Chicken Liver Takka
- Chicken Tikka
- Murg Kohinoor
- Reshmi Kabab
- Sholay Kabab
- Pahadi Kabab
- Khazana Kabab
- Chaurangi Kabab
- Sonali Kabab

Exclusively at : Shalimar Corner, Bhendi Bazar,Mumbai-400003
E-mail : info@shalimargroup.com, www.shalimargroup.com
Tel. : 23456630/34, Fax : 23456629

आपकी आशाओं का सुन्दर प्रतिबिम्ब

हिन्दी भाषियों की मासिक पत्रिका

कान्ति

वर्ष 23 अंक 7 जनवरी 2014

अल्लाह चाहता है कि तुम पर दयादृष्टि करे, किन्तु जो लोग अपनी तुच्छ इच्छाओं का पालन करते हैं, वे चाहते हैं कि तुम राह से हट कर बहुत दूर जा पड़ो। –क़ुरआन

संपादक

डॉ० मुहम्मद अहमद

अपने विचार, लेख, रचनाएं भेजने एवं संपादकीय मामलों के लिए लिखें–

संपादक, 'कान्ति' मासिक

डी-314, दावत नगर, अबुल फ़ज़्ल इन्कलेव

जामिया नगर, नयी दिल्ली–110025

ई मेल editorkanti@yahoo.com

* * *

ख़रीदार बनने, एजेंसी लेने, प्रचार-प्रसार एवं प्रबंधकीय मामलों के लिए लिखें–

प्रबंधक, 'कान्ति' मासिक

डी-314, दावत नगर, अबुल फ़ज़्ल इन्कलेव

जामिया नगर, नयी दिल्ली–110025

* * *

फ़ोन संपादकीय एवं प्रबंधकीय

09818799223, 011-26949430

सहयोग राशि

एक प्रति रु० 20/- विशेषांक रु० 30/-

वार्षिक रु० 220/-, दो वर्ष 425/-

पांच वर्ष 1000/-, आजीवन रु० 5000/-

सऊदी अरब और खाड़ी के देशों से–100 रियाल

यूरोप व अमेरिका से–35 US डॉलर

वेब : **www.kanti.in**

चेक / ड्राफ्ट **'मासिक कान्ति'** के नाम से बनवाएं

कम हो गया एक वोटर

रोज़ की तरह
सब्ज़ी बना और आटा गूंथ
इन्तिज़ार में बैठी थी पार्वती,
बाहर अंधेरा हो रहा था घना
और ठंड होती जा रही थी पैनी
दो साल का गणेश गोद में लुढ़क कर
सो गया था भूखा ही...
हर आवाज़ पर चौकन्नी हो
बार-बार खिड़की से बाहर
टटोलती ही रही वह, मगर वो
रोज़ लौटते थे
गणेश के जो बाबू, नहीं लौटे कल की रात
तो नहीं ही लौटे...
इन्तिज़ार बना रहा इन्तिज़ार ही
हाव...हाव...हूऽ...हूऽ...हूऽ...
कुत्तों और सियारों की
आवाज़ें ही तैरती रहीं बस हवा में
सब्ज़ी पड़ी रही ठंडी की ठंडी
और सूख गया आटा भी
ऐसे ही बीत चली
आशंका और भय से थरथराती
पूस की एक और रात
फिर सवेरे-सवेरे
आज मिली ख़बर कि...
घर तक पहुंच पाने में लाचार
रात भर ठंड में अकड़
गणेश के बाबू की थम गयीं सांसें
हमेशा के लिए...
क्या पता आख़िरी पलों में
वह बुदबुदा भी पाया होगा या नहीं
ग ऽऽ णे ऽऽ शा ऽऽ पा ऽऽ र ऽऽ व ऽऽ ती ऽऽ
और इस तरह नये साल के शुरू में ही
जब बधाइयां दे रहे थे लोग एक-दूसरे को
गणेश और पार्वती के सपनों को
तार-तार करता इस महान लोकतंत्र का
कम हो गया एक वोटर ...।

● **कपिलेश भोज**

सोमेश्वर, अल्मोड़ा-263637 (उत्तराखंड)



कहां क्या है ?

कम हो गया एक वोटर (कविता)	–कपिलेश भोज	3
क़ुरआन ज्योति		5
सोने के समय क्या कहें ? (हदीस मंजरी)		6
आत्मघाती 'हिन्दू राष्ट्र' (संपादकीय)		7
गयत्री परिवार का युग परिवर्तन आन्दोलन (आपके पत्र)		9
इस्लाम में औरत का स्थान (अभिमत)		13
सरदार पटेल और धर्मनिरपेक्ष भारत	–डॉ॰ रामबहादुर वर्मा	15
जीवन में नफ़रत की कोई जगह नहीं	–डॉ॰ मुहम्मद अहमद	19
लोकतंत्र कम, अभिनय और प्रदर्शन ज़्यादा	–विद्या प्रकाश	21
अपहरण (लघुकथा)	–ओमप्रकाश बजाज	22
पवित्र क़ुरआन की विशेषताएं	–मौलाना मुहम्मद सुलैमान क़ासिमी	23
दस तांका	–डॉ॰ रामनिवास मानव	25
मस्जिदे नबवी का निर्माण (विशेष आयोजन)	–मौलाना मु॰ मुजीबुद्दीन क़ासिमी	26-27
कम्मो (कहानी)	–चांद ख़ां रहमानी	33
ज़रूरत है एक निर्णायक सामाजिक जागरण की	–बाबूलाल नागा	39
उद्देश्यपूर्ण व्यक्तित्व के धनी : डॉ॰ शबनम सुब्हानी	–डॉ॰ हसन रज़ा	41
हक़ से नफ़रत न करना मेरे दोस्तो (कविता)	–शेख़ बाकर अली	42
हिन्दी कविता की प्रीत भरी सुवास (पुस्तक समीक्षा)	–गिरीश पंकज	43
मौक़ा (कविता)	–डॉ॰ सुरेश उजाला	47
जादूगर और साधू (व्यंग्य)	–हरिशंकर परसाई	49
तितली (कविता)	–अमित कुमार लाडी	50

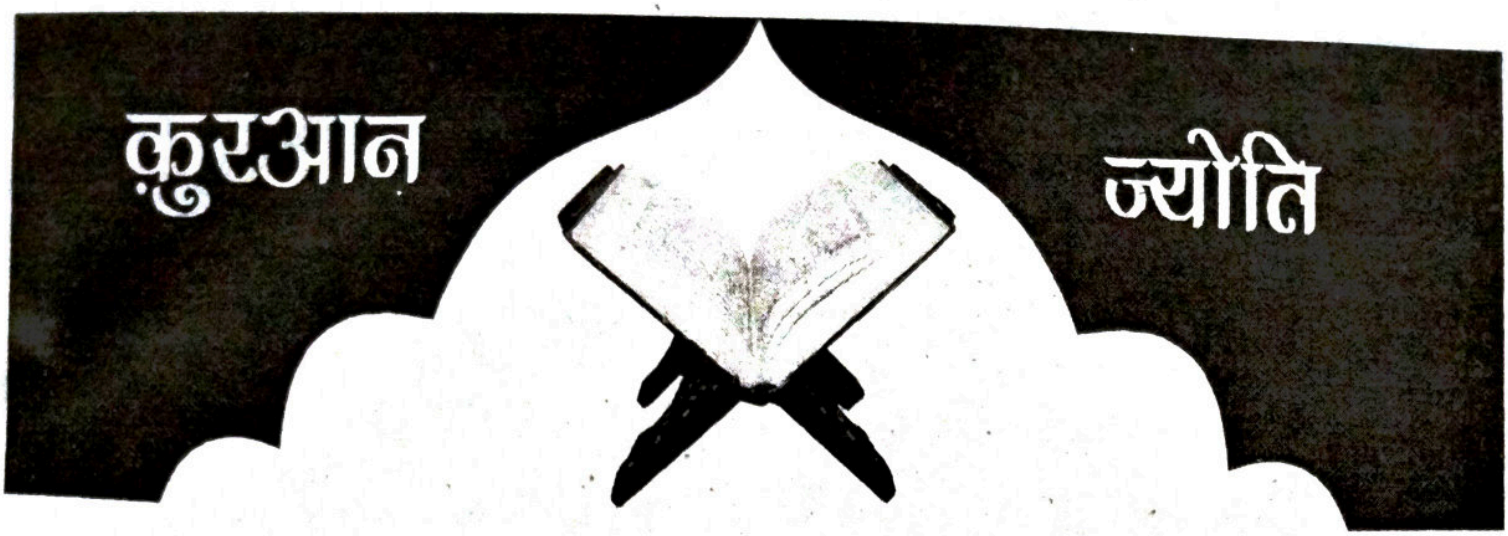

(42) ऐ नबी ! अगर लाभ आसानी से प्राप्त हो जाने वाला होता और यात्रा हलकी होती तो वे अवश्य तुम्हारे पीछे चलने पर तैयार हो जाते, परन्तु उन पर तो यह रास्ता बहुत बठिन हो गया ।[44] अब वे अल्लाह की क़सम खा-खाकर कहेंगे कि अगर हम चल सकते तो निश्चय ही तुम्हारे साथ चलते । वे अपने आपको तबाही में डाल रहे हैं । अल्लाह ख़ूब जानता है कि वे झूठे हैं ।

(43) ऐ नबी ! अल्लाह तुम्हें क्षमा करे, तुमने क्यों उन्हें छूट दे दी ? (तुम्हें चाहिए था कि स्वयं छूट न देते) ताकि तुम पर खुल जाता कि कौन लोग सच्चे हैं और झूठों को भी तुम जान लेते ।[45] (44) जो लोग अल्लाह और आख़िरत के दिन पर ईमान रखते हैं वे तो तुमसे कभी यह निवेदन न करेंगे कि उन्हें अपनी जान व माल के साथ जिहाद करने से माफ़ रखा जाए । अल्लाह डर रखने वालों को ख़ूब जानता है ।

–क़ुरआन, 9 : 42,43

---

44. अर्थात यह देखकर कि मुक़ाबला रूम जैसी शक्ति से है और मौसम तेज़ गर्मी का है और देश में अकाल पड़ा हुआ है और नये वर्ष की फ़सलें, जिनसे आस लगी हुई थी, कटने के क़रीब हैं, उनको तबूक की यात्रा बहुत ही बोझ मालूम होने लगा ।

45. कुछ मुनाफ़िक़ों ने बनावटी बहाने पेश करके नबी (सल्ल०) से छूट मांगी थी और नबी (सल्ल०) ने भी अपने नर्म स्वभाव के कारण यह जानने के बावजूद कि वे मात्र बहाने कर रहे हैं, उनको छूट दे दी थी । इसे अल्लाह ने पसन्द नहीं फ़रमाया और आपको सचेत किया कि ऐसी नर्मी उचित नहीं है । छूट दे देने के कारण इन मुनाफ़िक़ों को अपने निफ़ाक़ पर परदा डालने का अवसर मिल गया । अगर उन्हें छूट न दी जाती और फिर ये घर बैठे रहते तो उनका ईमान का झूठा दावा बेनक़ाब हो जाता ।

For Information On
City Shops, Roads, Restaurants, Magazine, Schools and much more.
Syed Shahbaz Alam Barvi
Business Development Director (09049185093)
Visit us:
www.shoppinglanes.com



सोने के समय क्या कहें ?

● हज़रत हुज़ैफ़ा (रज़ि॰) और हज़रत अबू ज़र (रज़ि॰) से रिवायत है । वे कहते हैं कि जब अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) बिस्तर पर जाते, तो यह कहते हैं : ''बिस्मि-कल-लाहुम्मा अह्या व अमूतु' (ऐ अल्लाह, मैं तेरे नाम के साथ जीता हूं और मरता हूं)।'' –बुख़ारी

● हज़रत अली (रज़ि॰) से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) ने उनसे और हज़रत फ़ातिमा (रज़ि॰) से कहा : ''जब तुम दोनों अपने बिस्तरों पर जाओ ।'' या कहा : ''जब तुम दोनों आराम करो, तो तैंतीस बार 'अल्लाहु अकबर' (अल्लाह सबसे बड़ा है) और तैंतीस बार 'सुबहानल्लाह' (महान है अल्लाह) और तैंतीस बार 'अलहम्दोलिल्लाह' (प्रशंसा अल्लाह ही के लिए है) पढ़ लिया करो ।'' और एक रिवायत में है : 'सुबहानल्लाह' चौंतीस बार कहो ।'' और एक रिवायत में है : 'अल्लाहु अकबर' चौंतीस बार कहो ।'' –बुख़ारी, मुस्लिम

● हज़रत अबू हुरैरा (रज़ि॰) से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) ने कहा : ''जब तुममें से कोई अपने बिस्तर पर जाए, तो उसे चाहिए कि वह अपने बिस्तर को अपने तहबंद के भीतरी हिस्से की तरफ़ से झाड़ दे क्योंकि उसे नहीं मालूम कि उसकी अनुपस्थिति में उस पर क्या चीज़ पड़ गयी हो । फिर कहे : 'तेरे नाम के साथ मेरे रब, मैं अपना पहलू (बिस्तर पर) रखता हूं और तेरे नाम के साथ ही उसे उठाऊंगा यदि तू मेरे प्राण को रोक ले (अर्थात मेरी मृत्यु हो जाए), तो उस पर दया कर और यदि तू उसे छोड़ दे, तो उसकी रक्षा कर जैसा कि तू अपने नेक बन्दों की रक्षा करता है ।'' –बुख़ारी, मुस्लिम

● हज़रत आइशा (रज़ि॰) से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) जब अपने बिस्तर पर आराम करते, तो सूरह अल-फ़लक़ और सूरह अन-नास पढ़कर अपने हाथों पर फूंक मारते और अपने हाथों को अपने शरीर पर फेरते । –बुख़ारी, मुस्लिम

और बुख़ारी, मुस्लिम की एक रिवायत में है : नबी (सल्ल॰) हर रात जब अपने बिस्तर पर जाते, तो अपनी दोनों हथेलियों को मिलाते, फिर उनमें फूंक मारते और उनमें सूरह अल-इख़्लास, सूरह अल-फ़लक़ और सूरह अन-नास पढ़ते और फिर जहां तक संभव होता अपने शरीर पर हाथ फेरते और इसका आरंभ सिर, चेहरे और अपने शरीर के सामने के भाग से करते । ऐसा आप तीन बार करते । –बुख़ारी, मुस्लिम

● हज़रत बराअ बिन आज़िब (रज़ि॰) से रिवायत है । वे कहते हैं कि अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) ने मुझसे कहा : ''जब तुम अपने बिस्तर पर लेटने का इरादा करो, तो उस तरह वुज़ू करो जैसे नमाज़ के लिए वुज़ू किया जाता है । फिर अपने दाहिने करवट पर लेटो और यह पढ़ो : 'ऐ अल्लाह, मैंने अपने प्राण तुझे सौंपे और मैंने अपना मामला तेरे हवाले किया और अपनी पीठ तेरी ओर लगायी तेरी लालसा लिए हुए और तुझसे डरते हुए । तुझसे हटकर न कोई शरणस्थल है और न मुक्ति स्थल है, है तो बस तेरे ही पास । मैं तेरी किताब पर ईमान लाया जो तूने उतारी और तेरे नबी पर जिसे तूने भेजा ।' यदि तुम इस हालत में मर गये, तो तुम सत्य-स्वभाव (इस्लाम) पर मरे । इन्हीं शब्दों को तुम सोने से पहले अपना अन्तिम शब्द बनाओ ।''

–बुख़ारी, मुस्लिम

('रियाज़ुस्सालिहीन' से)

इस्लाम-परिचय : हिन्दी वेबसाइटें

www.islamdharma.org
www.islamic videos.com
www.islamicwebdunia.com
www.quranhindi.com

आत्मघाती 'हिन्दू राष्ट्र'

भाजपा के प्रधानमंत्री पद के 'उद्घोषित' उम्मीदवार नरेन्द्र दामोदरदास मोदी ने जम्मू (कश्मीर) में एक दिसम्बर 2013 को एक जनसभा को संबोधित करते हुए संविधान की धारा 370 पर बहस की वकालत की है । उन्होंने ज़ोर देकर कहा कि संविधान के इस प्रावधान ने 'समुचित विकास और सशक्तीकरण' से जम्मू कश्मीर को वंचित रखा है । नरेन्द्र मोदी का कहना है कि इस धारा का इस्तेमाल सांप्रदायिकता को बढ़ावा देने और नागरिक के रूप में महिलाओं को उनके हक़ से महरूम रखने में ढाल के तौर पर हो रहा है । ज्ञातव्य है कि भाजपा इस धारा को पूरी तरह समाप्त करने की मांग करती रही है । मोदी का यह बयान भाजपा अध्यक्ष राजनाथ सिंह के उस बयान के अनुवर्तन में है, जिसमें उन्होंने कहा था कि संसद में इस बात पर बहस होनी चाहिए कि क्या इस धारा से भारत प्रशासित जम्मू-कश्मीर को फ़ायदा हुआ है और लोगों का राजनीतिक सशक्तीकरण हुआ है या नहीं । उनका यह भी कहना था कि अगर ऐसा नहीं हुआ है तो इस धारा को रद्द कर देना चाहिए । उधर मोदी के बयान पर जम्मू-कश्मीर के पूर्व मुख्यमंत्री फ़ारूक़ अब्दुल्लाह ने त्वरित टिप्पणी करते हुए यह भावनात्मक प्रतिक्रिया दी है कि मोदी दस बार भी देश के प्रधानमंत्री बन जाएं, लेकिन धारा 370 नहीं हटा पाएंगे । मोदी अपने प्रचार में आख़िरकार अपनी पार्टी के हिंदुत्व के एजेंडे का पर्दाफ़ाश करके, अपने संकल्प को दोहराकर इस साल होने वाले आम चुनाव के मद्देनज़र तथाकथित हिन्दू राष्ट्र बनाने की दिशा में देश विषाक्त वातावरण बनाने का प्रयास किया है । इस बार हिन्दुत्व का खुलेआम नारा धर्म संसद ने लगाया था और नरेन्द्र मोदी को अपना 'भावी प्रधानमंत्री' घोषित कर दिया था । इस क़दम का समर्थन संघ प्रमुख मोहन भागवत ने तत्काल करके संघ समर्थकों से इस लक्ष्य की प्राप्ति में जुट जाने का आह्वान किया । उनका कहना था कि हिन्दू भाव को समझने वाला व्यक्ति ही प्रधानमंत्री की कुर्सी पर बैठे । धर्म संसद में मोदी पर मुहर लगने के साथ ही अयोध्या में मन्दिर बनाने हेतु संकल्प व्यक्त किया गया । इसे लक्ष्य प्राप्ति के लिए प्रभावकारी हथियार माना जा रहा है । अब यह कहा जा रहा है कि इस मसले को संसद हल करे और मन्दिर निर्माण की इजाज़त दे । कांची कामकोटि पीठम के शंकराचार्य जयेंद्र सरस्वती की अध्यक्षता में गत वर्ष के अवसान काल में सम्पन्न हुई धर्म संसद की बैठक में दो नारे लगाये गये–''मन्दिर का निर्माण हो'' और ''देश का प्रधानमंत्री कैसा हो, नरेन्द्र मोदी जैसा हो''। रामानुजाचार्य प्रपन्नाचार्य ने कहा कि मोदी के प्रधानमंत्री बनते ही समस्याओं का अंत हो जायेगा और मन्दिर बन जाएगा । योगी आदित्यनाथ ने मन्दिर बनाने के लिए संसद को घेरने की बात कही और इस मुहिम को पहले की तरह गांवों तक ले जाने का संकल्प लिया । भाजपा के अध्यक्ष राजनाथ सिंह का भी विगत वर्ष के आरंभ में कहना था कि ''केन्द्र में राजग-शासन था, लेकिन भाजपा के पास अपने बल पर पूर्ण बहुमत नहीं था । इसलिए लोगों को लगता था कि अपने मूल मुद्दों के प्रति हमारी प्रतिबद्धता कम हो गयी है, लेकिन ऐसा नहीं है । राम मन्दिर, समान नागरिक संहिता, धारा 370 जैसे मुद्दों के प्रति हमारी प्रतिबद्धता यथावत है । लेकिन ये ऐसे मुद्दे हैं, जिनके बारे में भाजपा पूर्ण बहुमत की सरकार में ही कुछ कर सकती है । जैसे ही हमें केन्द्र में पूर्ण बहुमत की सरकार बनाने का अवसर मिलेगा, हम अपनी प्रतिबद्धता वाले मुद्दों को वरीयता देंगे'' ('पांचजन्य', 20 फ़रवरी 2013)।

अब हम उक्त बातों पर एक वस्तुपरक दृष्टि डालने की कोशिश करेंगे । जहां तक नरेन्द्र मोदी को प्रधानमंत्री बनाने का ख़्वाब है, उस समय तक पूरा नहीं हो सकता, जब तक भाजपा पूर्ण बहुमत के साथ सत्ता में न आये और भाजपा में सिरफुटव्वल और गुटबंदी की कैफ़ियत किसी हद तक कम हो । इन दोनों अनुकूल स्थितियों का आना बहुत ही मुश्किल है, क्योंकि दोनों को भारतीय जनता का बृहत्तर वर्ग नापसंद करता है । कुछ महत्वपूर्ण राज्यों में भाजपा के नामलेवा बहुत ही कम हैं । पिछले दिनों के विधानसभाओं के चुनाव लोकसभा चुनाव के 'निर्णायक' या संकेतक नहीं हो सकते । मोदी ने गुजरात में जो नरसंहार किया, वह अक्षम्य है । इस पर भाजपा की चुप्पी भी अक्षम्य है । ज़ाहिर है, अगर पार्टी चाहती तो ऐसा कदापि न होता । जहां तक मन्दिर निर्माण की बात है, तो इसका मामला अदालत में है । मुसलमानों का बार-बार यही कहना है कि वे अदालत के फ़ैसले को मानेंगे और उन्होंने अमलन इसे माना भी है, क्योंकि मुसलमान शांतिप्रिय हैं । दूसरी ओर मन्दिर समर्थक ज़ोर-ज़बरदस्ती की बात करते हैं, जिसका किसी भी स्थिति में समर्थन नहीं किया जा सकता । समान नागरिक संहिता बनाने और धारा 370 को निरस्त करने की बात भी अव्यावहारिक और अशांति पैदा करने वाली है । मुसलमानों ने इस देश पर लगभग नौ सौ साल तक लगातार शासन किया, लेकिन उन्होंने हिन्दुओं पर अपना कोई क़ानून नहीं थोपा । जो कुछ लागू किया, सहमति से ही लागू किया । कभी 'मुस्लिम राष्ट्र' नहीं बनाया और न ही सद्भावना को बिगाड़ा । धर्म संसद में औपचारिक रूप से जिस कथित 'हिन्दू राष्ट्र' के प्रारूप पर चर्चा की गयी, वह अत्यंत निंदनीय है । लोगों के सामने जो घोषणापत्र पेश किया गया, उस पर एक निगाह डाल लीजिए–

''भारत प्रजातांत्रिक राज्य है । यहां बहुमत का राज्य चलता है, हिन्दू यहां बहुमत में है इसलिए भारत में हिन्दू मत के अनुसार राज्य चलाया जाएगा । तदनुसार सत्ता में आने के बारह महीनों के भीतर वर्तमान संविधान में निम्नलिखित संशोधन किये जाएंगे–1. अनुच्छेद 13(4), निरस्त किया जाएगा और मौलिक अधिकारों पर लगी सारी शर्तें विलोपित की जाएंगी । 2. इसी क्रम में अनुच्छेद 368(3) भी निरस्त किया जाएगा । 3. अनुच्छेद 30 को निरस्त किया जाएगा । 4. अनुच्छेद 25(2A) निरस्त किया जाएगा । 5. जातीय आधार पर आरक्षण समाप्त करते हुए आर्थिक विपन्न के लिए करते हुए शासकीय पदों में 60 प्रतिशत आरक्षण का प्रावधान 10 वर्षों के लिए किया जायेगा । इसके बाद आरक्षण की अवधि दोनों सदनों में अलग-अलग तीन चौथाई बहुमत से ही वृद्धि की जा सकेगी । 6. अनुच्छेद 370 पूर्णतः निरस्त किया जायेगा । 7. विभिन्न मज़हबों के आबादी के अनुपात में विद्वानों की संख्या नियत करते हुए 'नागरिक संहिता परिषद' का गठन किया जाएगा और समान नागरिक संहिता तैयार की जायेगी । 26 जनवरी 2016 से समान नागरिक संहिता लागू की जायेगी । जो समुदाय अपनी अलग नागरिक संहिता चाहते हैं उन्हें उस मामले में वैधानिक न्यायालयों का संरक्षण प्राप्त नहीं होगा । ये मुद्दे चूंकि पंथनिरपेक्ष प्रजातंत्र के लिये मूलभूत हैं इसलिए इन्हें स्वीकार वाले दल को ही हिंदू मतदाता वोट देगा । ''इसी क्रम को आगे बढ़ाते हुए विहिप के कार्यकारी अंतर्राष्ट्रीय अध्यक्ष प्रवीण भाई तोगड़िया ने गत वर्ष दमोह (म०प्र०) में फ़रमाया था कि 'अगर मैं देश का प्रधानमंत्री बना, तो मुसलमानों से मताधिकार छीन लूंगा...प्रधानमंत्री बनने के दूसरे दिन देश के सभी संवैधानिक पदों से मुसलमानों को हटा दूंगा । कोई भी मुसलमान प्रधानमंत्री, मुख्यमंत्री, मुख्य सचिव, कलेक्टर, एस०पी० सहित पद पर नहीं रहने पाएगा' ('राजस्थान पत्रिका', इंदौर, 25 जनवरी 2013)। ज़ाहिर है ये सभी बयान और विवरण देश की एकता और शांति को पूरी तरह ख़त्म करने वाले हैं । अतः यह विध्वंसक एजेंडा रखने वालों को राजनीति से हरहाल में दूर रखना चाहिए और इनकी गतिविधियों पर तत्काल रोक लगनी चाहिए ।

गायत्री परिवार का युग परिवर्तन आन्दोलन

गायत्रि परिवार सनातन धर्मावलंबियों का एक महत्वपूर्ण धार्मिक संगठन है । इसकी स्थापना पं॰ श्रीराम शर्मा आचार्य (20 सितंबर 1911-20 जून, 1990) ने की थी । पं॰ श्रीराम शर्मा आचार्य आधुनिक काल के सनातन धर्म के प्रतिष्ठित विद्वान स्वीकार किये जाते हैं । इन्होंने अपने अनुयायियों से दृढ़तापूर्वक हमेशा यही कहा कि–'युग बदलने वाला है–नया समय शीघ्र आ रहा है ।''

पं॰ श्रीराम शर्मा आचार्य के अनुसार, ''युग परिवर्तन का अर्थ है आमूल-चूल परिवर्तन । छोटे-मोटे सुधारों और सामान्य परिवर्तनों से जब बात न बने तो पूरे युग का बदलाव ज़रूरी हो जाता है ।'' (अखंड ज्योति, पृष्ठ 5, फ़रवरी, 1998) । ''युग परिवर्तन की प्रक्रिया में हिमालय से ऊंची तप-साधना एवं सागर से भी गहरे दैवी रहस्य समाए हैं ।''

(वही, पृष्ठ 3)

''युग परिवर्तन होने को है । वर्तमान युग के स्थान पर सतयुग की प्रतिष्थापना होगी । विश्व की प्राण शक्ति अकुलाकर जाग रही है । विश्व कुंडलिनी के इस जागरण का केन्द्र बनेगा भारत । ऋषियों की चिरपुरातन गौरव भूमि पुनः जगत गुरु का मुकुट पहनेगी ।'' (वही, पृष्ठ 2 फ़रवरी, 1998)

''उसकी योजना के प्रायः अंतिम चरण में उपयुक्त समय पर एक शक्तिपुंज महामानव सामने आएगा और तब सभी चूहे जो आज दबे-दबे दिखायी देते हैं, साहसी बन जाएंगे ।'' (वही, पृष्ठ 2, फ़रवरी 1998)

''काल के गतिंमान चक्र का अधीश्वर महाकाल है । मानव समाज के प्रत्येक बड़े कार्य एवं सृष्टि की व्यापक फेरबदल में वह स्वयं सूत्र-संचालक का दायित्व संभालता आया है । इसे ही पश्चिम के मनीषी 'ट्साइट गाइस्ट' और पूर्वी तत्वेत्ता 'महाकाल' के नाम से संबोधित करते हैं । यह नाम है ही गंभीर अर्थ से परिपूर्ण । सड़ी-गली मान्यताओं, रूढ़ियों, कुरीतियों से खंडहर हो चुकी सामाजिक संरचना को मटियामेट कर उसके स्थान पर नूतन सृजन करने वाली महाशक्ति का उद्गम स्रोत यही है ।''

(वही, पृष्ठ 3, फ़रवरी, 1998)

''युग परिवर्तन की प्रस्तुत वेला में इस महान कार्य के लिए जो सुविधाएं सामने आएंगी, उनका उद्गम अदृश्य जगत से होगा । अदृश्य से ही दृश्य गतिविधियां प्रकट होंगी । जो कुछ भी किया जाना है वह ब्राह्मी चेतना से जुड़ा कारण शरीर ही करेगा । इक्कीसवीं सदी में ऐसे ही परिवर्तन होंगे, पर यह प्रतीत न होगा कि यह कैसे हो रहे हैं और कौन कर रहा है ।'' (वही, पृष्ठ 26, फ़रवरी, 1998)

पं॰ श्रीराम शर्मा आचार्य का विश्वास वैज्ञानिक आध्यात्मवाद में था । उनका यह कथन था कि कोई भी आध्यात्मिक सिद्धांत तर्क, तथ्य प्रमांण की कसौटी पर खरा सिद्ध होने के पश्चात् ही जीवित रह पाएगा । इस दिशा में शोध एवं अनुसंधान के लिए उन्होंने हरिद्वार में ब्रह्मवर्चस नामक शोध संस्थान की स्थापना भी की थी । इसी शोध संस्थान की देख-रेख में सैयद अब्दुल्लाह तारिक़ द्वारा रचित पुस्तिका–'युग परिवर्तन : इस्लामी दृष्टिकोण'–प्रकाशित हुई है । इस पुस्तिका में लेखक ने क़ुरआन और हदीस के अनेकों उद्धरणों द्वारा यह सिद्ध किया है कि युग परिवर्तन के उद्गम का समय ईशदूत हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) के 1500 ईसवी वर्ष बाद है ।

लेखक के अनुसार यदि गणना ईशदूत हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) के जन्म वर्ष से की जाए तो अब तक 1485 ईसवी वर्ष और कुछ माह बीत चुके हैं और 1500 ईसवी वर्ष पूरे होने में वर्तमान से मात्र 15 वर्ष का समय शेष है ।

ज्ञातव्य है कि लेखक द्वारा यह पुस्तिका मई, 2012 ई॰ में लिखी गयी थी । अतएव 1500 ईसवी वर्ष पूरा होने में 15 वर्ष का समय शेष होने की गणना इसी माह एवं वर्ष से की जानी चाहिए ।

पं॰ श्रीराम शर्मा आचार्य की गणना के अनुसार भी 'युग परिवर्तन का अनुमानित समय सन 2000 के कुछ बाद तक है ।'

युग परिवर्तन का इस्लामी दृष्टिकोण समस्त संसार में परिवर्तन से है; परंतु इस क्रांति का आरंभ भारत से ही

होगा । ईशदूत हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) ने फ़रमाया है कि, ''मुझे हिन्दुस्तान से मारिफ़त की भीनी-भीनी खुशबू आती है ।'' (सुबहतुल मरजान फ़ी तारीख़-ए हिन्दुस्तान, भाग 1) पं० श्रीराम शर्मा आचार्य ने भी कहा है कि भारत पुनः जगत गुरु का मुकुट पहनेगा ।

मुनव्वर हुसैन
प्रकाश होटल के पीछे,
222, पुरदिलपुर (गोलघर),
गोरखपुर-273001

दहेज मांगने वाले हर रिश्ते को ठुकराएं

हर साल 26 अगस्त को ''महिला समानता दिवस'' तो मनाया जाता है लेकिन दूसरी ओर महिलाओं के साथ दोयम दर्जे का व्यवहार आज भी जारी है और शायद तब तक जारी रहेगा जब तक कि महिलाएं खुद इस दुर्व्यवहार के ख़िलाफ़ उठकर खड़ी नहीं होंगी । पुरुष वर्ग हमेशा से महिला को एक चुनौती के रूप में देखता आया है । उसे लगता है कि यदि महिला बराबरी का हक पा गयी तो मेरा वजूद ही ख़त्म हो जाएगा । शायद यही डर उसे खाये जा रहा है । इसलिए पुरुष वर्ग खुद बराबरी का हक़ देने की पहल करेगा, यह सोचना सबसे बड़ी मूर्खता होगी ।

यदि महिलाओं को वास्तव में बराबरी का हक़ पाना है तो उसे सर्वप्रथम दहेजलोभियों को ठुकराना होगा और यह काम सिर्फ़ यू०पी० या बंगाल में ही नहीं वरन् सम्पूर्ण देश के सभी राज्यों, महानगरों, शहरों और गांवों में एक साथ करना होगा । बेटे और उनके दहेजलोभी बाप तो सुधरेंगे नहीं देश की सभी बेटियां यदि भीष्म प्रतिज्ञा कर लें कि जिस लड़के के परिवारीजन दहेज मांगेंगे मैं उससे शादी नहीं करूंगी । यदि देश की हर लड़की यह सौगंध ले ले तो दहेज लोभियों को बहुएं मिलनी बंद हो जाएंगी और जब पूरे देश में किसी भी दहेज लोभी लड़के को बहू नहीं मिलेगी तो अपने बेटों की शादी दहेजरहित करने के लिए मजबूर हो जाएंगे । तो उठो जागो और प्रण कर लो कि दहेज मांगने वाले हर रिश्ते को ठोकर मारोगी । तुम्हारे लिए बराबरी तक पहुंचने का पहला द्वार खुल जाएगा ।

ठाकुर पवन सिंह
विधूना, औरैया (उ०प्र०)

''सरकार चाहे तो घट सकती है महंगाई''

मैं मासिक पत्रिका 'कान्ति' का बराबर अध्ययन कर रहा हूं । इस पत्रिका के अन्तर्गत जो आलेख व रचनाएं आती हैं । अधिकांश सामाजिक व आध्यात्मिक दृष्टिकोण से वर्तमान परिप्रेक्ष्य में अत्यन्त महत्वपूर्ण है व भावी पीढ़ी को भारतीय संस्कृति की ओर ले जाने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर रही है । आपसे यही मेरा निवेदन है कि भविष्य में भी सांस्कृतिक ज्योति को अधिक प्रकाशमान करती रहे ।

नवम्बर 2013 अंक का मैंने अध्ययन किया । इसी अंक में शीर्षक 'सरकार चाहे तो घट सकती है महंगाई' (फेसबुक उवाच) रचयिता डॉ० मुहम्मद अहमद का मैंने रसास्वादन किया । रचयिता के विचारों से मैं पूर्णतया सहमत हूं ।

मैं अपने विचार से महंगाई के दो प्रमुख कारण मानता हूं । राजनेताओं फ़िल्मी कलाकारों व क्रिकेटरों के पास करोड़ों व अरबों की धनराशि है, स्टॉकिस्टों की स्टाक बढ़ाने की प्रवृत्ति आवश्यक वस्तुएं व आरामदायक वस्तुएं आदि ।

इन दोनों उपरोक्त प्रमुख कारणों को समुचित ढंग से हल कर लिया जाए तो काफ़ी हद तक महंगाई पर नियंत्रण किया जा सकता है व सर्वसाधारण वर्ग को अधिकांश राहत मिल सकती है । 67 वर्ष पूर्व स्वतंत्र हुए भारतवर्ष के लिए बड़े ही दुख का विषय है कि महंगाई दिन प्रति दिन बढ़ती जा रही है सर्वसाधारण वर्ग का जीवन-यापन करना कठिन-सा हो रहा है ।

महीने दर महीने आधार पर आवश्यक वस्तुओं, प्राइमरी आर्टिकल्स की महंगाई दर 13.54 फ़ीसदी से बढ़कर 14. 68 फ़ीसदी पर पहुंच गयीं । मास अक्तूबर 2013 में विनिर्माण वस्तुओं की महंगाई दर भी 2.03 से बढ़कर 2.5 फ़ीसदी हो गयी है । महीने दर महीने आधार पर अक्तूबर 2013 में ईंधन व ऊर्जा वर्ग की महंगाई दर 10.08 फ़ीसदी से बढ़कर 10.13 फ़ीसदी पर पहुंच गयी । इनसे बढ़ी महंगाई प्याज़, सब्ज़ियां व खाद्य वस्तुएं । अक्तूबर 2013 में फलों की क़ीमतों में 15.94 फ़ीसदी का इज़ाफ़ा हुआ जबकि वर्ष 2012 की इसी अवधि में यह वृद्धि 3.43 फ़ीसदी रही थी ।

दरअस्ल खुदरा महंगाई के बाद अब थोक महंगाई भी आठ माह के उच्च स्तर पर पहुंच गयी है । इसके चलते सरकार चाहे तो और सख़्ती बरत सकती है । क़ानून का सही ढंग से पालन करवाएं तो भविष्य के लिए महंगाई पर

नियंत्रण किया जा सकता है । वेतन की वृद्धि होने पर महंगाई की वृद्धि का अनुपात अधिक ही होगा ।

रामस्वरूप झैवर
9-10 शास्त्रीनगर-विस्तार मिलन मार्बल्स के नज़दीक,
भीलवाड़ा (राज॰)

जीवन की समृद्धि है बांटने में

प्राय: देखा जाता है कि पतंगा और तितली, दोनों सुन्दरता की ओर आकर्षित होते हैं, लेकिन पतंगा इस प्रयास में अपनी जान खो बैठता है वहीं तितली प्रशंसा की पात्र होती है । इस विरोधाभास का मूल कारण है पतंगा तो सौन्दर्य को हथियाने का प्रयास करता, जबकि तितली उसे दूसरे तक पहुंचाती है । इसी प्रकार जीवन की समृद्धि साधनों और सुविधाओं को बांटने में है, उन पर एकांगी आधिपत्य में नहीं । इसीलिए मुहम्मद (सल्ल॰) की हदीस में भी आदेश फ़रमाए गये हैं कि आप पड़ोसी का ध्यान ही नहीं रखें परन्तु यह भी देखें कि उसने खाना खाया भी है या नहीं । यदि इस आदेश पर संसार चलने लगे तो विश्व में एक भी व्यक्ति भूखा, नंगा और साधनहीन देखने से भी नहीं मिलेगा । यह एक मात्र तरीक़ा है विश्व में शांति, सुख और चैन लाने का ।

'कान्ति' माह नवम्बर 2013 के अंके में डॉ॰ मुहम्मद अहमद साहब का उक्त विषय पर लेख पढ़ा । आज महंगाई से सभी छोटे-बड़े त्रस्त हैं । परन्तु सरकार केवल रेपों और रिवर्स रेपो की दरों में घटा-बढ़ी कर महंगाई रोकने का प्रयास कर रही है । परन्तु दिनों दिन इसमें वृद्धि ही बढ़ रही है । महंगाई का मुख्य कारण है, सरकारी क्षेत्र में वेतन एवं वेतन भत्तों का निरंतर बढ़ाना और अनउत्पादक योजनाओं को जारी रखना । इसके अलावा दूसरा कारण है कर, शुल्क रायल्टी आदि की अत्यधिक दरों का होना । अब देखिये पेट्रोल पर सरकार रायल्टी एवं अन्य कर वसूलती है, वहीं राज्य सरकार सेस और वैट की मार मारती है । यदि सरकार इन्हें समाप्त कर दे तो पेट्रोल सस्ता हो जाएगा, जिससे भाड़ा सस्ता होगा और वस्तुओं की लागत कम होगी । जब सामान सस्ता होगा तो सरकार को भी सामान सस्ता मिलेगा जिससे उसे कम ख़र्च करना पड़ेगा और लोगों को राहत मिलेगी । लेकिन सरकार इन्हें बढ़ाती रहती है जबकि उसे इन्हें घटाना चाहिए और जब तक केरानी दरें बढ़ती रहेंगी महंगाई भी उसी रफ़्तार से बढ़ती रहेगी । चूंकि हमारी सरकार लोक कल्याणकारी सरकार कही जाती है अत: लोक कल्याण हेतु सरकार अब कर दरों को बढ़ाने के बजाय, उनको कम करे तो बात बन सकती है ।

एक बार नौशेरवां बादशाह खाना खा रहे थे कि बावर्ची से उनके कपड़ों पर ज़रा-सी सब्ज़ी गिर गयी । बादशाह का क्रोध बढ़ गया यह देखकर बावर्ची ने सारी सब्ज़ी उनके वस्त्रों पर डाल दी । बादशाह ने पूछा तूने जान-बूझकर ऐसा क्यों किया तो बावर्ची बोला मैंने आपके क्रोध को देख लिया था कि अब मेरी जान नहीं बचेगी । फिर मैंने सोचा कि बाद में लोग यह कहेंगे कि ज़रा-सी ग़लती के कारण मुझे मार दिया गया, जो बेगुनाह था । यही सोचकर मैंने सारी सब्ज़ी आप पर डाल दी ताकि दुनिया आपको बदनाम न करे और मुझे ही अपराधी समझे । नौशेरवां को उसके जवाब में इस्लाम का संदेश दिखा कि सेवक भाव पाना कितना कठिन है । उसने बावर्ची को क्षमा कर दिया । कहने का तात्पर्य यह है कि सेवा भाव ही दूसरे के दुखों को कम करता है और इससे मिलता है स्वयं को आनन्द । यदि विश्व में नेता लोग सेवा का भाव रखे तो विश्व में शांति होते ही नज़र आएगी और बढ़ेगा भाईचारा और सुख शांति ।

घेवर चन्द गोदीका
किशनपोल बाज़ार, जयपुर

श्रेष्ठ रचनाएं

गुलाब के फूलों और कलियों से महकता 'कान्ति' मासिक का नवम्बर 2013 अंक देखते ही चेहरा गुलाब-सा खिल उठा ।

'कान्ति' में प्रकाशित उच्चकोटि की रचनाओं ने मन को छू लिया, कमर राम नगरी की रचना 'ख़ुदा ख़ैर करे' 'अभिराम सत्यज्ञ जयशील की रचना 'जीवन में उजाला हो' और डॉ॰ मुहम्मद अहमद रचित 'सरकार चाहे तो घट सकती है महंगाई' श्रेष्ठतम रचनाएं हैं ।

यशपाल जैन 'आदर्श'
494/5, राजापार्क
जयपुर-302004 (राज॰)

पठनीय

'कान्ति' का अक्तूबर 2013 अंक पढ़ा । पिछले अंकों की तरह यह भी पठनीय एवं संग्रहनीय है ।

अभीजीत राणे
चीफ़ एडीटर 'मुंबई मित्र'
288/2288, मोती लाल नगर, गोरेगांव, मुंबई

इस्लाम में नैतिकता

'कान्ति' हिन्दी मासिक पत्रिका में आस्थावान व्यक्तियों के लिए इस्लाम धर्म की महत्वपूर्ण बातें नैतिकता और मौलिकता की प्रतीकात्मक पारदर्शिता को दर्ज कराती है। हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) ने सभी मानव प्राणियों को बराबरी का दर्जा दिया है। खुदा अर्थात सर्वजगत के मालिक के लिए जब लोग नमाज़ अदा करते हैं तो छोटा-बड़ा, ग़रीब-अमीर, निर्बल-सबल की श्रेणी में नहीं आंका जाता है। सब इन्सान बराबर हैं और जन्म लेने की प्रक्रिया एक है, मरण भी समान्तर होता है।

समझ में नहीं आता है कि अन्य धर्मों ने इन्सान को झूठे प्रपंचों में क्यों फंसा रखा है ? कई धर्मों में तो जाति पूछ कर ही उनके धर्मों के भगवानों के दर्शन कराते हैं, हम कब सुधरेंगे ?

डॉ० जसवंत सिंह जनमेजय
दिल्ली

नैतिक शिक्षा

गत दिनों दिल्ली की एक सत्र अदालत ने बच्चों में गिरते नैतिक मूल्यों तथा संस्कारों के प्रति चिंता प्रकट की है। इस संबंध में माता-पिता को अपने बच्चों में संस्कार पैदा करना चाहिए। शिक्षा प्राप्ति तथा खेल-कूद वग़ैरह में बच्चे 12-13 घंटे घर से बाहर रहते हैं। घर में जब वे मौजूद रहते हैं तो माता-पिता अपने व्यवसाय तथा बच्चे शिक्षा प्राप्त करने हेतु पाठशाला जाने की तैयारियों में जुटे होते हैं। शेष समय नींद व आराम का होता है।

इस बीच यदि उनमें नैतिक शिक्षा विकसित भी की जाए तो इच्छाशक्ति को नियंत्रित न कर पाने के कारण वे बाहरी वातावरण के अधीन हो जाते हैं तथा माता-पिता का थोड़ा-सा प्रयास मिनटों में चूर हो जाता है।

अतएव इस नैतिक शिक्षा को घरों के साथ-साथ प्रत्येक क्षेत्रों में अनिवार्य रूप से लागू किया जाना चाहिए ताकि घर में मिली शिक्षा, बाहरी वातावरण की नैतिक शिक्षा से मिलकर मज़बूत दीवार का रूप धारण कर सके।

मलिक
नागपुर

"यह कैसी पढ़ाई ?"

आज के वक़्त में बच्चों के स्कूलों से मिलने वाला होमवर्क इतना होता है कि अगर बच्चा घर आकर उस होमवर्क को करे तो और कोई काम कर ही नहीं सकता। मगर हर प्राइवेट स्कूल शायद इस होमवर्क से यह बताना चाहते हैं कि देखिए हम आपके बच्चे पर कितना ध्यान दे रहे हैं या हमारे स्कूल का यह स्टैंडर्ड है।

हैरानी तो यह देखकर होती है कि बच्चे के उस होमवर्क को घर पर मां-बाप या होम ट्यूटर पूरा करते हैं। हद तो तब हो जाती है जब स्कूल में उस होमवर्क पर बच्चे को A या A+ ग्रेड दिया जाता है, जिस होमवर्क को उस बच्चे ने किया ही नहीं।

क्या इन स्कूलों के टीचरों को यह बात समझ में नहीं आती कि यह होमवर्क इस अकेले बच्चे के बस का है या नहीं ? अब सवाल यह उठता है कि इससे नुक़सान किसका हो रहा है ज़ाहिर है कि उस बच्चे का और सिर्फ़ उस बच्चे का। सोचने की बात है कि इससे बच्चे का भविष्य बन रहा है या बिगड़ रहा है या फिर दोबारा पढ़ाई मां-बाप की हो रही है। यह फ़ैसला वह स्कूल करे या वह मां-बाप जो अच्छे ग्रेड के लालच में या मजबूरी में अपने बच्चे का होमवर्क करते हैं।

यक़ीनन अब आप यह कहेंगे कि इसका फिर क्या हल है तो मैं उन लोगों में से नहीं जो सिर्फ़ कहते हैं या लिखते हैं या जो इसका कोई हल जानते ही नहीं। मेरा विचार है कि स्कूल टीचरों को वह काम घर पर देने के बजाय अपनी क्लास के ब्लैक बोर्ड पर लिखकर देना चाहिए। फिर उस काम को सारे बच्चों से अपने सामने करवाना चाहिए और तब बच्चों के किये गये काम पर ग्रेड देना चाहिए।

अब वह स्कूल या वहां के टीचर यह कहेंगे कि 40 मिनट की क्लास में 40-50 बच्चों को हम पढ़ाएं या उनसे यह सब कराएं। तो मैं यह नहीं कह रहा कि आप पढ़ाएं नहीं, बल्कि जो आप पढ़ाएं उसी को हफ़्ते में एक-दो बार अपने सामने बच्चों से कराएं। इससे फ़ायदा यह होगा कि टीचर को भी समझ में आएगा कि जो हम पढ़ा रहे उसे बच्चे समझ भी रहे हैं या नहीं। फिर हर बच्चे की सही पर्फार्मेंस आपको समझ में आएगी कि वह किस ग्रेड का हक़दार है।

राशिद हुसैन
rashidnewdelhi@gmail.com

इस्लाम में औरत का स्थान

इस्लाम जिस अर्थ में औरत और मर्द को बराबर का द. ता है, वह यह है कि जिस तरह मर्द अल्लाह का बन्दा है, उसी तरह औरत भी । अल्लाह का बन्दा होने की हैसियत से जिस तरह मर्द इस संसार के लिए ज़रूरी है, उसी तरह औरत भी । ज़रूरत को सामने रखते हुए जिस तरह मर्द को एक विशेष उद्देश्य व प्रयोजन के लिए पैदा किया गया है, उसी तरह औरत भी एक विशेष उद्देश्य के लिए पैदा की गयी है । उद्देश्य के एतिबार से जिस तरह मर्द अपना मान-सम्मान और प्रतिष्ठा रखता है, उसी तरह औरत भी अपना एक विशेष मान-सम्मान रखती है ।

मान-सम्मान और प्रतिष्ठा को अपनी नज़र में रखकर जिस तरह मर्द अल्लाह की बन्दगी व इबादत करके अल्लाह की प्रसन्नता प्राप्त कर सकता है, उसी तरह औरत भी । अल्लाह की प्रसन्नता प्राप्त करने में धर्म और नैतिक चरित्र की बातों पर अमल करने में मर्द, औरत से आगे बढ़ सकता है और औरत मर्द से प्रतिष्ठित हो सकती है । अल्लाह तआला कुरआन में फ़रमाता है–"जो कुछ मर्दों ने कमाया है उसके अनुसार उनका हिस्सा है और जो कुछ औरतों ने कमाया है उसके अनुसार उनका हिस्सा । हां, अल्लाह से उसके अनुग्रह की दुआ करते रहो, यक़ीनन अल्लाह हर चीज़ का ज्ञान रखता है ।" (कुरआन, 4:32)

एक दूसरी जगह अल्लाह तआला फ़रमाता है–"अल्लाह का यह अनुग्रह है, जिसे चाहता है प्रदान करता है । अल्लाह विस्तृत साधनों का मालिक है और सब कुछ जानता है ।"

(कुरआन, 5:54)

अस्मा बिन्ते यज़ीद (रज़ि॰) एक मशहूर सहाबिया हैं, जो मशहूर सहाबी मअज़ बिन जबल (रज़ि॰) की फूफ़ीज़ाद बहन हैं । एक बार अस्मा (रज़ि॰) अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) की सेवा में उस वक़्त पहुंचीं, जब बहुत से सहाबा अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) के पास बैठे थे । उन सब की मौजूदगी में अस्मा (रज़ि॰) ने कहा कि या रसूलुल्लाह (सल्ल॰) ! मुझ औरतों की एक जमाअत ने अपना प्रतिनिधि बनाकर आपकी संवा में भेजा है । अल्लाह की क़सम मैं वही कहूंगी, जो उन्होंने कहकर मुझे भेजा है । निवेदन है कि अल्लाह ने आपको मर्दों व औरतों के लिए नबी बनाकर भेजा है । अत: आप पर ईमान लाएं और हमने वही किया, जो आपको करते देखा । हमने वही कहा, जो आपको कहते सुना । हमने उन सब बातों को माना, जिनके लिए आपने मानने का आदेश दिया, मगर हम औरतों का हाल यह है कि हम परदों के अन्दर रहने वाली और घरों के अन्दर बैठने वाली हैं ।

हमारा काम यह है कि मर्द हम से अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति करें और हम उनके बाल-बच्चों की परवरिश करते फिरें । या रसूलुल्लाह (सल्ल॰) मर्द जुमा और जमाअत, जनाज़ा और जिहाद जैसी हर चीज़ में हम से आगे निकल गये । वे जब जिहाद (धर्म-युद्ध) में जाते हैं तो औरतें उनके घर बार की रक्षा करती हैं, उनके बच्चों को संभालती हैं,



तो क्या पुण्य और सत्कर्म में भी उनके साथ हमको हिस्सा मिलेगा ?

अस्मा (रज़ि॰) की पूरी बात अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) ने बड़े ध्यान से सुनी । जब वे चुप हुईं तो आप (सल्ल॰) ने सहाबा (रज़ि॰) से फ़रमाया–''क्या तुमने इनसे बढ़कर सुन्दर व सरल भाषा में तक़रीर सुनी है, जिसने अपने दीन की बात पूछा हो ?''सारे सहाबा ने एक साथ कहा कि या रसूलुल्लाह (सल्ल॰) नहीं ।''

फिर अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) ने फ़रमाया, ''ऐ अस्मा ! मेरी मदद करो । जिन औरतों ने तुमको अपना प्रतिनिधि बनाकर भेजा है, उनको मेरा यह जवाब पहुंचा दो कि तुम्हारा अच्छी तरह से घर संभालना, अपने शौहरों को ख़ुश रखना और उनका साथ देना, मर्दों के उन सारे कामों के बराबर है, जो तुमने बयान किये हैं ।''

रिवायत में आता है कि जब अस्मा (रज़ि॰) ने यह संदेश औरतों को जाकर सुनाया तो औरतों को उतनी ख़ुशी कभी नहीं होती थी, जैसी ख़ुशी इस वक़्त हुई । उसका क्या कारण था । वही कि अल्लाह के दीन की राह में अल्लाह ने औरत और मर्द का हिस्सा बराबर रखा है, अब जो इस राह में सत्कर्म करके आगे निकल जाए । शारीरिक रूप से मर्द और औरत में क़ुदरती तौर पर असमानता है, तो इसमें औरत को अपना अपमान नहीं समझना चाहिए । बल्कि यह सोचना चाहिए कि अल्लाह की राह में दो ग्रुप हैं और दोनों अलग-अलग कामों के लिए पैदा किये गये हैं, इस तरह जैसे सूरज और चांद अल्लाह ने दुनिया और दुनिया के काम और दुनिया का काम करने वाले कुछ इस तरह बनाए हैं कि यहां काम करने वाले एक-दूसरे के मुहताज हैं । यह मुहताज़ी सबको विवश करती है कि वे एक-दूसरे की सहायता करें, एक की आवश्यकता दूसरा पूरी करे । एक के करने से जो काम अधूरा रह गया है उसको दूसरा पूरा करे ।

हमारे समाज की मज़बूती इसी में है कि हम औरतों और मर्दों दोनों की इज़्ज़त करें । अगर हमने उनमें से किसी को तुच्छ व हीन समझा और ज़रा भी किसी तरफ़ उंगुली उठायी, तो याद रहे कि हम इस निज़ाम (व्यवस्था) को तहस-नहस करने वाले होंगे जिसे क़ुदरत नहीं बल्कि क़ादिर (अल्लाह) चाहता है कि बाक़ी रहे ।

उस मुहताज औरत के बारे में क्या होना चाहिए, जिसके पति की मृत्यु हो चुकी हो और कोई उस ग़रीब औरत का संरक्षक न हो । क्या उसको घर से बाहर निकल कर अपने जीविकोपार्जन हेतु काम करना चाहिए या उसके लिए कोई दूसरी व्यवस्था होनी चाहिए । इस सिलसिले में इस्लाम की शिक्षा यह है कि इस तरह की मुहताज व अनाथ औरतों की आवश्यकताओं की पूर्ति मुसलमानों को ''बैतुल माल'' (इस्लामी धन-कोष) से करना चाहिए । इस्लाम में इस्लामी सोसायटी या क़ौम पर मुहताज औरतों की सहायता करना वाजिब है, ताकि अपनी जीविका की आवश्यकताओं से विवश होकर वह अनाथ घर से बाहर न निकलें ।

● माइल ख़ैराबादी

आप कैसी पत्रिका पढ़ना चाहते हैं ?

जी हां !
देश में कमी नहीं है
पत्रिकाओं की–
पर क्यों नहीं ?
ये आपकी प्रिय पत्रिका बन पाती हैं
और स्वस्थ चेतना जगाती हैं–
जी हां !
आ गयी है, वह पत्रिका
जो आपकी आशाओं का सुन्दर प्रतिबिंब है
जो देती है वास्तविक
जानकारी घटनाक्रमों की-
और बताती है
सांसारिक और पारलौकिक
जीवन संवारने का ।

पढ़िए और पढ़ाइए

कान्ति

स्वस्थ चेतना का वाहक हिन्दी साप्ताहिक अख़बार

मूल्य-प्रति कॉपी 10/-वार्षिक 110-

प्रधान कार्यालय
दावत नगर, अबुल फ़ज़्ल इन्कलेव,
जामिया नगर, नई दिल्ली-110025

सरदार पटेल और धर्मनिरपेक्ष भारत

■ डॉ॰ राम बहादुर वर्मा
(रायबरेली, उ॰प्र॰)

हिटलर के प्रचार मंत्री गोयबेल्स का यह कथन चर्चित रहा है कि 'एक झूठ को सौ बार दोहराओ, वह सत्य बन जाएगा ।' हिटलर व मुसोलिनी से प्रेरणा ग्रहण करने वाला आर॰एस॰एस॰ प्रारंभ से ही गोयबेल्स के बताये रास्ते पर चलता रहा है । राष्ट्रीय आंदोलन में भागीदारी के बिना ही वह अपने को सबसे बड़ा राष्ट्रवादी संगठन प्रचारित करता है । स्वाधीनता संग्राम में एक भी दिन जेल गये तथा अपने शरीर पर पुलिस की एक भी लाठी का वार झेले बिना वे अपने को सबसे बड़ा देशभक्त कहते हैं । इसी क्रम में अपने को राष्ट्रवादी, देशभक्त सिद्ध करने के लिए आर॰एस॰एस॰ राष्ट्रीय आंदोलन के नायकों को जोड़ता है तथा उनके नाम का अपने राजनीतिक उद्देश्यों के लिए इस्तेमाल करता है । इसका नवीनतम उदाहरण आर॰एस॰एस॰ व उसके राजनीतिक मुखौटे भाजपा के प्रधानमंत्री के उम्मीदवार गुजरात के मुख्यमंत्री नरेन्द्र मोदी हैं, जो 2014 के लोकसभा चुनाव में सरदार पटेल की लौहपुरुष छवि से लाभ उठाने तथा अपने को सरदार पटेल का वारिस सिद्ध करने के लिए तमाम प्रकार के हथकंडे अपना रहे हैं ।

11 जून 2013 को पशुधन तथा डेरी विकास पर गांधी नगर में सम्पन्न हुए अखिल भारतीय सम्मेलन में नरेन्द्र मोदी ने घोषणा की कि वे सरदार पटेल के जन्म दिवस 31 अक्तूबर से एक राष्ट्रव्यापी अभियान प्रारंभ करेंगे, जिसमें देश के पांच लाख गांवों के किसानों से लोहे का एक टुकड़ा, जोकि किसानों के प्रयोग किये जाने वाले औज़ार से होगा, एकत्रित करेंगे तथा इससे सरदार पटेल की विशाल मूर्ति स्थापित की जाएगी । यह 392 फीट की मूर्ति पृथ्वी पर स्थापित होने वाली सबसे ऊंची मुर्ति होगी तथा यह दक्षिणी गुजरात में नर्मदा नदी पर बने सरदार सरोवर बांध के ठीक सामने स्थापित होगी । मोदी ने भावनात्मक रूप से जनता को जोड़ने के लिए कहा कि सरदार पटेल आधुनिक भारत के निर्माता थे और उन्होंने राष्ट्रीय एकीकरण का महान कार्य किया । पर धीरे-धीरे उनकी याद लोगों के मन में धुंधली पड़ने लगी । भारत के इस लौह पुरुष की स्मृति को ज़िन्दा करने के लिए यह ऊंची मूर्ति लगायी जाएगी, जोकि न्यूयार्क तट पर बनी 'स्वतंत्रता की मूर्ति' से दो गुना ऊंची होगी । मोदी ने स्रोताओं को यह भी याद दिलाया कि सरदार पटेल एक किसान थे और उन्होंने किसानों को राष्ट्रीय आंदोलन में लाने का महत्वपूर्ण कार्य किया ।

सरदार वल्लभ भाई पटेल कांग्रेस के महत्वपूर्ण नेताओं में से थे तथा महात्मा गांधी के निकट सहयोगी थे । कांग्रेस संगठन पर पटेल की मज़बूत पकड़ थी । गांधी विचार देते थे, पर उन विचारों को कार्य रूप में परिणित करने का कार्य सरदार पटेल करते थे । गांधी जी के अहिंसा के रास्ते पर चलते हुए सरदार पटेल ने गुजरात के बारदोली तालुके में सफल सत्याग्रह चलाया था, जिसकी गूंज सारे देश में सुनायी पड़ी थी । बारदोली सत्याग्रह के सफल संचालन के लिए गांधी ने बल्लभ भाई पटेल को सरदार की पदवी देते हुए कहा था कि 'बारदोली का सरदार अब देश का सरदार है । यही बारदोली सत्याग्रह 1930-32 के राष्ट्रव्यापी सविनय अवज्ञा आंदोलन का आधार बना । बारदोली सत्याग्रह में सरदार पटेल के साथियों में हिन्दू व मुस्लिम दोनों थे । इन नेताओं में इमाम साहेब अब्दुल क़ादिर, उत्तम चन्द्र दीपचंद शाह, मोहन लाल, रामेश्वर पांडिया, दरबार गोपाल दास, उमर सोवानी, सूरज मेहता, फूलचन्द कवि आदि प्रमुख थे, जिन्होंने बारदोली सत्याग्रह को ऊंचाइयों पर पहुंचाया ।

यह महत्वपूर्ण तथ्य है कि हिन्दू महासभा तथा आर॰एस॰एस॰ दोनों ने बारदोली के ऐतिहासिक संघर्ष से अलग रहे । इसके बाद के 1930-32 के सविनय अवज्ञा आंदोलन व 1942 के भारत छोड़ो आंदोलन में आर॰एस॰एस॰ ने कोई भागेदारी नहीं की । 1940 में गुरु गोलवलकर आर॰एस॰एस॰ के सर संघ चालक बने । इसके एक-दो वर्ष पूर्व दीनदयाल उपाध्याय संघ के पूर्णकालिक स्वयंसेवक बन चुके थे, परन्तु आज़ादी के संघर्ष के अंतिम दौर में भी गुरु गोलवलकर,

दीनदयाल उपाध्याय समेत संघ का कोई बड़ा पदाधिकारी जेल नहीं गया और न ब्रिटिश साम्राज्यवाद के विरुद्ध कोई बात कही । चूंकि राष्ट्रीय आंदोलन में आर०एस०एस० की कोई भूमिका नहीं है, इसलिए राष्ट्रीय स्वाधीनता के प्रमुख नेता सरदार पटेल से अपने को जोड़कर स्वयं सेवक मुख्यमंत्री नरेन्द्र मोदी अपने व भाजपा को राष्ट्रीय आंदोलन की विरासत से जोड़ना चाहते थे ।

हक़ीक़त यह है कि राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ ने 1937 से 1947 तक हिन्दुओं को स्वाधीनता संघर्ष से अलग रखने का प्रयत्न किया, लेकिन इस काम में उसे सफलता नहीं मिली । फिर भी आर०एस०एस० को ब्रिटिश प्रशासकों की कृतज्ञता अवश्य मिली और इसके सदस्यों को नागरिक तथा प्रतिरक्षा सेवाओं में नौकरी देकर पुरस्कृत किया गया । यह एक कारण था जिसके परिणाम स्वरूप आज़ादी के .पहले दिल्ली में आर०एस०एस० के पांव मज़बूती से जम गये । जहां तक 1925 में स्थापना से लेकर 1936 तक का सवाल है, संघ ने स्वाधीनता आंदोलन को साम्प्रदायिक रंग देने की कोशिश ज़रूर की, लेकिन संगठन में इतनी शक्ति नहीं थी कि उसका कोई महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता ।

देश के विभाजन से पैदा हुए कष्टों और असंतोष का आर०एस०एस० ने अपने सदस्यों की संख्या बढ़ाने के लिए पूरा-पूरा लाभ उठाया और साम्प्रदायिक घृणा के बीज बोए । अगस्त 1947 के बाद गांजी जी के विरुद्ध एक विषैला आंदोलन चलाया, जिसमें उन्हें ही मुख्य रूप से भारत के विभाजन के लिए ज़िम्मेदार ठहराया । साम्प्रदायिक धर्मांधों द्वारा 30 जनवरी 1948 को गांधी जी की हत्या से आर०एस०एस० के विरुद्ध सारे देश में आंधी चल पड़ी । कई सूत्रों से प्राप्त जानकारी के आधार पर सरकार ने निष्कर्ष निकाला कि (1) राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ एक साम्प्रदायिक संस्था है । (2) इसकी कार्रवाई और प्रचार प्रस्तावित भारतीय संविधान और राष्ट्र के विरुद्ध है । (3) यह हिंसात्मक कार्रवाइयों को प्रोत्साहन देता है तथा राष्ट्रीय नेताओं और सरकारी नीतियों के विरुद्ध घृणित प्रचार करता है ।

सरकार ने निश्चय किया कि आर०एस०एस० की विध्वंसक कार्रवाइयों के कारण गांधी जी की हत्या हुई है, इसलिए इस संगठन पर प्रतिबंध लगाना उचित है । 4 फ़रवरी 1948 को गृह मंत्रालय जो कि सरदार पटेल के पास था, द्वारा जारी की गयी विज्ञप्ति में कहा गया–'भारत सरकार ने 2 फ़रवरी 1948 को अपने प्रस्ताव में घोषित किया कि घृणा एवं हिंसा की शक्तियों को, जो कि हमारे देश में कार्यरत है तथा देश की स्वतंत्रता को ख़तरे में डालती है तथा उसके नाम पर काला धब्बा लगाती है को जड़ से समाप्त किया जाए । इस नीति के क्रियान्वयन में भारत सरकार ने आर०एस०एस० को ग़ैर-क़ानूनी घोषित करने का निर्णय किया है ।'

विज्ञप्ति में उन कारणों को बताया गया जिससे कि आर०एस०एस० पर प्रतिबंध लगाना पड़ा । विज्ञप्ति में कहा गया– 'संघ के सदस्यों ने अवांछनीय यहां तक कि ख़तरनाक कार्रवाइयां की है । यह पाया गया कि देश के अनेक भागों में आर०एस०एस० के सदस्य व्यक्तिगत हैसियत से हिंसा, लूटपाट, चोरी, डकैती और हत्याओं में शामिल रहे और अवैध रूप से अस्त्र-शस्त्र एकत्रित किये हैं' । गृह मंत्री की हैसियत से सरदार पटेल आर०एस०एस० प्रमुख गुरु गोलवलकर को यह बताने से नहीं हिचके कि उनका संगठन ही हिंसा फैलाने व गांधी जी की हत्या के लिए ज़िम्मेदार है । 11 सितम्बर 1948 को

सरदार वल्लभ भाई पटेल कांग्रेस के महत्वपूर्ण नेताओं में से थे तथा महात्मा गांधी के निकट सहयोगी थे । कांग्रेस संगठन पर पटेल की मज़बूत पकड़ थी । गांधी विचार देते थे, पर उन विचारों को कार्य रूप में परिणित करने का कार्य सरदार पटेल करते थे । गांधी जी के अहिंसा के रास्ते पर चलते हुए सरदार पटेल ने गुजरात के बारदोली तालुके में सफल सत्याग्रह चलाया था, जिसकी गूंज सारे देश में सुनायी पड़ी थी । बारदोली सत्याग्रह के सफल संचालन के लिए गांधी ने बल्लभ भाई पटेल को सरदार की पदवी देते हुए कहा था कि 'बारदोली का सरदार अब देश का सरदार है ।

गोलवलकर को लिखे पत्र में सरदार पटेल ने कहा–

'हिन्दुओं को संगठित करना और उनकी मदद करना एक बात है, किन्तु उनके कष्टों का मासूम और असहाय पुरुषों, स्त्रियों और बच्चों से बदला लेना एक दूसरी बात है। इसके अलावा राष्ट्रीय सेवक संघ कांग्रेस का जो विरोध करता है और जितनी भयंकरता से जो विरोध करता है उसमें न तो किसी व्यक्ति का, न भलमनसाहत का और न औचित्य का कोई ध्यान रखा जाता है। इससे लोगों में एक प्रकार की अशांति पैदा होती है। उनके सारे भाषण साम्प्रदायिक विष से भरे होते हैं। हिन्दुओं की रक्षा के लिए यदि उन्हें उत्साहित व संगठित करना है तो उसके लिए उनमें ज़हर फैलाना ज़रूरी नहीं था। इस विष के अंतिम परिणाम के रूप में देश को गांधी जी के बहुमूल्य जीवन से हाथ धोने का दुख उठाना पड़ा। राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के लिए न तो सरकार और न लोगों को ज़रा सी भी सहानुभूति रही। वास्तव में विरोध उपजता है। विरोध और तीव्र हो जाता है, जबकि आर०एस०एस० के लोग गांधी जी की मृत्यु के बाद खुशियां प्रकट करते हैं व मिठाइयां बांटते हैं। इन परिस्थितियों में सरकार के लिए आर०एस०एस० के विरुद्ध कार्रवाई करना अपरिहार्य हो गया। तब से अब तक छह माह बीत चुके हैं। हमें आशा थी कि समय बीतने के साथ और पूर्ण विचार के बाद आर०एस०एस० सही रास्ते पर आ जाएगा, परन्तु मुझे जो रिपोर्ट मिली है कि उससे स्पष्ट है कि अपने पुराने क्रियाकलापों में वे नया जीवन डालने का प्रयास चालू किये हैं।'

सरदार पटेल ने बार-बार इस तथ्य को दुहराया कि गांधी जी की हत्या के लिए हिन्दुत्व ब्रिगेड सामूहिक रूप से ज़िम्मेदार है। 27 फ़रवरी 1948 को जवाहर लाल नेहरू को एक पत्र में उन्होंने लिखा–'यह सावरकर के सीधे हिन्दू महासभा का कट्टर पक्ष था, जिसने गांधी जी की हत्या की योजना बनायी और इसे पूरा किया। यह भी दिखायी पड़ता है कि यह षड्यंत्र दस लोगों तक ही सीमित थी। निस्संदेह उनकी (गांधी जी की) हत्या का स्वागत हिन्दू महासभा व आर०एस०एस० के लोगों द्वारा किया गया, क्योंकि वे उनके सोचने के तरीक़े व नीतियों का मज़बूती से विरोध करते थे।'

हिन्दू महासभा के प्रमुख नेता श्यामा प्रसाद मुखर्जी को 18 जुलाई 1948 को लिखे पत्र में सरदार पटेल ने पुनः उक्त तथ्यों पर बल दिया। पत्र में उन्होंने लिखा–'जहां तक आर०एस०एस० व हिन्दू महासभा का संबंध है गांधी जी की हत्या से संबंधित मामला न्यायालय के विचाराधीन है इसलिए मैं इन दोनों संगठनों की हिस्सेदारी के बारे में कुछ नहीं कहना चाहता। परन्तु हमारी रिपोर्ट यह सुनिश्चित करती है कि इन दोनों संगठनों, विशेषकर पहले के क्रियाकलापों ने देश में ऐसे वातावरण का सृजन किया कि यह भीषण दुखद घटना संभव हो सकी। मेरे मस्तिष्क में इस बात को लेकर संदेह नहीं है कि हिन्दू महासभा का पक्ष इस षड्यंत्र में शामिल था। आर०एस०एस० के क्रियाकलाप सरकार के अस्तित्व तथा राज्य के लिए स्पष्ट रूप से ख़तरा थे। हमारी रिपोर्ट दर्शाती हैं कि प्रतिबंध के बावजूद उनके क्रियाकलापों में कोई कमी नहीं आयी है। वास्तव में जैसे समय बीत रहा है आर०एस०एस० समाज अधिक निडर हो गया है और अपनी विघटनकारी क्रियाकलापों में बढ़ी हुई मात्रा में लिप्त है।'

सरदार पटेल ने आर०एस०एस० व हिन्दू महासभा को स्पष्ट कर दिया था कि भारत एक धर्मनिरपेक्ष राष्ट्र होगा, हिन्दू राष्ट्र नहीं। उन्होंने साफ़ कहा था कि सरकार धर्मनिरपेक्ष होगी। यदि सरकार धर्मनिरपेक्ष नहीं है तो एक दिन भी रहने योग्य नहीं है, पर मुसलमानों को भी विश्वास पात्र बनना पड़ेगा। वे मुसलमानों को उचित हक़ देने के पक्षधर थे, पर यह चाहते थे कि भारत में रहने वाले अल्पसंख्यक भारत में घुल-मिल जाएं। 1931 में कांग्रेस के अध्यक्ष पद से भाषण देते हुए उन्होंने कहा था–'कांग्रेस किसी ऐसे संविधान को स्वीकार नहीं करेगी, जिसमें साम्प्रदायिक समस्या का संतोषजनक समाधान न किया गया हो। मैं तो एक हिन्दू होने के नाते अल्पसंख्यकों का एक स्वदेशी लेखनी व काग़ज़ दूंगा कि वे अपनी मांगे लिख दें और मैं हस्ताक्षर कर दूंगा।'

सरदार पटेल हिन्दू तथा मुस्लिम दोनों की अतिवादिता व कट्टरता से हटकर एक शक्तिशाली धर्मनिरपेक्ष भारत का निर्माण करना चाहते थे, जहां रहने वाला प्रत्येक व्यक्ति अपने को भारतीय समझे तथा उसकी एकमेव आस्था भारत में हो। इसलिए भारत को हिन्दू राष्ट्र बनाने का सपना देखने वाले यदि सरदार पटेल के नाम का अपने संकीर्ण राजनीतिक स्वार्थों के लिए इस्तेमाल करना चाहते हैं, तो उससे जनता को सावधान करना ही पटेल के प्रति सच्ची श्रद्धांजलि है।

मुनअम पब्लिक स्कूल

(सी०बी०एस०ई०, दिल्ली से सम्बद्धता प्राप्त, 10+2, ईंग्लिश मिडियम विद्यालय)

महाराजगंज, पो० दादपुर, जिला हजारीबाग, झारखण्ड।

नामांकण सुचना

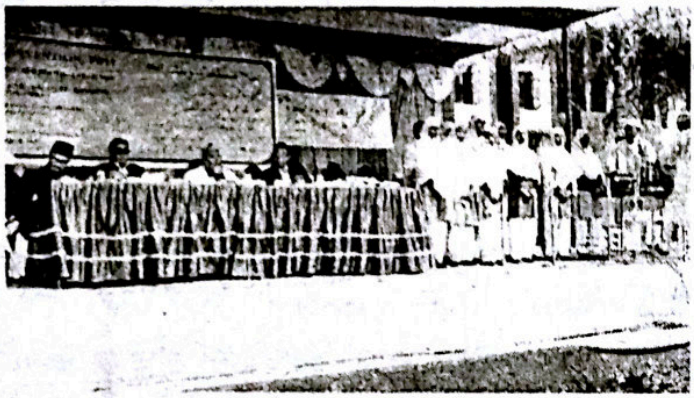

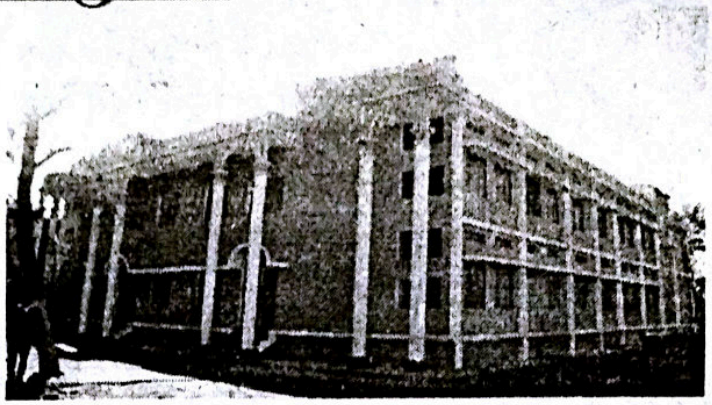

हजारीबाग के प्राकृतिक सौन्दर्य से भरपुर पहाडी क्षेत्र में स्थापित, विशाल कैम्पस में फैला एक अति-आधूनिक शैक्षणिक संस्था जहां छात्र-छात्राओं के लिए माडर्न स्कूल की तमाम सुविधाएं उपलब्ध हैं। .

सफलता का सत्रहवां साल - मुस्लिम लडकीयों के लिए नायाब तोहफा

लडकीयों के लिए 100 बेड का शानदार हॉस्टल

सत्र 2013-2014 के लिए छात्रावास में रह कर शिक्षा प्राप्त करने के इच्छुक छात्र-छात्राएं 150/- रू० अदा कर के फार्म एंव प्रास्पेक्टस स्कूल काउंटर से प्राप्त करें या 175/- रू० का ड्राफ्ट भेज कर डाक से भी प्राप्त किया जा सकता हैं। विशेष जानकारी हेतु सम्पर्क करें -

मो० 09431530878, Website : munammission.org

E-mail-munam_school2000edu@yahoo.com

एस०एम० नईम
डायरेक्टर
एम०ए०, बी०एड

वकील अहमद
प्रिन्सिपल
बी०एस०सी०, बी०एड

जीवन में नफ़रत की कोई जगह नहीं

■ डॉ॰ मुहम्मद अहमद

वरिष्ठ साहित्यकार श्री ओमप्रकाश वाल्मीकि जी अब हमारे बीच नहीं रहे । 18 नवम्बर 2013 को उनका देहरादून (उत्तराखंड) में देहावसान हो गया । इस महान रचनाधर्मी को दलित साहित्य सृजक कहना अनुचित है । वे सही अर्थों में मानवीय संवेदना के मार्मिक आयामों के चितेरे थे । उनकी रचनाएं मानवीय पीड़ा, शोषण, अन्याय, संघर्ष, अपमान और व्यथा की सच्ची अनुभूतियों की अभिव्यक्ति हैं. उन्होंने साहित्य में इन्हें उतारने का अभिनव प्रयोग किया ।

वाल्मीकि जी अपने व्यक्तिगत जीवन में अत्यंत जीवट और जुझारू थे । वास्तव में परिस्थितियों ने उन्हें प्रतिकूल परिस्थितियों में सार्थक जीवन जीने का आदी बना दिया था ।

14 अक्तूबर 2012 को जब मैं उनकी बीमारपुर्सी के निमित्त नोएडा (उ॰प्र॰) स्थित सामयिक निवास पर पहुंचा, तो उनके हावभाव से साफ़ पता चल रहा था कि उनके दृढ़संकल्प ने असाध्य रोग को मात दे दिया है । मेरे साथ थे उर्दू मासिक 'पेशेरफ़्त' के तत्कालीन प्रबंध सम्पादक इन्तिज़ार नईम साहब । वाल्मीकि जी पिछले कुछ वर्षों से बीमार चल रहे थे । उन्हें कर्कट रोग था । उस समय वे नोएडा के केन्द्रीय विहार, पार्ट 2 में अपनी बेटी के घर इसलिए ठहरे हुए थे, क्योंकि उन्हें कीमोथैरेपी करानी थी, लेकिन यह भी बता रहे थे कि शीघ्र ही देहरादून चले जाएंगे । यह परमात्मा की असीम कृपा हुई कि उनके स्वास्थ्य में काफ़ी सुधार आ गया था, लेकिन यह एक मारक रोग, जिस पर कुछ क़ाबू पाकर अल्प जीवन-विस्तार तो कर सकता है, आरोग्यता नहीं आ सकती ।

वाल्मीकि जी के जीवन में व्यावहारिक दृष्टि से रोटी का सवाल एक बड़ा और अहम सवाल था । वे इसके लिए बराबर लड़ते रहे । इसी सवाल ने उन्हें पढ़ाई छोड़ने के लिए विवश किया । जबलपुर आयुध कारखाने में काम पा गये । तदनतर अंबरनाथ (मुम्बई) से तकनीकी शिक्षा प्राप्त की, जो आपकी आजीविका का साधन बनी । वे अपनी आत्मकथा 'जूठन' (प्रकाशित 1977) में जीवन की पीड़ाओं पर सविस्तार प्रकाश डाला है ख़तरों को मोल लेकर ! लिखते हैं–

''इन अनुभवों को लिखने में कई प्रकार के ख़तरे थे । एक लम्बी जद्दोजहद के बाद मैंने सिलसिलेवार लिखना शुरू किया । तमाम कष्टों, यातनाओं, उपेक्षाओं, प्रताड़नाओं को एक बार फिर जीना पड़ा, उस दौरान गहरी मानसिक यंत्रणाएं मैंने भोगी । स्वयं को परत-दर-परत उधेड़ते हुए कई बार लगा कितना दुखदायी है यह सब ! कुछ लोगों को यह अविश्वसनीय और अतिरंजनापूर्ण लगता है ।''

इस पुस्तक में उन सभी सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक पहलुओं को गंभीरतापूर्वक परखा गया है, जिसके कारण दलित उत्पीड़न का प्रश्न एक गहन समस्या बनी हुई है । वाल्मीकि जी लिखते हैं, ''दलित जीवन की पीड़ाएं असहनीय और अनुभवदग्ध हैं । ऐसे अनुभव जो साहित्यिक अभिव्यक्तियों में स्थान नहीं पा सके । एक ऐसी समाज-व्यवस्था में हमने सांसें ली हैं, जो बेहद क्रूर और अमानवीय है । दलितों के प्रति असंवेदनशील भी...''

वाल्मीकि जी से हमारी कई विषयों पर बातें हुईं । वे

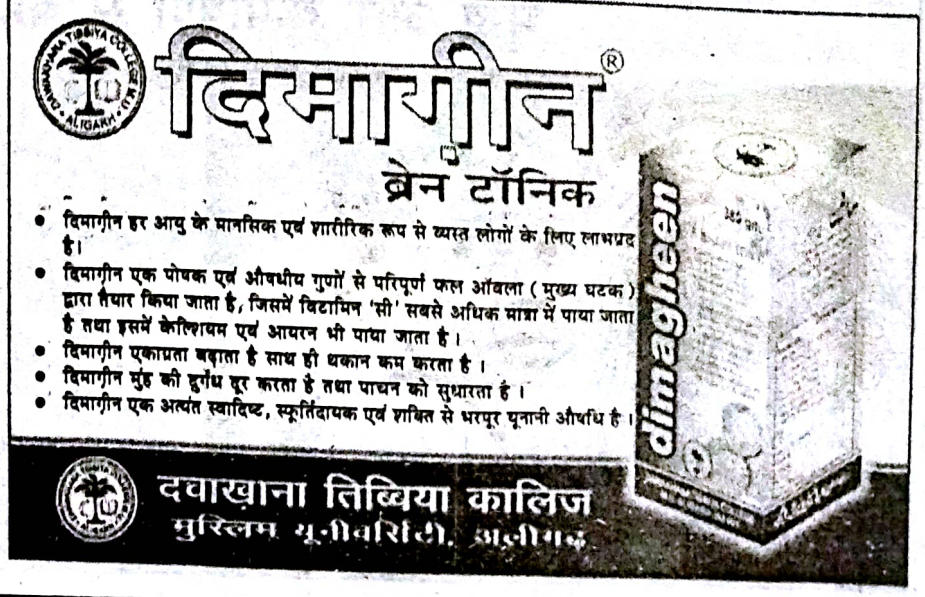

हमसे बहुत प्रसन्न हुए । कहने लगे, 'सोचा भी नहीं था कि कठिन समय में मेरी साहित्यिक बिरादरी इस क़दर मेरे साथ खड़ी होगी...मैं पूरे यक़ीन के साथ कह सकता हूं कि यह बिरादरी निकट संबंधों से बढ़कर साबित हुई ।' वाल्मीकि जी ने कहा, 'मेरे जीवन में नफ़रत को कभी भी कोई जगह नहीं मिल सकी है, और न ही आगे के जीवन में मिलेगी...इसी प्रकार मैं संकीर्णता एवं पक्षपात को बड़ी बीमारियों में शामिल करता हूं...इन बीमारियों से मैं सदैव अलग रहा...इन्हें पास नहीं फटकने दिया ।' वाल्मीकि जी ने कहा कि लोग भाषा को लेकर भी पक्षपातपूर्ण रवैया अपनाते हैं, जो किसी भी दृष्टि से उचित नहीं है । उनकी बातों में बड़ा दर्द था । उनकी कविता 'जूता' की तरह का दर्द...नरक में जीता हूं / पल-पल मरता हू। / जूता मुझे काटता है / उसका दर्द भी मैं ही जानता / तुम्हारी महानता मेरे लिए स्याह है...

अपने मुहल्ले का ज़िक्र करते हुए 'जूठन' में वाल्मीकि जी लिखते हैं, ''अस्पृश्यता का ऐसा माहौल कि कुत्ते-बिल्ली, गाय-भैंस को छूना बुरा नहीं था लेकिन यदि चूहड़े का स्पर्श हो जाए तो पाप लग जाता था । सामाजिक स्तर पर इन्सानी दर्ज़ा नहीं था । वे सिर्फ़ ज़रूरत की वस्तु थे । काम पूरा होते ही उपयोग ख़त्म । इस्तेमाल करो, दूर फेंको ।'' मेहनत मज़दूरी में किसी से पीछे न हटने वाले इस समाज के लोगों को खाना खा चुके बारातियों के जूठन मिलते थे । आप लिखते हैं कि ''जब मैं इन सब बातों के बारे में सोचता हूं तो मन के भीतर कांटे उगने लगते हैं, कैसा जीवन था ? दिन-रात मर-खपकर भी हमारे पसीने की क़ीमत मात्र जूठन, फिर भी किसी को कोई शिकायत नहीं । कोई शर्मिंदगी नहीं, कोई पश्चात्ताप नहीं ।''

वाल्मीकि जी ने मुझे अपनी नव-प्रकाशित पुस्तक 'प्रतिनिधि कविताएं' मेरा नाम लिखकर अपने हस्ताक्षर के साथ उपहारस्वरूप दी, जिसके लिए मैं उनका आभारी हूं । उन्हें हार्दिक श्रद्धांजलि ।



लोकतंत्र कम, अभिनय और प्रदर्शन ज़्यादा

■ विद्या प्रकाश

निष्ठा, समर्पण, नैतिक ईमानदारी और सच्चाई के अभाव में जब लोकतंत्र का अभिनय किया जाने लगता है तो इस प्रकार की व्यवस्था की अवस्था उस बेजान कठपुतली की भांति हो जाती है जिसकी डोर स्वार्थी सत्ताधीशों तथा भ्रष्ट पदलोलुप राजनेताओं के हाथों में होती है। लोकसेवा, चारित्रिक शुचिता, नीतिगत पारदर्शिता तथा सैद्धांतिक निष्ठा के अभाव में आज हमारी लोकतांत्रिक व्यवस्था खोखली और अशक्त हो गयी है। लोकतंत्र है नहीं, मगर लोकतंत्र का अभिनय किया जा रहा है। पक्ष-विपक्ष के सब नेता एक थैली के चट्टे बट्टे तथा रंगे सियार हैं। गली से लेकर ज़िला स्तर तक के नेताओं में जनसेवा तथा कर्मशीलता के स्थान पर आत्म प्रदर्शन-शीलता, स्वप्रशस्तिगान तथा स्वमहिमामंडन की प्रवृत्ति कूटकूट कर भरी है और वे अपने मुंह मियां मिट्ठू बनने से बाज नहीं आते। जनता तथा हक़ीक़त की ज़मीन से कटे ये वे अधजल गगरियां हैं जो अलग-अलग तरीक़े से जब-तब छलकती रहती हैं। हम शहरों में उनकी यह छलकन आये दिन महसूस करते और सुनते रहते हैं।

सांसद या विधायक का प्रतिनिधि जैसा कोई पद नहीं होता मगर प्रतिनिधि पद से हटा दिये जाने के बावजूद वे पूर्व प्रतिनिधि का लटकन तथा टंगना ताउम्र ढोते रहते हैं। ज़िलों में ऐसे नेताओं की कमी नहीं जो देश के किसी भाग में कोई कांड होने पर उसके समर्थन या विरोध में एक तरफ़ से सियार की तरह हुआं-हुआं करने लगते हैं।

अपने शहर के बाज़ारों में विशेष रूप से हमें छोटी-बड़ी पार्टियों के पदाधिकारियों और तथाकथित झोलाछाप नेताओं के पृथक-पृथक आकार प्रकार के बैनर, फ़ोटोयुक्त होर्डिंग, फ्लैक्स तथा पोस्टर लगे दिखते हैं। शहरों में ऐसे नेताओं की तादाद कम नहीं है जो त्योहाराना मुबारकबाद के आदी और लती हैं। जिनसे हिन्दुओं-मुसलमानों का शायद ही कोई तीज-पर्व छूटता हो। स्वाधीनता दिवस, गणतंत्र दिवस, मकर संक्रांति, होलीकोत्सव, दीपोत्सव, विजया दशमी, शारदीय तथा वासंती नवरात्र, रामनवमी, श्री कृष्ण जन्माष्टमी, ईदुल-फ़ित्र, ईदुज़्ज़ुहा, नववर्ष, करवा चौथ तथा डाला छठ जैसे हर छोटे-बड़े त्योहारों पर वे थोक भाव से जनवासियों तथा नगरवासियों के नाम मुबारक बादियाना पोस्टर शहरी दीवारों पर चस्पा कर डालते हैं। अनेक स्थानों पर एक साथ आठ-आठ, दस-दस पोस्टर इस प्रकार चस्पा किये जाते हैं जैसे दीवार नहीं, पोस्टरों की नुमाइशगाह और जलसागाह हो। कोई भी त्योहार बाक़ी नहीं छूटता और त्योहाराना बधाई पोस्टर के ज़रिये थोक भाव से कुंटलों में परोस दी जाती है भले नगरवासी हजम कर पाएं तथा उन्हें अपच हो जाए। मुबारकबाद परोसने-थोपने की पता नहीं कितनी हवश है तथा इसके ज़रिये वे पता नहीं किस मक़सद को हासिल करने के फ़िराक में बेताब हैं।

ऐसे लोगों का एक और चस्का अख़बारी है। सब्ज़ीमंडी अथवा गली का घिसियावन नेता अपनी पार्टी से इस्तीफ़ा देकर अकेले या अपने दो लंगोटिये यार के साथ दूसरी पार्टी की सदस्यता ग्रहण करता है। मुहल्ले की बात दरकिनार, अपने घर-परिवार में उसकी ज़रा भी वक़्त, पूछ और क़दर न हो, मगर वह समाचार पत्र कार्यालयों में प्रकाशनार्थ प्रेषित प्रेस विज्ञप्तियों में यह नत्थी करने व टांकने से नहीं चूकता, 'महान क्रांतिकारी ग़रीबों के मसीहा, जनसेवी और इन्क़िलाबी समाज सुधारक घिसियावन हज़ारों समर्थक साथियों के साथ फ़लां पार्टी में शामिल हो गये।' कुछ सड़क छाप नेताओं की इससे अलग कटेगरी है। नगरपालिका परिषद या टाउन एरिया के सभासद चुनाव में वे भले मुंह के बल धड़ाम से लुढ़क गये हों मगर वे सभासद पद के पूर्व प्रत्याशी का टंगना व पुछल्ला जीवन पर्यन्त अपने नाम के पहले टांगने से नहीं चूकते।

सांसद या विधायक का प्रतिनिधि जैसा कोई पद नहीं

होता मगर प्रतिनिधि पद से हटा दिये जाने के बावजूद वे पूर्व प्रतिनिधि का लटकन तथा टंगना ताउम्र ढोते रहते हैं । ज़िलों में ऐसे नेताओं की कमी नहीं जो देश के किसी भाग में कोई कांड होने पर उसके समर्थन या विरोध में एक तरफ़ से सियार की तरह हुआं-हुआं करने लगते हैं । वाराणसी और फ़ैज़ाबाद में आतंकवादियों के बम विस्फोट पर वे एक तरफ़ से गुस्सैल आंख तरेर कर ललकारने लगते हैं । यह बात अलग है कि असलहाधारी उग्रवादियों का सामना होने पर वे भीगी बिल्ली की तरह दुम दबाकर पतली गली में सिर पर पैर रखकर सरपट भाग जाएं । अन्ना हज़ारे और बाबा रामदेव के भ्रष्टाचार विरोधी आन्दोलन के समर्थन में वे कैंडल मार्च करने लगते हैं और मौक़ा हाथ लगने पर वे चौराहा तक पहुंचते-पहुंचते जेबकटी तथा गिरहकटी करने से बाज़ नहीं आते ? देश की राजधानी दिल्ली में दामिनी रेप काण्ड होने पर वे एक तरफ़ से ज़ोर-शोर से हुआं हुआं कर घटना की निन्दा और अख़बारी बयानबाज़ी करने लगते हैं । इनमें से अनेक ऐसे भी हैं जो मौक़ा हाथ लग जाए तो दूसरों की बहू-बेटियों को न छोड़े तथा कुकर्म कर डालें ।

जनपदों में ऐसे दलगत नेताओं की तादाद कम नहीं जो देश में महंगाई और भ्रष्टाचार का ख़ूब अरण्यरोदन करते हैं, दस किलोग्राम का पुतला दहन करते हैं, पानी पी-पीकर सरकार को कोसते, छाती पीटते हैं, कलेक्ट्रेट परिसर में भीषण भाषण भूंकते हैं, राष्ट्रपति तथा राज्यपाल को बज़रिये ज़िला प्रशासन 10 सूत्री ज्ञापन भेजते हैं, धरना प्रदर्शन करते हैं, बन्द का आह्वान करते हैं तथा सरकारी नीतियों के ख़िलाफ़ स्टेशन पर देहरादून एक्सप्रेस रोकते हैं । गुस्से में वे पथराव कर रोडवेज बस और सरकारी जीप के विंड स्क्रीन, बोनस और चेसिस क्षतिग्रस्त कर डालते हैं । क्यों नहीं वे गुस्से में अपनी मोटर साइकिल, स्कूटर अथवा मारूती कार क्षतिग्रस्त कर डालते ? क्यों नहीं वे मिलावटख़ोरी, मुनाफ़ाख़ोरी, कालाबाज़ारी तथा घटतौली करने वाले शहर के बड़े व्यापारियों को रंगे हाथ पकड़ने को हिम्मत करते ? दीवानी न्यायालय जनपद न्यायाधीश, सिविल जज तथा मुंसिफ़ की अदालत में उन्हीं की आंख के सामने सरीहन उनका पेशकारवाद प्रतिवादकारियों से तारीख़ पेशी पर दस-दस पांच-पांच रुपये पेशी खुल्लमखुल्ला लेता है । आर०टी०ओ० दफ़्तर, सप्लाई आफ़िस, रजिस्ट्री आफ़िस, चकबन्दी कार्यालय, तहसील कार्यालय तथा ज़िला विद्यालय निरीक्षक और ज़िला बेसिक शिक्षा कार्यालय जैसे भ्रष्टाचार के गढ़ समझे जाने वाले कार्यालयों में जाकर ऐसे नेता क्यों नहीं अपना सारा जिस्मानी जोर दिली जोश दिखाते ?

क्या चौराहे के बीचोबीच खड़े होकर ट्रक चालकों से खुल्लमखुल्ला दो चार सौ वसूली करने वाले खाकी वर्दीधारी कांस्टेबल का कालर पकड़ने की उनकी औकात है ? क्या इजलास में सरेआम मुवक्किलों सें दस-पांच रुपये बतौर पेशी वसूली करने वाले पेशकार को रंगे हाथ पकड़ने की इनकी हिम्मत है ? जो दफ़्तर भ्रष्टाचार, कमीशनख़ोरी व रिश्वतख़ोरी के अड्डे हैं, वहां धावा न कर खाली सड़क पर पी०एम, सी०एम० व डी०एम के पुतला दहन से भ्रष्टाचार दूर हो जाएगा ? क्या सारी ज़ोर-आज़माइश ख़ाली कैंडल मार्च करने, सरकारी बसों का शीशा तोड़ने तथा भाषणबाज़ी तक ही महदूद है ? क्या यही सच्चा भारतीय लोकतंत्र है ? क्या वाकछलना, ग्लैमर, जालफ़रेब और धन-बल की हक़ीक़त और आम ज़िन्दगी से कटी सियासत से समाजोत्थान, देशोन्नति और लोकतंत्र का सशक्तिकरण संभव है ?

लघुकथा

अपहरण

विचित्र घटनाक्रम हुआ । पोते को स्कूल बस तक छोड़ने गये दादाजी ने जैसे-तैसे पोते को तो बचा लिया, किन्तु भागते चोर की लंगोटी ही सही के अनुरूप अपहरणकर्ताओं ने स्वयं दादाजी को दबोच लिया ।

बदहवास पोते ने घटना की ख़बर घर आकर सुनायी । इस बीच एक करोड़ रुपये की फ़िरौती की मांग भी फ़ोन पर आ गयी । दादाजी के जमाये करोड़ों के कारोबार के कर्ताधर्ता तीनों बेटों में विचार-विमर्श हुआ ।

अपहरणकर्ताओं से फिरौती की राशि पर मोलभाव शुरू हुआ । मांग एक करोड़ से पांच लाख तक आते-आते पांच दिन निकल गये । इस बीच उच्च रक्तचाप तथा तीव्र मधुमेह के पुराने रोगी 85 वर्षीय दादाजी की हालत नियमित दवाई के अभाव में निरंतर बिगड़ती चली गयी ।

बेटे पांच लाख भी देने को राज़ी नहीं हुए । दादाजी की चिंताजनक हालत से घबराकर या (संभव है !) द्रवित होकर अपहरणकर्ता बिना कोई फिरौती लिए रात को किसी समय उन्हें बंगले के बाहर डाल गये ।

ओमप्रकाश बजाज
बी-2, गगन विहार, गुप्तेश्वर,
जबलपुर-482001 (म०प्र०)

पवित्र क़ुरआन की विशेषताएं

■ मौलाना मुहम्मद सुलैमान क़ासिमी

क़ुरआन लाने वाले नबी हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) की जो विषेशताएं हैं, वही क़ुरआन की भी विशेषताएं हैं ।

1. क़ुरआन का संदेश और शिक्षा सारी दुनिया के लिए है । वह किसी क़ौम, क़बीला, नस्ल, ज़बान, वतन, रंग और पेशा या वर्ग आदि के साथ मख़सूस नहीं है । इसका ख़िताब पूरी इन्सानियत से है, जबकि पिछली आसमानी किताबों का संदेश विशेष क़ौमों तक सीमित था ।

2. क़ुरआन की दावत, शिक्षा और संदेश किसी ख़ास ज़माने और अवधि के लिए नहीं है, बल्कि रहती दुनिया तक के लिए है । क़ुरआन से पहले की आसमानी किताबें अपने-अपने ज़माने के लिए थीं, परन्तु क़ुरआन दुनिया के अन्तिम पल तक के लिए है ।

3. क़ुरआन की शिक्षा और उसके शब्द ज्यों के त्यों सुरक्षित हैं, जबकि दूसरी किताबों की शिक्षा और शब्द दोनों में फेर-बदल हो गया है । क़ुरआन अपने शब्द, अर्थ, मतलब, शिक्षा और पैग़ाम हर पहलू से सुरक्षित और भरोसे व एतिबार के योग्य है । इतिहास और दूसरी आसमानी किताबें गवाह हैं कि क़ुरआन सुरक्षित है ।

4. क़ुरआन की शिक्षा रहती दुनिया तक के इन्सानों के लिए अनुकरणीय है, क्योंकि वह इन्सानी फ़िक्र की कमज़ोरियों से पाक है, जबकि दूसरी आसमानी किताबें इन्सानी फ़िक्र की दख़लअंदाज़ी से सुरक्षित नहीं रहीं ।

5. क़ुरआन की शिक्षा व्यापक है, अर्थात सारे इन्सान और वर्ग अपनी-अपनी ज़रूरत और हैसियत के मुताबिक़ क़ुरआन से हिदायत और मार्गदर्शन प्राप्त कर सकते हैं । शासक और प्रजा, सरमायादार और मज़दूर, ज़मींदार और किसान, लीडर और अवाम, विजेता और पराजित, शहरी और देहाती, सभ्य व असभ्य, राजनीतिज्ञ और कलाकार सभी वर्गों के लोग अपनी व्यक्तिगत एवं सामूहिक ज़िन्दगी के लिए क़ुरआन से रहनुमाई पा सकते हैं ।

6. क़ुरआन की एक विशेषता यह है कि इसकी शिक्षा ज़माने का साथ देने की लचक और दुनिया की तहज़ीबी तरक़्क़ी का मुक़ाबला करने की ताक़त है । इससे भी ज़्यादा क़ुरआन दुनिया को उन्नति के राज़ और परिपूर्णता के गुर सिखाने की योग्यता रखता है । क़ुरआन ज़माने और तहज़ीबी तरक़्क़ी का मातहत (अधीन) नहीं है, बल्कि मार्गदर्शक और रास्ता बताने वाला है ।

7. क़ुरआन की एक विशेषता यह है कि हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) ने क़ुरआन की शिक्षा के मुताबिक़ एक सोसाइटी और एक स्टेट क़ायम करके निजी और सामूहिक ज़िन्दगी के तमाम पहलुओं के लिए अमली नमूना पेश कर दिया है जो आज तक सुरक्षित है । यह अमली नमूना क़ुरआन की सही व्याख्या है ।

8. दूसरी आसमानी किताबों के बरख़िलाफ़ क़ुरआन सिर्फ़ कुछ मज़हबी अक़ीदे, इबादत के कुछ तरीक़े, व्यक्तिगत और सामाजिक जीवन के लिए कुछ हिदायतें और अख़्लाक़ के कुछ उसूल ही पेश नहीं करता, बल्कि उसने कायनात और इन्सान के बारे में एक ठोस और सच्चा नज़रिया पेश करने के साथ-साथ इन्सानी ज़िन्दगी के लिए पेश की है ।

9. क़ुरआन की एक विशेषता यह है कि उसकी शिक्षा आज शान्ति की प्यासी दुनिया की प्यास बुझा सकती है । आज के घातक विचारों और दृष्टिकोणों से इन्सान को छुटकारा दिला सकती है और कठिन समस्याओं को हल कर सकती है । शर्त यह है कि इसकी शिक्षाओं को जीवन में उतारा जाए ।

कायनात में जो कुछ अच्छा या बुरा होता है वह अल्लाह के ज्ञान और योजना के अनुसार होता है । अल्लाह की योजना और ज्ञान सच्चा है, अतः उसके ख़िलाफ़ नहीं हो सकता । जिस तरह इम्तिहान हॉल में सही और ग़लत दोनों तरह के जवाब लिखने वालों को सब तरह की सुविधाएं उपलब्ध करायी जाती हैं उसी तरह दुनिया में सही और ग़लत दोनों तरह के विचार और कर्म अपनाने वालों को आज़ादी दी गयी है और यह भी बता दिया गया है कि अल्लाह की वफ़ादारी और उसकी फ़रमांबरदारी में उसके आख़िरी नबी की शिक्षा और आख़िरी किताब के अनुसार ज़िन्दगी गुज़ारोगे तो सफल होंगे अन्यथा विफल ।

अनाथ लड़कों की पुकार

VOICE OF ORPHAN BOYS

यतीमख़ाना इस्लामिया (गया)



एक परिचय

● दीनी और असरी शिक्षा की अपनी तरह की जानी-मानी रिहाइशी पाठशाला ● 96 वर्षों की सेवाएं ● बहुत से विभाग ● शिक्षा के पड़ाव : प्राथमिक से मैट्रिक तक ● हिफ़्ज़ का विभाग : हिफ़्ज़ के साथ-साथ मैट्रिक ● हर वर्ष बिहार स्कूल बोर्ड परीक्षा का 100 प्रतिशत रिज़ल्ट ● पत्राचार शिक्षा 2013-2014 के सत्र के लिए 11वीं, 12वीं और बी०ए० और लाइब्रेरी साइंस (BLIS) में प्रवेश जारी ● कंप्यूटर की भी शिक्षा ● किफ़ाला स्कीम के तहत एक अनाथ छात्र पर वार्षिक ख़र्च 12000/- रुपये प्रति वर्ष ● कुल वार्षिक ख़र्च 18 लाख से अधिक ● आमदनी का स्रोत : मुस्लिम अवाम के चन्दे ● 100 अनाथ बच्चे जिनका पूरा ख़र्च इदारा ही उठाता है ।

● जिस रूप में संभव हो मदद करके अल्लाह से बड़ा इनाम प्राप्त करें–उदाहरण के लिए ● ज़कात ● सदक़े ● अतिया ● पैदावार की ज़कात ● क़ुरबानी की खाल ● एक अनाथ बच्चे का वार्षिक ख़र्च ● अपने या किसी बुज़ुर्ग के नाम पर कमरा या हॉल बनवाना आदि ।

● याद रखें यहां हर वर्ष ऑडिट (Audit) भी कराया जाता है । आप खुद यतीमख़ाना इस्लामिया पहुंच कर बराबरी का व्यावहारिक नमूना अपनी आंखों से देखें कि किस प्रकार अनाथ और मां-बाप वाले बच्चे मिल-जुलकर रहा करते हैं ।

नोट : इनायत टेक्निकल इंस्टीट्यूट (Technical Institute) की इमारत के निर्माण का काम अंतिम पड़ाव पर है।

यह इदारा आप से उदार सहायता की अपील करता है ।

नोट : यह इदारा विदेशी मुद्रा के क़ानून FCRA के तहत भी रजिस्टर्ड है ।

Foreign Donors विदेशी चन्दा देने वाले

अब आप विदेश से BANK A/c No. 300402010000187

BANK CODE NO. UBININBBJAM,

UNION BANK OF INDIA (MAIN BRANCH, GAYA)

में अपनी रक़म भेज सकते हैं

चेक या ड्राफ्ट पर केवल यह लिखें–THE GAYA MUSLIM ORPHANAGE

चेक, ड्राफ़्ट, मनीऑर्डर या ख़त भेजने का पता

Hon. SECRETARY, THE GAYA MUSLIM ORPHANAGE

At+P.o : CHERKI-824237, Distt : GAYA (BIHAR) INDIA

LOCAL DONARS मक़ामी चन्दा देने वाले

BANK A/C NO. : 10581, UNION BANK OF INDIA (MAIN BRANCH, GAYA)

Bank IFS Code No. : UBIN 0530042

CORE BANKIN G A/C NO.: 300402010010581, Mobile : 9955655960, 09801213022

E-mail : gmocde@yahoo.co.in, Website : www.gmogaya.com

नोट : कोर बैंकिंग वाले हज़रात E-mail या डाक से अपना मुकम्मल पता भेज दिया करें ताकि उसी पते पर रक़म की रसीद रवाना की जा सके ।

अध्यक्ष : डॉ फ़रासत हुसैन

एज़ाज़ी नाज़िम : डॉ० मुहम्मद एहतिशाम रसूल

दस तांका

1.
अंधे-बहरे
सब नेता ठहरे ।
फिर भी देखो,
हैं सर्वत्र उन्हीं के
परचम फहरे ।

2.
वही अवस्था;
सुधरी है देश की
कहां व्यवस्था !
दूर तक है आज
वही जंगल-राज ।

3.
चारण-भाट
राज-दरबारों में
करते ठाठ ।
लेकिन स्वाभिमानी
यहां भरते पानी ।

4.
उठने लगीं
दीवारें-ही-दीवारें,
आंगन बीच ।
दोनों तरफ़ मौन,
पर समझे कौन !

5.
सांप-सीढ़ी का
खेल यह जीवन,
हर पीढ़ी का ।
हारते-जीतते हैं
भाग्य से सभी जन ।

6.
जारी है खेल
यहां घृणा-द्वेष का,
जाने कब से ।
इधर है माचिस,
और उधर तेल ।

7.
आज विकृति
बनी है भारत की
नयी संस्कृति ।
टूटे हैं सभी मान,
मृत पड़ा विधान ।

8.
जिसने पढ़ा
जीवन को मन से,
वही तो कढ़ा ।
पढ़कर किताबें
केवल बोझ बढ़ा ।

9.
मांजें दु:ख से
बर्तन-सा स्वयं को,
जीवन-भर ।
दुख तो सहचर,
दुख से कैसा डर !

10.
दीपक जले,
रहता है अंधेरा
फिर भी तले ।
सदा अंधेरा छले,
बात यही तो खले ।

● डॉ० रामनिवास 'मानव'
706, सेक्टर-13, हिसार-125005(हरि०)

मस्जिदे नबवी का निर्माण

■ मौलाना मुहम्मद मुजीबुद्दीन क़ासिमी

मक्का मुअज़्ज़मा से ठीक उत्तर में लगभग 300 मील की दूरी पर एक मुबारक और रोशन शहर आबाद है, जो पहले यसरिब, फिर मदीनतुलनबी और अब मदीना मुनव्वरा के नाम से प्रसिद्ध है । अहले इस्लाम की राय है कि पृथ्वी पर मक्का मुअज़्ज़मा के बाद मदीना मुनव्वरा सारे स्थानों से ज़्यादा अफ़ज़ल और पवित्र है और वह शहर पवित्र क्यों न हो, जिसको अल्लाह तआला ने अपने सबसे प्रिय नबी हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) के जीवन में आपका निवास और देहावसान स्थल बनाया हो ।

इस पवित्र भू-क्षेत्र की फ़ज़ीलत (महात्म्य) से संबंधित आप (सल्ल०) का इरशाद है कि मदीना मुनव्वरा वह पवित्र स्थान है, जो गुनाहों की मलिनता और मैल-कुचैल को इस तरह साफ़ कर देता है, जैसे भट्टी चांदी के मैल को साफ़ कर देती है (बुख़ारी)।

इस पवित्र शहर की सबसे बड़ी फ़ज़ीलत यह है कि अल्लाह के रसूल हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) का मुबारक व पवित्र शरीर इसी मुबारक ज़मीन में धरोहर के रूप में रखा हुआ है । आपके दस हज़ार सच्चे साथी (रज़ि०) इसी शहर में आराम फ़रमा रहे हैं और इनके अतिरिक्त औलिया, उलमा और पीर-सूफ़ी तथा प्रतिष्ठित जन लाखों की संख्या में यहां दफ़न हैं ।

नबी करीम (सल्ल०) का इरशाद है कि मदीना मेरी जाए हिजरत (प्रवास-स्थान) है, यही मेरा विश्रामालय है और मैं यहीं से महाप्रलय के दिन उठाया जाऊंगा । इन दोनों हदीसों में मदीना मुनव्वरा की महानता की झलक स्पष्ट रूप से दिखायी देती है, इसलिए हर मुसलमान को स्वाभाविक रूप से मदीना से मुहब्बत होती है । अत: हर मुसलमान चाहे वह किसी देश का निवासी हो उसकी प्रबल अभिलाषा होती है कि अल्लाह तआला उसको मदीना मुनव्वरा बुला ले ।

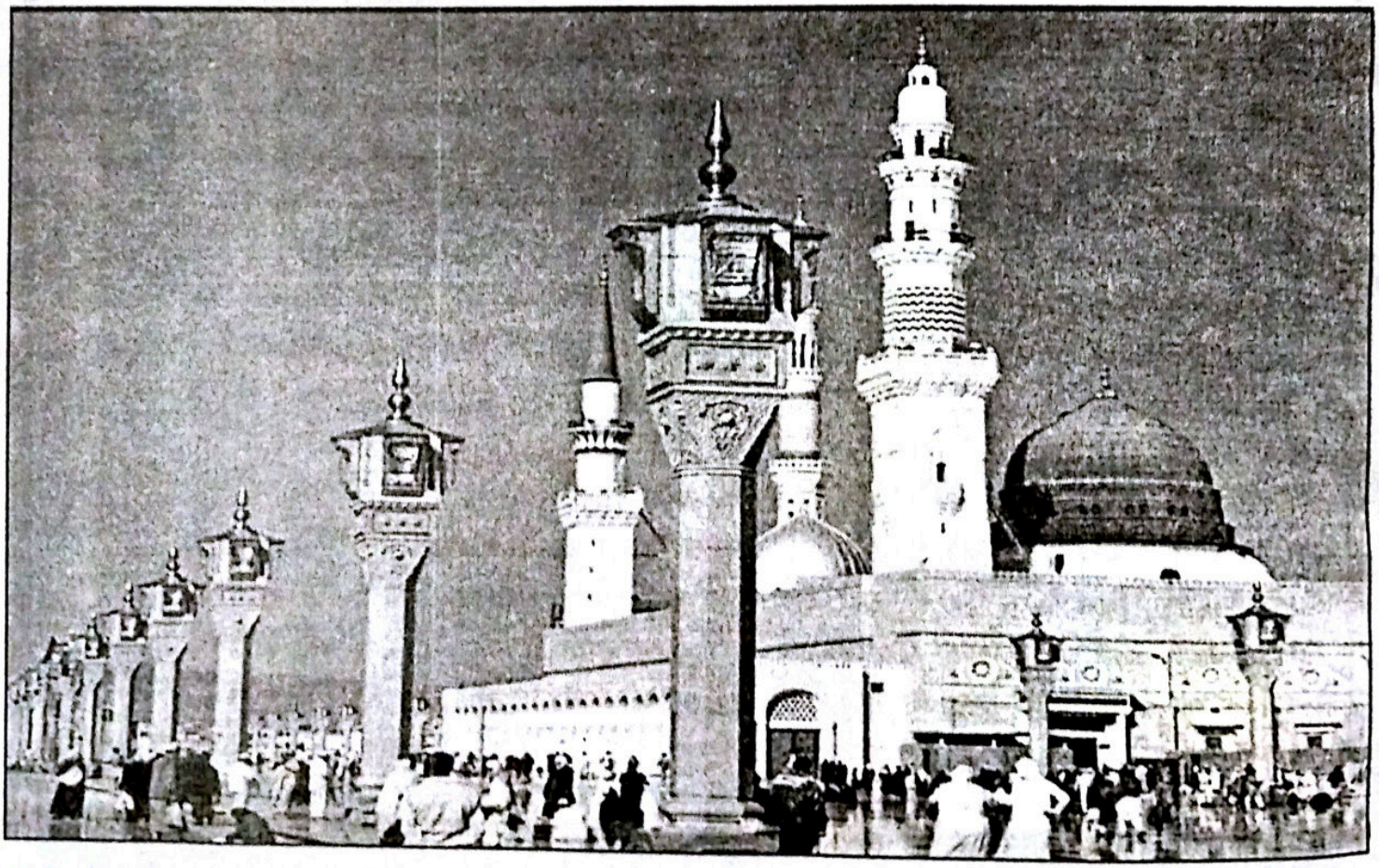

इतिहास पर एक नज़र

मस्जिदे नबवी और रौज़ा-ए-अतहर (आप (सल्ल॰) की पवित्र मज़ार) की जियारत करा दे, बल्कि उस पवित्र सर ज़मीन में दफ़न होने की कामना करता है, जिसके लिए वह दुआएं भी करता है । ये सारी भावनाएं केवल उस पवित्र स्थान की मुहब्बत, बड़ाई तथा महानता का प्रमाण हैं ।

वैसे तो मदीना मुनव्वरा की बहुत सारी विशेषताएं हैं, मगर कुछ मुख्य विशेषताएं ऐसी हैं, जो अन्य स्थानों में नहीं पायी जातीं । कुछ विशेषताएं इस तरह हैं–

● पूरे विश्व में मक्का मुअज़्ज़मा और मदीना मुनव्वरा के अतिरिक्त कोई शहर बहुनामी नहीं है, अत: मदीना मुनव्वरा का ज़िक्र करते हुए अल्लामा समहूदी (रह॰) ने अपनी प्रसिद्ध किताब 'वफ़ा अल वफ़ा' में 94 नाम गिनाए हैं । जबकि शेख अब्दुल हक़ मुहद्दिस देहलवी (रह॰) 'जज़्बुलकुलूब में 60 नाम बयान किए हैं (तारीख़े हरमैन शरीफ़ैन, 2/24) ।

● आप (सल्ल॰) ने मदीना से ज़्यादा मुहब्बत की दुआ फ़रमायी है । (बुख़ारी)

● आप (सल्ल॰) ने इस शहर में, इसके फलों-सब्ज़ियों और नाप-तौल में बरकत की दुआ फ़रमायी है । (बुख़ारी, मुस्लिम)

● जिस तरह मदीना हृदय के रोगों के लिए अकसीर (अमोघ-रसायन) है, उसी तरह उसकी मिट्टी भी शारीरिक रोगों के लिए लाभ प्रद है । (बुख़ारी, मुस्लिम)

● नबी करीम (सल्ल॰) ने मदीना तैयबा में निवास के दौरान पेश आने वाली तक़लीफ़ पर सब्र व संतोष करने वालों पर अपनी सिफ़ारिश की खुशख़बरी दी है । (तिरमिज़ी)

● आप (सल्ल॰) ने मदीनावासियों को सताने या किसी भी तरह का कष्ट देने से मना फ़रमाया है, बल्कि आप (सल्ल॰) ने ऐसे व्यक्ति पर लानत और उसके लिए हलाकत की बददुआ फ़रमायी है ।

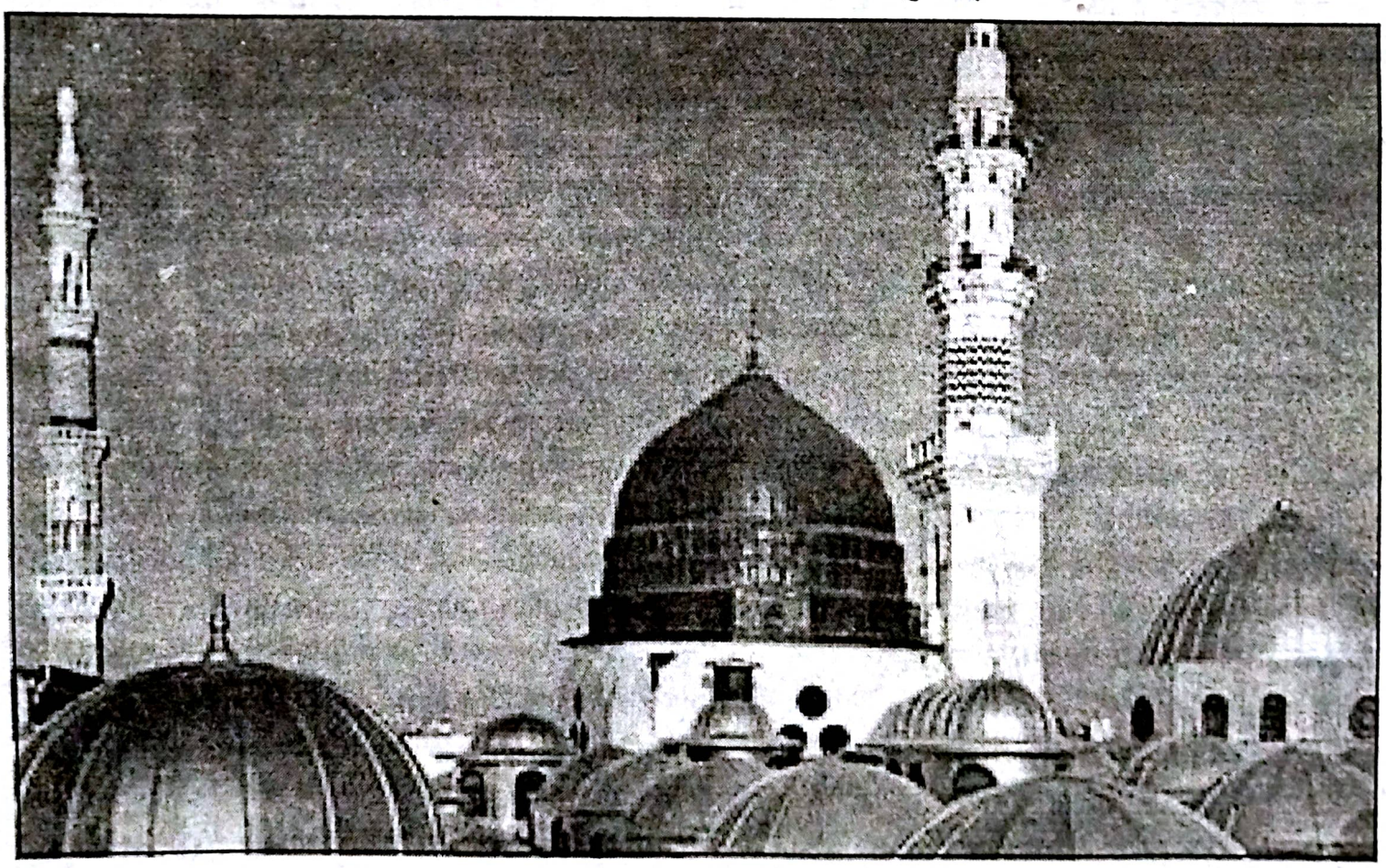

● मदीना मुनव्वरा ताऊन (प्लेग) के रोग और दज्जाल के फ़ित्ने से सुरक्षित रहेगा । (बुख़ारी, मुस्लिम)

● स्पष्ट रहे कि मदीना की ये सारी विशेषताएं इस्लाम और आप (सल्ल०) के अस्तित्व के कारण हैं, वरना इससे पहले यसरिब (मदीना मुनव्वरा) भी विश्व के दूसरे शहरों की तरह एक शहर था ।

● मदीना मुनव्वरा की सबसे बड़ी और मुख्य विशेषता मस्जिदे नबवी है । यह नबियों की निर्मित मस्जिदों में आख़िरी मस्जिद है । (मुस्लिम) यही मस्जिद आप (सल्ल०) की सारी दीनी, दावती अध्यात्मिक सरगर्मियों, शिक्षा-दीक्षा, मार्गदर्शन व धर्मोपदेश, और आत्मसंयम का लगभग दस वर्ष तक केन्द्र बनी रही । इस मस्जिद की फ़ज़ीलत की वजह से इसके लिए निश्चय पूर्वक सफ़र करना पुण्य कार्य है । (बुख़ारी, मुस्लिम) यहां एक नमाज़ का सवाब हज़ार नमाज़ों के बराबर, एक जुमा का सवाब हज़ार नमाज़ों के बराबर, एक जुमा का सवाब हज़ार जुमों के बराबर है, यहां गुज़ारे हुए एक रमज़ान का सवाब हज़ार महीनों से बेहतर व अफ़ज़ल है । (बुख़ारी, मुस्लिम)

एक रिवायत में है कि जिस व्यक्ति ने मेरी मस्जिद में 40 नमाज़ें जमाअत के साथ लगातार इस तरह पढ़ीं कि कोई नमाज़ न छूटी हो । इसके लिए तीन चीज़ों अर्थात नरक, यातना और कपटाचार से मुक्ति लिख दी जाएगी ।

(मुस्नद अहमद, तबरानी)

अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने जब हिजरत फ़रमायी तो हज़रत अबू अय्यूब अन्सारी (रज़ि०) के मकान में ठहरे और सबसे पहले मदीना में एक मस्जिद बनाने का निर्णय लिया । इसके लिए हज़रत अय्यूब अंसारी (रज़ि०) के मकान के सामने वाली ज़मीन चुनी गयी, जो दो अनाथ भाइयों सहल और सुहैल की थी । ये दोनों भाई हज़रत सअद बिन ज़रारह (रज़ि०) के अधीन थे । आप (सल्ल०) ने उनसे यह ज़मीन दस दिरहम में ख़रीद ली, जबकि वे बिना मूल्य के आप (सल्ल०) को देना चाहते थे । यह ज़मीन ऊंची-नीची थी, जिसमें खजूर के पेड़, कुछ क़ब्रें और खंडहर थे । आप (सल्ल०) ने ज़मीन समतल करने के लिए पेड़ कटवाए, क़ब्रों को उखाड़ कर उनकी हड्डियों को दूसरी जगह दफ़न करने का आदेश दिया ।

ज़मीन समतल हो जाने के बाद बुनियादों के लिए गड्ढे खोदे गए । सबसे पहला पत्थर आप (सल्ल०) ने अपने मुबारक हाथ से नींव में रखा । दूसरा पत्थर हज़रत अबू बक्र (रज़ि०) ने, तीसरा पत्थर हज़रत उमर (रज़ि०)ने , और चौथा पत्थर हज़रत उस्मान (रज़ि०) ने रखा । उसके बाद सहाबा किराम (रज़ि०) ने नींव में पत्थर भरना शुरू कर दिया । इस निर्माण में अंसार और मुहाजिरीन के साथ आप (सल्ल०) ने बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया । निर्माण के दौरान सहाबा (रज़ि०) आप (सल्ल०) के साथ मिलकर एक शेअर पढ़ते थे, जिसका अनुवाद यह है–"ऐ अल्लाह ! आख़िरत (परलोक) की भलाई के सिवा कोई भलाई अहम नहीं, अन्सार और मुहाजिरीन को माफ़ फ़रमा ।"

मस्जिदे नबवी का निर्माण इतनी सादगी के साथ किया गया कि क़िब्ले की दीवार में खजूर के तनों की पंक्तियां और दाएं-बाएं पत्थरों की दीवारें खड़ी कर दी गयीं और छत भी खजूर की शाखों से इतनी नीची बनायी गयी कि आदमी खड़ा हो तो आसानी के साथ हाथ लगा सके और उस पर मिट्टी डाल दी गयी, जो बारिश में नमाज़ियों के सिर पर गिरती थी । इस तरह 7 गज़ ऊंची, उत्तर व दक्षिण की तरफ़ 54 गज़ चौड़ी और पूर्व व पश्चिम की तरफ़ 63 गज़ लम्बी मस्जिद बन गयी, जिसमें साज-सज्जा बिल्कुल न थी । न उसमें मिम्बर था और न ही मेहराब । केवल एक चार दीवारी कच्ची ईंटों की बनी हुई थी ।

कुछ सहाबा (रज़ि०) ने बाद में सजदे की जगह कंकड़ियां बिछा दीं, जिसको आप (सल्ल०) ने पसन्द किया । सारे फ़र्श पर पत्थर के छोटे-छोटे टुकड़े बिछवा दिए जिसको 'हसवह' कहते हैं ।

इस प्रथम निर्माण में तीन दरवाज़े थे । एक दरवाज़ा दक्षिण की तरफ़ था, जिस तरफ़ अब क़िब्ला है । दूसरा दरवाज़ा पश्चिम की तरफ़ था, जिस तरफ़ अब बाबुस्सलाम और बाबे रहमत हैं और तीसरा दरवाज़ा पूर्व की ओर था, जिस तरफ़ अब बाबे जिबरील हैं, यह निर्माण सन एक हिजरी का है ।

चूंकि मस्जिदे नबवी नींव डालने के प्रथम दिन से ही तंग पड़ती जा रही थी, क्योंकि अहले इस्लाम की संख्या दिन-प्रतिदिन बढ़ती ही जा रही थी । इसी लिए बार-बार मस्जिदे नबवी के प्रांगण-विस्तार की ज़रूरत पेश आती गयी । इसके विस्तार के कुछ विवरण निम्नलिखित हैं–

आप (सल्ल०) के द्वारा आरम्भ में जो मस्जिद बनायी गयी थी, वह उस समय के लिहाज़ से काफ़ी थी और जब लोग भारी संख्या में इस्लाम में दाख़िल होने लगे, तो मौजूदा मस्जिद छोटी पड़ने लगी और समय गुज़रने के साथ-साथ जीर्ण-शीर्ण भी होती गयी। अत: जब आप (सल्ल०) ख़ैबर से वापस तशरीफ़ लाए, तो मस्जिदे नबवी का नवनिर्माण और उसे विस्तृत करने का इरादा फ़रमाया। इसके लिए मस्जिद के पड़ोस में एक अन्सारी (रज़ि०) का मकान था, जिसको हज़रत उस्मान (रज़ि०) ने दस हज़ार दिरहम में ख़रीदकर मस्जिदे नबवी की सेवा में अर्पित कर दिया और अर्ज़ किया कि ऐ रसूलुल्लाह (सल्ल०)! मुझसे जन्नत में मकान के बदले में यह मकान ख़रीद लीजिए।

इसके बाद वह मकान तोड़कर मस्जिद में सम्मिलित कर लिया गया। इस निर्माण के बाद मस्जिद वर्गाकार रूप में हो गयी और हर तरफ़ से सौ गज़ की वृद्धि हो गयी। आप (सल्ल०) ने चौड़ाई में 40 हाथ और लम्बाई में 30 हाथ वृद्धि की। अब मस्जिदे नबवी का सम्पूर्ण क्षेत्रफल 2500 वर्ग मीटर था, लेकिन क़िब्ला के ओर की दीवार पहले वाली सीमा तक ही रही। यह विस्तार सन् 7 हिजरी का है। विस्तृत किए हुए इस भाग के स्तम्भों की संख्या 19 है जो दो पंक्तियों में है। अर्थात एक ओर दस और दूसरी ओर नौ। इन स्तम्भों की विशेष बात यह है कि इसके मध्य में गुलाब का फूल बना कर सुनहरी रेखाएं बना दी गयी हैं, जिनके कारण ये स्तम्भ रियाज़ुल जन्नत के स्तम्भों से विशिष्ट दृष्टिगोचर होते हैं। इस समय नबूवत काल वाली मस्जिद की सीमा को नुमायां करने के लिए उसके अन्तिम स्तम्भों के ऊपर एक सुनहरी झालर पर सुनहरे शब्दों में 'हदे मस्जिदे नबवी' लिखा हुआ है।

● आप (सल्ल०) के काल में मस्जिदे नबवी के स्तम्भ और उसकी छत खजूर के तनों की थी, जो समय गुज़रने के साथ-साथ जीर्ण-शीर्ण होती गयी। प्रथम इस्लामी शासक हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ (रज़ि०) ने स्तंभों के स्थान पर दूसरे स्तम्भ लगवाए और छत पर पड़े हुए खजूर के तनों को भी बदलवाया। मगर इस परिवर्तन में उन्होंने इस बात का ध्यान रखा कि जो स्तम्भ पहले जहां स्थित था, उनके ही स्थान पर नया स्तंभ लगवाया।

● हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि०) फ़रमाते हैं कि लोगों ने हज़रत उमर (रज़ि०) से मस्जिद की तंगी के कारण उसको विस्तृत करने की मांग थी। अत: उन्होंने मस्जिद को विस्तृत करने का आदेश दिया और जो मकान आपके और आपके परिवारवालों के थे उनको ध्वस्त करवाकर मैदान के रूप में परिवर्तित करवा दिया, लेकिन उसी पंक्ति में आप (सल्ल०) के चचा हज़रत अब्बास (रज़ि०) का मकान भी था। हज़रत उमर (रज़ि०) ने मस्जिद के विस्तार हेतु उस मकान को हज़रत अब्बास (रज़ि०) से मुंहमांगी क़ीमत पर ख़रीदना चाहा, मगर हज़रत अब्बास (रज़ि०) बेचने के लिए तैयार न हुए, क्योंकि इस मकान की नींव और निर्माण में हर क़दम पर आप (सल्ल०) का मश्विरा सम्मिलित था। इसलिए हज़रत उमर (रज़ि०) ने मस्जिद के विस्तार का इरादा स्थगित कर दिया।

जब हज़रत अब्बास (रज़ि०) को विदित हुआ कि विस्तार का इरादा स्थगित हो गया है, तो उन्होंने हज़रत उमर (रज़ि०) को यह संदेश भेजा कि मैं अपना मकान अल्लाह की राह मे मस्जिद के लिए दान करता हूं और इसका बदला आख़िरत (परलोक) में पाने का आकांक्षी हूं। इसके बाद सन् 17 हिजरी में हज़रत उमर (रज़ि०) ने मस्जिद के विस्तार का कार्य प्रारम्भ किया और इंसान की ऊंचाई तक पत्थर से नींव को भरा गया। लगभग 16 फ़ुट दक्षिण की ओर 31 फ़ुट पश्चिम की ओर और उत्तर की ओर 47 फ़ुट ज़मीन की वृद्धि हो गयी। पूर्व की ओर क़ब्रें और आप (सल्ल०) की नेक व सदाचारी पत्नियों के हुजरे थे। इसलिए उनको हाथ नहीं लगाया गया, लेकिन हज़रत अब्बास (रज़ि०) के मकान को मस्जिद में सम्मिलित कर लिया गया। हज़रत उमर (रज़ि०) ने मस्जिद परिसर में तीन दरवाज़ों की भी वृद्धि की अर्थात कुल छह दरवाज़े हो गए, ताकि लोगों को आने-जाने में सुविधा हो, लेकिन मुख्य बात यह थी कि आपने जितना विस्तार किया वह बिल्कुल आप (सल्ल०) के निर्माण जैसा ही था। अर्थात कच्ची ईंटों की दीवारें, छत खजूर के टहनियों की। परन्तु मज़बूती और लम्बी अवधि तक बाक़ी रहने के लिए खजूर के तनों के बजाय लकड़ी के स्तम्भ बनाए गए और छत की ऊंचाई जो पहले 7 हाथ थी, उसे बढ़ाकर 11 हाथ कर दी गयी।

एक मेहराब भी बनवायी, जिसको मेहराबे-उमर कहते हैं। इसके अतिरिक्त मस्जिद से बाहर एक चबूतरा बनवाया,

जिसको 'बुतैहा' कहा जाता है, जो उद्‌बोधन या शेअर पढ़नेवालों के लिए था, लेकिन बाद के किसी विस्तार में इस चबूतरे को भी मस्जिद में सम्मिलित कर लिया गया ।

● सन 24 हिजरी में जब हज़रत उस्मान (रज़ि०) इस्लामी साम्राज्य के शासक बने, तो लोगों ने जुमा के दिन मस्जिदे नबवी के तंग होने की शिकायत की । इस मांग पर उन्होंने अपने लोगों और इस्लामी धर्मशास्त्रियों से परामर्श किया और रबीउल अव्वल सन् 29 हिजरी में निर्माण का कार्य आरम्भ कराया, जो एकुम मुहर्रमुलहराम सन् 30 हिजरी को पूर्ण हुआ । आप (रज़ि०) ने इस विस्तार में तीन (क़िब्ला, उत्तर और पश्चिम की दिशाएं) दिशाओं में वृद्धि की । क़िब्ला की ओर एक बरामदे की वृद्धि की जो अब तक 'मेहराबे उस्मानी' के नाम से सुरक्षित है, जहां आजकल इमाम साहब खड़े होकर नमाज़ पढ़ाते हैं । क़िब्ले की दीवारें उस स्थान पर निर्मित थीं, जहां वे आज स्थित हैं । पश्चिम की ओर बरामदे के अतिरिक्त उत्तर की ओर दस हाथ की वृद्धि की, जो बाद के निर्माणों में परिवर्तित हो गया । उन्होंने दीवारें नये सिरे से पत्थर और चूने से निर्मित करवायीं । सीसा पिलाकर लोहे जैसे सुदृढ़ स्तम्भ स्थापित किए ।

यह निर्माण अलंकृत पत्थरों से कराया और छत सागवान की लकड़ी से डाली गयी, परन्तु मेहराब कच्ची ईंटों से ही बनाया गया । आप (रज़ि०) ने हज़रत उमर (रज़ि०) की शहादत की घटना के कारणवश इमाम की रक्षा के उद्देश्य से मेहराब की जगह कच्ची ईंटों का एक अहाता और उसमें एक रोशनदान भी बनवाया । मस्जिद के दरवाज़े यथापूर्ण छह ही रखे, जिनमें उत्तर की ओर के दोनों दरवाज़े बाद के विस्तार में बन्द कर दिए गए और कई सदी तक चार ही दरवाज़े रहे ।

● सुल्तान वलीद बिन अब्दुल मलिक की ओर से हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ (रह०) मदीना के प्रशासक थे । सुल्तान वलीद ने मस्जिदे नबवी के नवीनीकरण और उसको विस्तृत करने का आदेश दिया कि पूर्व-पश्चिम और उत्तर की तीनों दिशाओं में वृद्धि कराएं । अत: हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ ने सन् 88 हिजरी में मस्जिदे-नबवी का निर्माण प्रारम्भ की । यह काम सन् 91, हिजरी में पूर्ण हुआ, जिसमें इस्लाम की पवित्र मांओं के हुजरे भी तोड़कर सम्मिलित कर लिए गए । इस विस्तार में पश्चिम की ओर बीस हाथ, पूर्व की ओर लगभग तीस हाथ और उत्तर की ओर भी कुछ वृद्धि की गयी । आधुनिक-निर्माण अलंकृत पत्थरों से किया गया, तथा स्तम्भ खोखले पत्थर से बनाए गए और उनके बीच में लोहा और सीसा डाला गया, जिनके सिरों और चौकोनों पर सुनहरे रंग की फूल-पत्ती और बेल-बूटे बनाए गए । दो छतें डाली गयीं, जिसमें निचली छत सागवान की लकड़ी से तैयार की गयी, जिसको सोने से अलंकृत किया गया ।

मस्जिद की दीवारों पर अन्दर की ओर संगमरमर, सोना और रंगीन ईंटें लगायी गयीं । मेहराबे उस्मानी को लकड़ी से बदला गया, जो पहले कच्ची ईंटों की थी । इस विस्तार में सबसे पहले मेहराब और मीनार बनाए गए । इब्ने ज़बाला से उल्लिखित है कि उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ ने मस्जिदे नबवी का निर्माण व विस्तार किया तो चार मीनार भी बनवाए । इस तरह वलीद बिन अब्दुल मलिक के शासनकाल में मस्जिदे नबवी की लंबाई दो सौ गज और चौड़ाई 167 गज हो गयी और दरवाज़ों की संख्या 20 हो गयी ।

● जब ख़लीफ़ा मेहदी बिन मंसूर अब्बासी हज अदा करने के बाद मदीना मुनव्वरा गए तो, जाफ़र बिन सुलैमान को मदीना मुनव्वरा का गवर्नर नियुक्त किया और उन्हें मस्जिदे नबवी को विस्तृत करने का आदेश दिया । इस काम में कुछ और लोगों को भी उनके साथ नियुक्त किया । अत: सन् 161 हिजरी में विस्तार का काम प्रारम्भ हुआ । इस बार उत्तर की ओर वृद्धि की गयी । मेहदी ने मस्जिद के आस-पास के कुछ घर ख़रीद लिए, जिनमें कुछ सहाबा (रज़ि०) के भी थे । उनको भी मस्जिद के अहाते में सम्मिलित कर लिया गया । यह काम सन 165 हिजरी में समाप्त हुआ ।

मेहदी अब्बासी और ख़लीफ़ा अब्दुल मजीद उस्मानी के विस्तारों के मध्य कुछ आकस्मिक दुर्घटनाओं के कारणवश कई राज्यों के शासकों ने भी आवश्यकतानुसार विस्तार व निर्माण कार्य करवाया ।

अत: सन 654 हिजरी में चराग़ जलाने वाले के असावधानी के कारण वश आग लग गयी, जो सारी मस्जिद में फैल गयी, सिवाय उस क़ुब्बा (गुमटी) के जो मस्जिद के प्रांगण में सामान रखने के लिए सुल्तान नासिरूद्दीन उल्लाह ने सन 576 हिजरी में निर्मित करवाया था और सब जल गया । मदीना वालों ने आग बुझाने की बहुत कोशिश

की, मगर सफल न हो सके । अत: मुहर्रम सन् 655 हिजरी में निर्माण कार्य प्रारम्भ होकर कुछ वर्ष के बाद पूर्ववर्ती नीवों पर ही मस्जिदे नबवी का नवनिर्माण हो गया ।

सन 705 हिजरी में मलिक नासिर मुहम्मद बिन क़लादून ने मस्जिद की छत को बदल डाला तथा पूर्वी व पश्चिमी भाग का जीर्णोद्धार करवाया । मस्जिद के प्रांगण की ओर दो छत वाली दालान की वृद्धि की । लम्बी अवधि के बाद जब इनमें सुधार की ज़रूरत पेश आयी, तो सन 831 हिजरी में सुल्तान अश्रफ़ बरसबाक़ी ने फिर से इनका नवनिर्माण करवाया । सन् 753 हिजरी में सुल्तान चक़मक़ ने रौज़तुलजन्नत की छत बदलवायी ।

● सन 879 हिजरी में 13 रमज़ान की रात बरसात बहुत तेज़ हुई । मीनारों पर गरज के साथ बिजली गिरी, जिसका प्रभाव छत पर पड़ा और छत में आग लग गयी । मस्जिद की दीवारें ध्वस्त हो गयीं । अधिकांश स्तम्भ टूट गए । केवल आप (सल्ल०) का रौज़ाए मुबारक और पूर्ववर्ती क़ब्ब-ए सहन सुरक्षित रहा । अत: सन 879 हिजरी या सन 888 हिजरी में सुल्तान क़ायतबायी ने मस्जिद के अधिकांश भागों, दीवारों, स्तम्भों और मीनारों का जीर्णोद्धार करवाया । मेहराबे उस्मानी को विस्तृत किया और उसके पास स्तम्भ स्थापित करके कुब्ब: बनाया । बाबे सलाम को संगमरमर से बनाकर उसे सोने-चांदी से अलंकृत किया । मस्जिद के आंतरिक भाग में दो कुब्बे स्थापित किए । मिम्बर और मेहराबे नबवी को विशिष्ट और शानदार बनाया । बाबे सलाम से लेकर बाबे रहमत तक पश्चिमी दिशा की दीवार निर्मित की और बाबे रहमत पर आधुनिक मीनारों की स्थापना की ।

● जब इस्लामी शासन आले उस्मान अर्थात तुर्की के सुल्तानों के हाथों में आया, तो सन् 980 हिजरी में सुल्तान सलीम ने मस्जिदे नबवी में कुछ सुधारात्मक कार्य किए । मेहराबे सुलैमानी को सोने के पानी से अलंकृत किया । फिर ख़लीफ़ा अब्दुल मजीद उस्मानी के शासनकाल सन् 1265 हिजरी में मेहराब, मिम्बर शरीफ़, पश्चिमी दीवार मेहराबे नबवी, मेहराबे सुलैमानी, मेहराबे उस्मानी और बड़े मीनारों के अतिरिक्त सारी मस्जिद दोबारा निर्मित की गयी । मस्जिद के सारे फ़र्श पर और क़िब्ले वाली दीवार के आधे भाग तक संगमरमर लगाया गया । छत के सारे गुम्बदों में फूल-पत्ती और बेल-बूटे बनाए गए ।

रौज़-ए-अतहर के स्तम्भों को दूसरे स्तम्भों से विशिष्ट करने के लिए सफ़ेद और लाल संगमरमर लगाया गया । इस मस्जिद में एक नया दरवाज़ा 'बाबे मजीदी' के नाम से बनाया गया, जो वास्तव में मस्जिद के अन्दर था । विस्तारण का यह काम सन् 1277 हिजरी अर्थात 12 वर्ष में सम्पूर्ण हुआ, जिसमें तुर्कों ने अपने कला-कौशल का भरपूर कमाल दिखाया ।

मस्जिदे नबवी के विस्तार में बाद के शासकों ने भी अपनी सेवाएं अर्पित की हैं । एक विस्तार व निर्माण सन 1368 हिजरी अर्थात सन 1951 ई० में हुआ, जिसमें मस्जिद के उत्तर, पूर्व और पश्चिम में आस-पास के क्षेत्रों को ख़रीदकर मस्जिद में सम्मिलित कर दिया गया । इमारते मजीदिया में से छत का दक्षिणी भाग यथावत रहने दिया गया । इस तरह मस्जिदे नबवी का कुल क्षेत्रफल 16326 वर्गमीटर हो गया । विस्तार का यह कार्य अक्टूबर 1955 ई० में सम्पूर्ण हुआ, जिस पर पांच करोड़ रियाल ख़र्च हुए ।

मस्जिद का दूसरा विस्तार 1406 हिजरी अर्थात सन 1985 ई० में हुआ । इस विस्तार कार्य के बाद नमाज़ियों की जगह पहले की तुलना में नौ गुना अधिक हो गयी । इस विस्तार में 6 नये मीनार बनाए गए । नये विस्तार में 27 दालान हैं, जिनकी छत गतिशील गुम्बदों की सूरत में है, ताकि गुम्बर हटाने से प्राकृतिक हवा और रोशनी प्राप्त हो सके । मस्जिदे नबवी का मूल सार गुम्बदे ख़िज़रा है । नबी करीम (सल्ल०) जिस स्थान पर आराम फ़रमां रहे हैं, वही आप (सल्ल०) का निवास स्थान था, जो हज़रत आइशा (रज़ि०) के हिस्से में था । आपके उसी पवित्र मकान को गुम्बदे ख़िज़रा कहते हैं । हज़रत उमर फ़ारूक़ (रज़ि०) ने अपने शासनकाल में पहली बार पवित्र हुजरे को कच्ची ईंटों से निर्मित करवाया था, जो वलीद बिन अब्दुल मलिक के निर्माण तक यथावत् स्थिर रहा । सन 678 हिजरी में ख़लीफ़ा मंसूर क़लादून सालही के काल में हुजरा शरीफ़ पर गुम्बद का निर्माण हुआ । वर्तमान गुम्बदे ख़िज़रा के नीचे दो गुम्बद और हैं, जैसा कि इतिहासकार "तारीख़े मदीनतुल मुनव्वरा" लिखते हैं कि जमाली ने पवित्र हुजरे की दीवार पर एक गुम्बद बनाया और उस गुम्बद के ऊपर दूसरा गुम्बद भी निर्मित करवाया फिर उसके ऊपर एक बहुत बड़ा गुम्बद बनवाया, जिसने दोनों गुम्बदों को घेर रखा था ।

(तारीख़े हरमैन शरीफ़ैन, 2/237)

خطبات

مولانا سید ابوالاعلیٰ مودودیؒ

موجودہ عہد کے لسانی وفکری مزاج کو سامنے رکھتے ہوئے اسلام کے بنیادی ارکان کی اہمیت وضرورت پر دل نشیں اور آسان انداز میں یقین آفریں کتاب۔

اردو

اول	[حقیقتِ ایمان]		16.00
دوم	[حقیقتِ اسلام]		16.00
سوم	[حقیقتِ صوم وصلوٰۃ]		22.00
چہارم	[حقیقتِ زکوٰۃ]		18.00
پنجم	[حقیقتِ حج وجہاد]		24.00
خطبات مکمل			125.00 [HB] 100.00 [PB]

ہندی

اول	[ایمان کی حقیقت]	19.00
دوم	[اسلام کی حقیقت]	18.00
سوم	[نماز، روزہ کی حقیقت]	23.00
چہارم	[زکوٰۃ کی حقیقت]	18.00
پنجم	[حج کی حقیقت]	17.00
خطبات مکمل		95.00

انگریزی

Fundamentals of Islam - I	28.00
Fundamentals of Islam - II	30.00
Fundamentals of Islam - III	28.00
Fundamentals of Islam - IV	26.00
Fundamentals of Islam - V	30.00
Fundamentals of Islam	130.00 PB 180.00HB

مرکزی مکتبہ اسلامی پبلشرز، نئی دہلی ۲۵

D-307, Dawat Nagar, Abul Fazl Enclave, Jamia Nagar, New Delhi-110025

Phone: 26971652, 26954341, 26946447(D) Fax: 26947858

E-mail: mmipublishers@gmail.com • **Website:** www.mmipublishers.net

कम्मो

❖ चांद ख़ा रहमानी

वह ज़ार-ज़ार रो रहा है । घर वाले और बाहर वाले उसे सांत्वना दे रहे हैं कि तुम्हारा साथ इतने दिन का ही था । अल्लाह को यही मंजूर था । लेकिन उसकी आंखों के आंसू रुकने का नाम नहीं ले रहे । किसी भी क्षण उसकी कोई भी बात याद आती है और उसकी हिलकी भर आती है । क़ब्र पर गया तो आंसू टप-टप गिर रहे थे । लोग देख रहे थे कि वह फफक-फफक कर रो रहा है । बच्चों को ढाढस बंधाने की बजाय वह खुद अपना मुंह भींचकर न रोने की कोशिश करता लेकिन अंदर ऐसी हूक उठती कि रोके से नहीं रुकती । रोते हुए चेहरे को छुपाने की कोशिश तो बहुत करता मगर भावनाएं उद्वेलित होकर आंसुओं की शक्ल ले लेतीं ।

उसे अपनी कम्मो पर बहुत गुमान था । कभी कोई ससुरालिया कोई बात कहेगा तो वह भरे समाज में कहेगा कि वह उसकी पत्नी है । तुम्हारा क्या, तुम तो लड़की दे चुके हो । अब इस पर मेरा और मेरे बच्चों का हक़ है, लेकिन ऐसा कहने की कभी नौबत ही नहीं आयी । उसकी आंखों के सामने शादी से लेकर अब तक का एक-एक दृश्य गुज़र रहा था । कैसे शादी हुई और उसके बाद क्या-क्या हुआ । उस समय उस क़स्बे में शादी करने के बाद दामाद पर दबाव बनाने के लिए अक्सर लड़की को रोक लिया जाता था और अपनी शर्तों पर लड़की को भेजा जाता था । आज जैसा तब माहौल नहीं था । आज न तो लड़की रुकने को तैयार है और न मां-बाप लड़की को रोककर खुश होते हैं । शकील कई बार बुलाने गया लेकिन कम्मो को भेजा नहीं । शकील को याद आ रहा था कि जब कम्मो को उसके बाप ने रोक लिया था तब उसने साहस कर कह दिया था 'तुम मुझे ले चलो, मैं चलने को तैयार हूं' । ऐसा कहना उस समय बड़ी बात थी ।

एक साल की लम्बी जिद्दोजहद, सामाजिक और पुलिस के दबाव के बाद आख़िर वह कम्मो को बुलाने में सफल हो गया था । गृहस्थ जीवन शुरू होने से पहले ही शकील की ज़िंदगी में तमाम तरह की मुश्किलें सामने खड़ी हो गयी थीं । सबसे बड़ी मुश्किल ग़रीबी थी । ऊपर से बड़ा भाई कोड़ा लेकर फटकार रहा था । कह रहा था घर से निकलो, ये घर मेरा है । महज़ साढ़े चार सौ रुपया तनख़्वाह ऊपर से मां-बाप साथ । कोई भी भाई मां-बाप को साथ रखने को तैयार नहीं था । ग़रीब और कमज़ोर पर हर कोई हक़ जता देता है यही समाज का दस्तूर है । जो आता कहता 'भई मां-बाप को तुम्हीं रखो' तुम घर में छोटे हो । कोई यह कहने को तैयार नहीं था कि भाई आर्थिक रूप से संपन्न हैं तो मां-बाप उनके पास ज़्यादा अच्छी तरह से रह सकेंगे ।

कोई हिम्मत करके यह बात भाई से कहता भी तो भाई उसे फटकार लगाकर भगा देता था । 'समरथ को नहिं दोष गोसाईं ।' एक ओर ग़रीबी दूसरी ओर भाई की ओर से मिल रही प्रताड़ना, ऐसे में शकील को ज़बरदस्त तनाव के चलते टी०बी० की बीमारी हो गयी, लेकिन कम्मो ने हिम्मत बनाए रखी । एक भाई कहता था कि इसकी औरत भाग जाएगी लेकिन वह भागी नहीं बल्कि फटे कपड़ों में 'थेगरा' (पैबंद) लगाकर पहन लेती, मगर मुसीबत के समय उसके साथ खड़ी रही । हिम्मत बंधाती रही । हालात और भाई को कोसती रही ।

बच्चे हुए थोड़ी तनख़्वाह बढ़ी तो हालात में मामूली सुधार आया, लेकिन जिसका प्रारंभ ख़राब होता है उसे समाज बहुत समय तक उसी नज़र से देखता रहता है चाहे उसकी स्थिति में बदलाव आ जाए तब भी 'सेल्फ मेड' व्यक्ति जीवन में कभी झुकता नहीं है । उसका स्वाभिमान उसे समझौता नहीं करने देता ।

उधर, शकील के ससुराल से रिश्ते अभी भी कड़वाहट भरे चल रहे थे । उसे रह-रहकर इस बात का मलाल आ रहा था कि दूसरे लोग किस तरह अपने बेटी-दामाद की मदद करते हैं और एक उसका ससुर है जो मदद करना तो दूर भावनात्मक सहारा भी नहीं दे रहा । दरअस्ल ससुर

इसलिए शकील से दूरी बनाए रखना चाहता था कि उसने कम्मो की शादी का सारा ज़ेवर रख लिया था । अब वह किस मुंह से दामाद और लड़की से बात करे । इसी बात को लेकर दोनों तरफ़ से आना-जाना बंद था ।

कम्मो अपने मां-बाप और मायके की याद में बीमार पड़ गयी । इलाज कराने पर भी उसका स्वास्थ्य बहुत अच्छा नहीं हुआ तो शकील को लगा कि यह बीमारी कम मानसिक परेशानी और मायके की याद के कारण बीमार है । इसलिए उसने खुद ही कहा कि वह मायके चली जाए । कम्मो को शकील के पास आये तीन साल हो गये थे, विवाद के चलते तब से वह मायके नहीं गयी थी । यह लड़की का स्वभाव है कि वह अपने मायके आना-जाना चाहती है । जब शकील ने मायके जाने की बात कही तो कम्मो के चेहरे एक अजीब क़िस्म का संतोष झलक उठा । लेकिन एक मुसीबत यह थी कि शकील गुस्से के कारण ससुराल नहीं जाना चाहता था, लेकिन कम्मो अकेले नहीं जा सकती थी ।

आख़िर मजबूरी में ही सही शकील भी उसके साथ जाने को तैयार हो गया । इस बीच कम्मो की गोद में अबरार आ चुका था । शकील इशारों में कही गयी कम्मो की बात को भी नहीं टालता था । वह उसकी भावनाओं की क़द्र करता था । यह बात अलग है कि कम्मो उसकी भावनाओं को नहीं समझ पाती थी । ससुराल में आना-जाना शुरू तो हो गया लेकिन रिश्तों में वह मधुरता नहीं आयी जो होनी चाहिए जो ससुराल और दामाद के बीच होती है । यहां रहीम का दोहा शकील को याद आ गया जो उसने आठवीं कक्षा में पढ़ा था । 'रहिमन धागा प्रेम का मत तोरो चटकाय, टूटे पै फिर ना जुड़े, जुड़े गांठ पड़ जाए' । हां शकील की सास ज़रूर उससे बहुत प्यार करती थी और आज भी करती है ।

इधर हालात लगातार सुधरने लगे । जो रिश्तेदार उसका मज़ाक़ उड़ाते थे अब वे भी बात करने लगे । इधर पिता जी की मौत पर भाई से चौदह साल तक गहरे मनमुटाव के बाद बोलचाल शुरू हो गयी, लेकिन भाई अपना रवैया बदलने को तैयार नहीं था । इधर शकील भी अपनी नीतियों से समझौता करने को तैयार नहीं था ।

विपन्नता दाम्पत्य जीवन में कलह पैदा करती है । पैसे की कमी पति-पत्नी के बीच रोज़ तू-तू मैं-मैं कराती है, लेकिन कम्मो के साथ यह अच्छी बात रही कि वह अपने मायके में सबसे बड़ी और लाडली तो थी मगर वह परिवार भी बहुत संपन्न नहीं था सो उसे इन हालात से निपटने में कोई बहुत परेशानी नहीं हुई । यही कारण था कि शकील और कम्मो के बीच ग़रीबी कभी बाधा नहीं बनी । अमीरी-ग़रीबी के बीच बेसिक फ़र्क़ यह है कि जो लोग सुख-सुविधा के बीच रह चुके होते हैं, वे ख़राब हालात में नहीं रह पाते और उस हालात से निपटने के लिए दूसरे और ग़लत रास्ते अपना लेते हैं, लेकिन निर्धनता में पला-बढ़ा व्यक्ति हर हाल में गुज़ारा कर लेता है । एक बात और घर की क्लेश परिवार को ख़त्म करती है, दरिद्रता लाती है लेकिन बाहरी मुसीबत, परिवार, समाज और देश में एकता पैदा करती है । डर समाज, क़ौम, समुदाय और परिवार को संगठित करता है और अलग-अलग विचारधारा होते हुए भी सब लोग मजबूरी में ही सही एक हो जाते हैं । यही एकता बाहरी ताक़त से लड़ने का हौसला और ताक़त देती है ।

भाई की तरफ़ से हो रहे असहयोग और ग़रीबी के हमले के बीच कम्मो ने कहा था 'तुम्हें हिम्मत नहीं हारनी है हमें यहीं रहना है । हमें इनके डर से घर छोड़कर नहीं जाना है । तुमने जो हिम्मत हारकर मकान बेचने की सोची है उसे मैं हरगिज़ नहीं चलने दूंगी ।' कम्मो की आवाज़ में हौसला, ज़िद और आत्मविश्वास था । सामने वाले चाचा भी गुस्सा हुए कि तू मकान बेच रहा है आख़िर कम्मो को ज़िद और चाचा की फटकार के बाद फिर विपरीत परिस्थितियों से लड़ने की हिम्मत आ गयी । अगर कम्मो साहस न बंधाती और हालात से लड़ने का हौसला न देती तो शायद आज दिल्ली में न होते और होते तो आज वह मक़ाम नहीं होता जो आज है ।

जब लोग सो रहे होते तब कम्मो हाथ में जलती डिबिया लेकर बैठ जाती थी और शकील उसकी रोशनी में लिखता था । घर छोटा उसमें भी मां-बाप साथ, घर में न टेबल थी न कुर्सी इसलिए लैंप रखने तक की जगह नहीं थी । शकील चारपाई पर बैठकर ही लिखता था इसलिए कम्मो को डिबिया हाथ में पकड़नी पड़ती थी । पिताजी कहते, 'इस लिखने से क्या फ़ायदा, बेकार के काम में सिर खपा रहा है, सो जा सुबह काम पर जाना है ।'

लिखना शकील का शौक़ था उस शौक़ को पूरा करने में कम्मो उसकी मदद करती थी । अगर वह साथ न देती, तो वह कभी लिख नहीं पाता । इस बात का ताना कम्मो

कभी-कभी मार भी देती थी । कहती अगर मैं तुम्हारा साथ न देती तो क्या तुम आज यहां होते ?

अचानक किसी ने कंधे पर हाथ रखा और कहा 'शकील भाई, हर आदमी को यहां से जाना है कोई अमर नहीं है, किसी को आगे तो किसी को पीछे और कम्मो जी तो भरा पूरा परिवार छोड़कर गयी हैं । तीन बेटे हैं, तीन बहुएं हैं और पांच पोते-पोतियां हैं । कंधे पर हाथ रखते ही अतीत के समुद्र में तैर रहा शकील वर्तमान के रेगिस्तान में आ गया । शकील ने सिर उठाकर देखा तो ढाढस बंधाने वाले प्रदीप जी थे । प्रदीप जी लम्बे समय से शकील के दुख-मुसीबत में काम आते रहे हैं । प्रदीप शकील के साथ कई बार पार्टियों में साथ-साथ जाते रहे हैं । प्रदीप खुद भी प्रोडक्शन से जुड़े हैं इसलिए शकील के साथ उनकी मित्रता गहरी रही है । घर के चारों ओर ग़मगीन माहौल है । सब लोगों की आंखें नम हैं और लोग शकील और उसके बहू-बेटों को तसल्ली दे रहे हैं ।

शकील को याद आ रहा था एक-दूसरे के साथी होने के बाद भी कम्मो और उसमें वैचारिक रूप से नहीं बनती थी । इस बात को लेकर शकील हमेशा कम्मो पर खीजता रहता था । दोनों के बीच वैचारिक मतभेद थे । अगर वह पूरब की कहता, तो वह पश्चिम की बात करती थी । इस पर शकील बहुत परेशान हो जाता था । कम्मो तैश में आ जाती, तो शकील अपना सिर नोंचकर रह जाता था । कम्मो हमेशा खुद को भीड़ में शामिल कर लेती थी, यह बात शकील को पसंद नहीं थी । वह कहता, 'तुम मेरी बीवी हो, अपनी अलग पहचान बनाओ, तुम खुद को भीड़ में शामिल मत किया करो । कुछ इस तरह करो कि मुहल्ले की औरतें तुम्हारे पास आएं और तुमसे कुछ पूछें' । यह सुनकर कम्मो कहती, 'मुझ से नहीं होता, हम तो ऐसे ही ठीक हैं' । यह सुनकर शकील तमतमा जाता । उसे कम्मो की मूर्खता और भोलेपन दोनों पर तरस आता था । शकील यह सोचकर तसल्ली कर लेता कि क्या करें ऐसी औरत से पाला पड़ गया है, निभाना तो पड़ेगा ही । आज की पीढ़ी इतना सहन नहीं करती, दोनों में से एक ने तलाक़ दे दिया होता । आज की पीढ़ी में सहनशक्ति और मर्यादा का अभाव है । वैचारिक मतभेद के बावजूद शकील कम्मो की हर इच्छा पूरी करता था । वह कभी-कभी बच्चों से कहता तुम्हारी, मां सीधी औरत है ।

कम्मो बैठकर कभी-कभी ऐसे देखती जैसे कोई मानसिक रोगी हो । न तो उसमें फुर्ती, न अपने मर्द की इच्छा का ख़याल । वह शकील की भावनाओं को नहीं समझ पाती थी । भावुक शकील बातों-बातों में क्या कहना चाह रहा है, वह यह बात समझ ही नहीं पाती थी । और न समझने की कोशिश करती । कई बार आपसी तनाव का कारण भी यही होता था । हां, अगर शकील कुछ काम करने को कह देता तो वह पत्नी की तरह नहीं, एक नौकरानी की तरह कर देती थी । फिर शाम को बताती थी कि उसने कितनी मेहनत से उसको किया था । दरअस्ल वह पत्नी की तरह कम नौकरानी की तरह ज़्यादा रहती थी । इस बात से शकील और ख़फ़ा रहता था । कहता, 'तू घर की मालकिन इस पर पूरी पकड़ बनाकर रख' लेकिन कम्मो मुंह देखा पसंद करती थी । वह कहता, तू पराधीन मत रह ताकि मेरे न रहने पर तुझे कोई परेशानी न हो, लेकिन कम्मो इस कान सुनती उस कान निकाल देती ।

कम्मो शकील की हर बात में साथ देती थी । वह पूरी तरह 'पतिव्रता' औरत थी । यही बात शकील को बहुत भाती थी । शकील के हर काम में इसलिए साथ देती थी कि वह उसे छोड़ना नहीं चाहती थी । उससे अलग रहना नहीं चाहती थी । उससे शकील ने एक दिन मज़ाक़ में कह दिया था, कुछ दिन अपने मायके रह आओ । उसको यह बात बहुत बुरी लगी और रोने लगी । लड़कों से शिकायत की कि 'देखो तुम्हारे बाप मुझे घर से निकालना चाहते हैं' । लड़के कहते 'बाबू तुम भी मम्मी को परेशान करते रहते हो । फिर किसी तरह उसको शांत करते थे ।

शकील के साथ परेशानी यह थी कि वह किसी भी बात को लेकर बैठ जाता था । उसका गुस्सा जल्दी ठंडा नहीं होता था । यही कारण था कि दस-दस दिन तक वह कम्मो से गुस्से में बात नहीं करता था । वह मनाती रहती थी, तब जाकर कई दिन बाद उसका गुस्सा शांत हो पाता था । इस बात से वह खुद भी बहुत दुखी था कि ज़रा-सी बात उसे बुरी लग जाती है । इसलिए वह कम्मो को लेकर डॉ० टी०पी० जिंदल के पास गया । डॉ० जिंदल शकील परिवार के बहुत ख़ैरख़्वाह हैं । शकील ने डॉ० जिंदल से कहा, डॉ० साहब मेरा गुस्सा जल्दी शांत नहीं हो पाता है क्या करूं' । इस दौरान डॉ० से दोनों ने एक-दूसरे की शिकायत की । इस पर दोनों को डॉ० ने समझा-बुझाकर घर भेज दिया । घर आकर कम्मो

ने शकील पर एहसान जताया 'देखो मैंने डॉक्टर साहब को तुम्हारी सब बातें नहीं बतायीं अगर मैं बता देती तो तुम्हारा क्या होता'।

'इस बात का मुझे मरते दम तक मलाल रहेगा कि तुमने मुझे कभी मनाया नहीं' कम्मो ने बहुत दुख और शिकायत भरे लहजे से कहा। उसकी आवाज़ में करुणा थी। शकील को इस बात ने आहत कर दिया, मगर वह कहने लगा 'तुम मूर्खता करती ही क्यों हो, ग़लती तुम करती हो तो मैं क्यों मनाऊं ? मैं तभी तो मनाऊं जब मेरी ग़लती हो। शकील ने कहा था 'तुम पढ़ना सीख लो, मेरे लिए इज़्ज़त की बात होगी और तुम्हारा भी नाम होगा। इस पर कम्मो ने कहा था, 'मैं नहीं पढ़ती, अब मुझे पढ़कर क्या करना है। इस पर शकील ने कहा, पढ़ने की कोई उम्र नहीं होती, देखा राजस्थान में एक बूढ़ी दादी अपनी पोती के साथ पढ़ने जाती है। इस बात को लेकर बहुत देर तक बहस चलती रही मगर कम्मो टस से मस नहीं हुई।

चलो भई, तुम्हारी मर्ज़ी, शकील ने हार मान ली। कई बार वह कोई चीज़ सिखाने की कोशिश करता, मगर वह सीखने में दिलचस्पी नहीं लेती। इस पर कई बार शकील झुंझला जाता। कम्मो इसे अपनी बेइज़्ज़ती समझती, मगर वह ख़ून का घूंट पीकर रह जाती। सीखने और कुछ करने की बात पर आए दिन कुछ न कुछ बात होती रहती। ख़ासकर तब जब वह शकील से कुछ काम के लिए कहती तो शकील झट से कहता, इसे तो औरतें ख़ुद ही कर लेती हैं और एक तुम हो जो छोटे-मोटे काम भी तुम मुझसे कराती हो।

इस बात पर कम्मो भड़क जाती, कहती 'तो मैंने कभी कुछ नहीं किया ? वो दिन भूल गये जब लकड़ियां, आटे से भरी परात, चिमटा, फुंकनी, रोटी की डलिया सब सामान लेकर लकड़ी की सीढ़ी पर लेकर छत पर चढ़ती थी और वहां से खाना बनाकर लाती थी। इस काम में कितने चक्कर ऊपर नीचे के लगते थे। जब बच्चे हुए तो गोद में बच्चा और खाना बनाने का सारा सामान लेकर बांस की टूटी सीढ़ी पर चढ़ती उतरती थी। ऐसा वर्षों तक किया। लाइन में लगकर अस्पताल से बच्चों के लिए दवा लाती, अब मुझ से अस्पताल नहीं जाया जाता। अब न तो राशन दफ़्तर जाऊं, न गैस एजेंसी पर। अब नहीं होता, कम्मो ने अपनी बात शिकायती लहज़े में कही। उसकी बात में पहले किये काम का गुमान था। कहने लगी 'घर में बरसात का पानी भर जाता था तो वह पूरी रात निकालती रहती थी। तुम और तुम्हारे बच्चे सोते रहते थे। अब मेरे घुटने में दर्द रहने लगा है और वज़न भी बढ़ गया है।

शकील बार-बार कहता रहता था, देखो घर के पास इतना अच्छा पार्क है इसमें चला-फिरा करो। इस बात की हिदायत कई बार डॉक्टर भी दे चुके थे। लेकिन वह किसी की बात नहीं सुनती थी, यहां तक कि पड़ोस की दुकान से छोटा-मोटा सामान और बच्चों को स्कूल से लाने में भी उलझन महसूस करती थी। कई बार डॉक्टरों ने कहा था इनका टहलना ज़रूरी है, क्योंकि इन्हें डायबिटीज और बी०पी० की भी शिकायत हो गयी है। बी०पी० की वजह से उसे बात-बात पर गुस्सा आने लगा था। शकील ख़ुद तो कभी-कभी गरम हो जाता था, लेकिन लड़कों और बहुओं को कुछ नहीं कहने देता था।

अचानक आवाज़ आई 'चाचा, चलो। क़ब्रिस्तान चलना है।' यह आवाज़ शकील के भतीजे भोले की थी। इस आवाज़ ने उसे फिर ख़यालों की दुनिया से वर्तमान में ला पटका। कार में शकील, छोटा बेटा तनवीर, मझला बेटा अनवार और बड़ा बेटा अबरार बैठा था। भोले कार चला रहा था। क़ब्रिस्तान का रास्ता बहुत दूर नहीं था, फिर भी कार अपनी रफ़्तार से चल रही थी। शकील को याद आ रहा था कि वह स्वभावत: बहुत भावुक और ईगोइस्ट है। पति-पत्नी के बीच झगड़े का एक बहुत बड़ा कारण यह भी होता है।

पहले तो कम्मो कहीं जाती नहीं थी लेकिन जब किसी तरह शकील उसे जाने को तैयार कर लेता था तो साथ चलने के लिए वह शर्त रखती थी कि वह रास्ते में झगड़ा नहीं करेगा। किसी बात को समझाने को कम्मो उलटा समझ लेती थी इसलिए दोनों का मूड ख़राब हो जाता था। वह कभी अकेले मायके नहीं जाती थी। उसे अकेले चलने में घबराहट होती थी कि कहीं रास्ता न भटक जाए। दरअस्ल उसका कॉन्फीडेंस बहुत कमज़ोर था, इसलिए वह कोई भी काम करने से घबराती थी, यहां तक कि ख़रीदारी तक अकेले नहीं करती थी। कहती थी, मेरे लाए सामान में तुम बहुत 'किंतियां' निकालते हो।

यह बात शकील को बहुत बुरी लगती थी कि वह अपने पैरों पर खड़ी नहीं होना चाहती है और न इसकी कोशिश करती है। जब भी कम्मो मायके गयी शकील के

साथ गयी । ससुराल पहुंचने पर कभी शकील क़स्बे में किसी से बात करते रह जाता और कम्मो अपने मायके पहुंच जाती तो वहां कोई यह नहीं पूछता था कि क्या शकील नहीं आए बल्कि यह कहते कि शकील कहां रह गये । सबको पता था कम्मो सिर्फ़ शकील के साथ ही आती है, अकेली नहीं ।

शकील ने नुक़सान होने पर कम्मो को कभी नहीं डांटा । इस बात पर वह भी गर्व करती थी और किसी भी जगह यह कह भी देती थी कि मेरा आदमी बहुत अच्छा है, मुझे कभी नहीं मारा । आमतौर पर मर्द पत्नी को अपनी जायदाद की तरह समझते हैं । समाज में पितृसत्तात्मक व्यवस्था है, इसलिए लोग अपनी पत्नी को पशुओं की तरह मारपीट करने से नहीं चूकते , क्योंकि वह अपने पिता को ऐसा ही करते देखते बड़े हुए हैं । कम्मो बहुत भावुक थी, उसे याद आ रहा है कि जब उसकी शादी हुई थी उसके कुछ दिन बाद नासमझी में शकील ने उसे एक बार मारा था । इसके बाद शकील ऐसा न करने की तौबा कर ली थी । फिर आख़िरी वक़्त में किसी बात पर नाराज़ होकर एक थप्पड़ मार दिया था, इस पर कम्मो बिफर पड़ी । कहने लगी, तुमने मुझे कभी नहीं मारा आज हाथ उठा दिया, इसलिए मैं आहत हूं । जो लोग मारपीट करते रहते हैं, उन औरतों की आदत होती है मुझे नहीं । इसके बाद शकील ने अपनी ग़लती मानी और कहा कि उसने जो कुछ किया उसका उसे बहुत अफ़सोस है ।

दोनों के बीच विचारों में तालमेल के अभाव को लेकर तनाव हो जाता था । बोलचाल बंद होने पर भी वह देखभाल में कोई कमी नहीं छोड़ती थी । धमकी देती रहती, कल से तुम्हारा कोई काम नहीं करूंगी, लेकिन वह ऐसा करती नहीं थी । रात को दो बजे आता तो वह जगती मिलती । दफ़्तर जाने से पहले लंच बॉक्स तैयार कर देती । अगर सब्ज़ी नहीं होती किसी से कहकर छोले मंगाकर रख देती ।

'तुम मूर्ख हो, जानवर हो, पशु हो, तुममें और पशु में कुछ तो अंतर होना चाहिए । पशु को भी कुछ ज्ञान होता है, तुम्हें इतना भी नहीं । तुम अन्न खाती हो कि नहीं तुम्हें कुछ तो अक़्ल होनी चाहिए । तुम्हें ऐसा नहीं करना चाहिए । कब क्या बात करनी है, इस बात का तो ख़याल रखना था । तुम कभी समझने की कोशिश नहीं करती । तुम रोने धोने वाले सीरियल देखने में ही उलझी रहती हो । कोई ऐसा कार्यक्रम नहीं देखती जिससे कुछ समझ बढ़े ।' जब कभी कोई बात हो जाती थी, तब शकील ग़ुस्से में लाल-पीला होकर यही ताना मारता था । वह चुप सुनती रहती । जब कभी बर्दाश्त नहीं होता तो कहती 'जब मैं मर जाऊंगी, तो याद कर-करके रोओगे ।'

जब रास्ते में चल रहे होते तो शकील उसे बताता चलता कि देखो यह आई॰टी॰ओ॰ है, यह अक्षरधाम मंदिर है, यह लाजपत नगर है, यहां फ़लां जगह है यह फ़लां जगह है । अब जब कभी मैं पूछूं, तो बता दोगी कि यह कौन सी जगह है ? तो वह कहती नहीं 'नहीं भैया, मुझे कुछ मत बताओ मैं कुछ नहीं बता पाऊंगी' । इस पर शकील चुटकी लेता, नहीं भई तुम्हें बताना ही होगा । शकील जब कोई काम करता तो उसे पास बैठा लेता कि देखो और सीखो, लेकिन वह सीखने के नाम पर बिदक जाती । उसे सीखने से चिढ़ थी । कहती 'भैया मुझे नहीं आता, तुम अपने आप करो' । दरअस्ल उसे ऊपर भरोसा नहीं था । उसे लगता था अगर काम नहीं हुआ, तो उसकी बेइज़्ज़ती हो जाएगी ।

शकील परेशान हो जाता, तो कहता 'मुझे दो साल सुकून से रह लेने दो मैं घर छोड़कर चला जाऊंगा । इस पर कम्मो कहती तुम क्यों मैं ही चली जाऊंगी । तुम तो चाहते ही हो कि मैं चली जाऊं । शकील को लगता था कि इस औरत के साथ जीवन बिताना कितना कठिन है । तब उसे इस बात का एहसास नहीं था कि उसके न रहने पर उसकी याद पल-पल सताएगी । घर में घुसा नहीं जाएगा । घर में कोई इन्तिज़ार करने वाला नहीं होगा । दरवाज़े पर ताला लगा होगा, या फिर किसी को आवाज़ देकर दरवाज़ा खुलवाना होगा । तब लगता था कि जीवन बहुत आसानी से कट जाएगा । उस समय यह सोचा भी नहीं था कि इतनी कम उम्र में वह साथ छोड़कर चली जाएगी । ऐसा भी नहीं लगा कि जिस औरत के कारण वह आए दिन तनाव में आ जाता है, उसकी इतनी याद सताएगी कि हर समय आंसू डबडबाते रहेंगे । तो क्या ये औरत मरकर भी चैन से नहीं रहने देगी ।

वह ग़ुस्से में होती तो कहती 'आज मैं ख़राब हो गयी, इतने वर्षों से साथ रहे तब मुझ में कोई कमी दिखायी नहीं दी अब तुम्हें मुझमें कमी दिखायी दे रही हैं । आज तुम बड़े आदमी हो गये हो, तो तुम्हें नयी-नयी बातें सूझ रही हैं । तुम भूल गये कि मैंने तुम्हारी हर इच्छा पूरी की । मैंने तुम्हारी

हर जगह इज़्ज़त बचायी है । अब मैं ख़राब हो गयी । अगर मैं ख़राब थी तो मुझसे शादी क्यों की ।' इतनी सब बाते वह तब कहती जब उसका सब्र जवाब दे जाता । शकील कहता, 'तब जीवन में इतने झंझावत थे कि विचारधारा के बारे में सोचने का मौक़ा ही नहीं मिला । अब बच्चे बड़े हो गये हैं, इसलिए ज़िन्दगी में कुछ सोचने का वक़्त मिला । ज़िन्दगी की भागदौड़ में पेट और बच्चे पालने में लगा रहा । अब तो कम से कम सुख से जीवन जी लें । जीवन के उत्तरार्ध में ही समान विचारधारा की ज़रूरत होती है ताकि जीवन हंसी-ख़ुशी से कट जाए वरना तो विचारधारा के टकराव में बुढ़ापे में जीवन-नरक हो जाता है । कम्मो इस बात से इत्तिफ़ाक़ तो रखती थी लेकिन वह 'जैसा चल रहा है वैसा चलने दो' की सोच रखती थी ।

बड़ा बेटा अबरार उसे किसी से कोई मतलब नहीं । उसे घर में झगड़ा करने से ही फ़ुर्सत नहीं होती जो किसी काम की सोचे । इस बात को लेकर कम्मो और शकील दुखी रहते थे कि इसका क्या होगा, कब सुधरेगा । सुधरेगा भी कि नहीं, लेकिन उसकी बीवी शबाना जितनी सुंदर है, उतनी ही सुशील और स्वाभिमानी भी है ।

दूसरा बेटा अनवार बेहद भावुक है और पिता के बेहद क़रीब है । तीसरा बेटा तनवीर का मां से बहुत लगाव है । कम्मो के जाने के बाद अब अनवार और तनवीर पिता से गहरे जुड़े हैं । दोनों बेटे उन्हें ज़िंदा रखने में मदद कर रहे हैं । वे शकील की ऐसे देखभाल कर रहे हैं जैसे पिता अपने बच्चे की करता है, लेकिन शकील को कम्मो की याद दिन-रात सताती है क्योंकि विचारों की असमानता के बावजूद वह उस औरत को बहुत प्यार करता था । इसलिए भुला नहीं पा रहा ।

चाचा क़ब्रिस्तान आ गया । भोले ने आवाज़ दी । दोनों बेटे अनवार, तनवीर ने उन्हें गाड़ी से उतारा और क़ब्र तक ले गये । क़ब्र पर पहुंचते ही शकील की हिलकी भर गयी औरत की याद में आंसू टप-टप गिरने लगे । उसे बस इतना ही अफ़सोस है कि वह कम्मो के लिए कुछ कर नहीं पाया । इलाज नहीं करा पाया । कुल 12 मिनट में ही खेल ख़त्म हो गया । तीन मिनट में कम्मो को लेकर अस्पताल पहुंच गया था । जब तक डॉक्टरों ने इलाज शुरू किया, तब तक वह दुनिया छोड़ चुकी थी ।

अपने घर को

इस्लाम के प्रकाश से रोशन कीजिए

स्वयं पढ़िए, अपने प्रियजनों, संबंधियों और अन्य लोगों को भी पढ़ाइए

हिन्दी भाषियों की मासिक पत्रिका

कान्ति

www.kanti.in

ज़रतआवन सालाना : Rs. 220 /-

लाइफ़ ममबरशप : Rs. 5.000 /-

दावत

सहरोज़ा

दअवत

नई दिल्ली

www.dawatonline.com

ज़रतआवन सालाना : Rs. 600/-

लाइफ़ ममबरशप : Rs. 10,000/-

कान्ति

स्वस्थ चेतना का वाहक हिन्दी साप्ताहिक अख़बार

ज़रतआवन सालाना : Rs. 250/-

लाइफ़ ममबरशप : Rs. 5,000/-

ज़िन्दगी-ए-नव

माहनामा

ज़िन्दगी-ए-नव

नई दिल्ली

ज़रतआवन सालाना

अन्दरून मुल्क

Rs. 220 /=

बैरून मुल्क

30 अमरीकी डालर

लाइफ़ ममबरशप

Rs. 5,000 /-

www.zindgienau.com

मांगे जाने पर नमूने की प्रति निशुल्क भेजी जाएगी।

MANAGER, DAWAT TRUST,
D-314, DAWAT NAGAR, ABUL FAZL ENCLAVE,
JAMIA NAGAR, NEW DELHI-110025,
TEL.: Dawat: 09818799113, Kanti: 09818799223,
Fax: 011-26958816
Email: managerdawat@gmail.com

ज़रूरत है एक निर्णायक सामाजिक जागरण की

● बाबूलाल नागा

देश के एक और पाखंडी बाबा के पाप का घड़ा फूट पड़ा । आध्यात्मिक गुरु आसाराम बापू पर एक नाबालिग़ लड़की के साथ यौन उत्पीड़न में पकड़ा गया । आसाराम पर आरोप है कि उन्होंने 15 अगस्त को जोधपुर के मणाई आश्रम में एक नाबालिग़ लड़की को बंधक बनाकर ग़लत काम किया । पकड़े जाने के डर से इधर-उधर भागते रहे लेकिन पुलिस ने आसाराम को इंदौर में गिरफ़्तार कर लिया था ।

सवाल एक आसाराम का नहीं है बल्कि उन सभी बाबाओं का है जो धर्म के नाम पर गोरखधंधा कर रहे हैं । देश में आसाराम जैसे कई पाखंडी बाबाओं और धर्मगुरुओं की बाढ़ आयी हुई है । जो जितना बड़ा साधु संत या बाबा बनकर उभरता है, थोड़े दिनों बाद उसकी काली करतूतों का उतना ही लंबा-चौड़ा पिटारा खुलकर सामने आ जाता है । इनके पास करोड़ों की संपत्ति देश-विदेश में बन जाती है । राम, कृष्ण का जाप करके भक्ति का पाठ पढ़ाने वाले ये ढोंगी बाबा लोगों को उल्लू बनाने से बाज़ नहीं आते । कहते हैं ईश्वर हमारे काफ़ी क़रीब है । हम दिन-रात ईश्वर से साक्षात्कार करते हैं । हम साक्षात् ईश्वर के दर्शन करते हैं । सोचने वाली बात है कि जो बाबा अपनी ही भलाई में लगा हुआ है, वह भक्तजनों का भला कैसे कर सकता है ? इन्होंने तो आस्था को एक व्यापार बना लिया है । ये तो वे भारतीय संत हैं जो धर्म की आड़ में करोड़ों की संपत्ति बनाकर मज़े करते हैं । बीते ज़माने में भी बाबा हुआ करते थे । कबीर, गुरुनानक ने कभी भव्य महल नहीं बनाए । न किसी सिंहासन, न किसी लग्ज़री कार की ज़रूरत उन्हें पड़ी । उनका एक ही काम था लोगों को ज्ञान देना लेकिन आज के इन धूर्त बाबाओं के क्या कहने । इनको बैठने के लिए भव्य सिंहासन चाहिए । घूमने के लिए लंबी गाड़ी चाहिए ।

इन्होंने अपने आश्रम बना रखे हैं और उन्हीं आश्रमों में ग़लत काम करने से बाज़ नहीं आते । ये बाबा लोग ख़ुद मोहमाया में लिपटे हुए हैं और अपने भक्तजनों को शिक्षा दे रहे हैं कि मोहमाया से दूर रहो । इसके जाल में मत फंसो । सेक्स से दूर रहने की सलाह देने वाले आज स्वयं ही सेक्स स्कैंडल में पकड़े जा रहे हैं । आसाराम प्रकरण ढोंगी बाबाओं की अंतिम कड़ी नहीं है । देश के लगभग हर गांव क़स्बे में आये दिन ऐसे पाखंडी बाबाओं की पोल खुलती रहती है । ऐसे चरित्रहीन बाबाओं का पर्दाफ़ाश होता रहता है । स्वामी नित्यानंद एक तमिल अभिनेत्री के साथ आपत्तिजनक हालत में पकड़े जाते हैं तो अपने आपको इच्छाधारी बाबा कहने वाले स्वामी भीमानंद सेक्स रैकट चलाते हुए । कृपालु महाराज के यौनशोषण से जुड़े क़िस्से सुर्ख़ियों में रहे तो समोसे, पकौड़ी और रसगुल्ले से इलाज करने वाले निर्मल बाबा का भी पर्दाफ़ाश होते देर न लगी ।

हैरानी की बात यह है कि इतनी जागरूकता होने के बाद भी ढोंगियों और दुष्चरित्र बाबाओं का चलन घटने के बजाय बढ़ता जा रहा है । इसका क्या अर्थ है ? दरअस्ल हमारा देश बेहद धर्मप्रिय है । यहां पर श्रद्धा के नाम पर लोग कुछ भी करने को तैयार हो जाते हैं । धार्मिकता का नशा इन भक्तों पर सिर चढ़कर बोलता है । जनता आंख मूंद कर विश्वास कर लेती है । भक्त लोग तुरंत श्रद्धा में बलिहारी हो जाते हैं । बाबाओं के संग झूमने लगते हैं । उनको सर आंखों पर बैठा लेते हैं । इसकी वजह से ऐसे पापी लोग जनता के बीच तेज़ी से स्थापित हो रहे हैं । दूसरी तरफ़ ऐसे बाबाओं की सांठगांठ राजनीतिक पार्टियों, नेताओं, अफ़सरों, उद्योगपतियों व समाजसेवियों से भी होती है । इस सांठगांठ का फ़ायदा ये बाबा लोग अक्सर उठाते रहते हैं । इसलिए इनके विरुद्ध कभी कोई कार्रवाई नहीं होती । आज आसाराम की करतूतें सामने आयी हैं । कल इसी तरह और धूर्त बाबाओं की करतूतें सामने आएंगी । जनता का गुस्सा फूटेगा, लोगों की आस्था टूटेगी, पुलिस की पकड़ में वे आएंगे, उन्हें सज़ा भी मिल जाएगी लेकिन क्या गारंटी है कि ये सब आइंदा नहीं होगा । केवल ऐसे धूर्त बाबाओं पर ही कार्रवाई क्यों ? उन सब को भी कड़ी सज़ा मिलनी चाहिए जो इन ढोंगी बाबाओं के संग खड़े रहते हैं । उनकी काली करतूतों को जानते हुए भी उनके आश्रमों के लिए ज़मीनें देते हैं । श्रद्धा के नाम पर जो बढ़-चढ़कर चढ़ावा देते हैं । बेशक अब धर्म के नाम पर देह व्यापार की आड़ में अपराध करने वाले ऐसे बाबाओं के विरुद्ध कड़ी कार्रवाई की ज़रूरत है। ज़रूरत है एक निर्णायक सामाजिक जागरण की । (विफ़ी)

मकतबा अलफहीम मऊ

की नई हिंदी इस्लामी पुस्तकें

मुख्तसर तफसीर अहसनुल बयान	450/=
बुलूगुल मराम	275/=
नबूवत की किरनें मौ० सफीउरहमान मो०	275/=
हुकूकुलएबाद सलाहुददीन यूसुफ	55/=
हुकूकुल औलाद सलाहुददीन यूसुफ	50/=
हुकूकुज़्ज़ौजैन सलाहुददीन यूसुफ	32/=
सैय्यदना अबू बक्र सिद्दीक रज़ि:	25/=
सैय्यदना उमर फारूक रज़ि:	25/=
सैय्यदना उसमान गनी रज़ि:	25/=
सैय्यदना अली मुर्तज़ा रज़ि:	25/=
इस्लाम पर ४० एतेराज़ात और उसके जवाबात	80/=
कुरआन और विज्ञान डा. ज़ाकिर नाइक	50/=
इस्लाम और हिन्दू धर्म में समानताएं //	50/=
क्या कुरआन ईश्वरीय ग्रन्थ है //	60/=
विशेष धर्मों में ईश्वर की कल्पना //	28/=
इस्लाम में औरतों के अधिकार //	60/=
इस्लाम आतंकवाद या भाईचारा //	50/=
मांसाहार उचित या अनुचित //	60/=
जन्नत का बयान इकबाल कीलानी	120/=
जहन्नम का बयान इकबाल कीलानी	130/=
नमाज़ के मसाइल इकबाल कीलानी	120/=
तौहीद के मसाइल इकबाल कीलानी	120/=
सुन्नत के मसाइल इकबाल कीलानी	80/=
तौहीद के आंसू	65/=
हमारी दावत किताब व सून्नत	40/=
चेहरे का पर्दा मुस्तहब या वाजिब //	20/=
मुहम्मद(स०) हिन्दू किताबों में	65/=
तावीज़ गंडा की हक़ीक़त	25/=
और मैं मर गया	32/=
मसला उर्स और ग्यारहवीं	25/=
इस्लाम और इमान के अरकान	80/=
किताबुत्तौहीद	75/=
कुरआन की शीतल छाया	85/=
अल्लाह और उसके रसूल की पहचान	50/=
जादू का इलाज	85/=
कलमा-ए-तौहीद अर्थ, महत्तव, फज़ीलत	28/=
इस्लाम एक नज़र में	50/=
इस्लाम खालिस क्या है	22/=
इस्लामी अक़ीदा	22/=
मुसलमान का अक़ीदा(पाकेट)	12/=
मासूरह दुआएं	30/=
हिसनुल मुसलिम(उच्चारण सहित)	40/=
हिसनुल मुसलिम	35/=
परदा	35/=

आप घर बैठे किताबें VPP डाक द्वारा मँगा सकते हैं। एकाउंट में रक्म ट्रांस्फर करने पर रजिस्टर्ड डाक द्वारा किताबें भेजने की सुविधा है।

MAKTABA AL-FAHEEM

Raihan Market, 1st Floor, Dhobia Imli Road
Sadar Chowk, Maunath Bhanjan - (U.P.) 275101
Ph.: (O) 0547-2222013, Mob. 9236761926, 9889123129, 9336010224
Email:faheembooks@gmail.com

उद्देश्यपूर्ण व्यक्तित्व के धनी डॉ॰ शबनम सुब्हानी

■ डॉ॰ हसन रज़ा

देश की स्वतंत्रता के बाद तहरीके इस्लामी के आरंभिक काल में मौलाना मौदूदी की विचारधारा से प्रभावित होने वाले कुछ नवयुवकों ने एक नयी ज्योति जलायी, जिसको सानवी दर्सगाह रामपुर कहा जाता है । डॉ॰ सैयद अब्दुल बारी-शबनम सुब्हानी भी उन्हीं नवयुवकों में थे । दर्सगाह से निकलने के बाद कुछ ने अनुसंधान का मार्ग अपनाया, कुछ जीवन के सामान्य मार्ग पर चल पड़े, शब्नम सुब्हानी इन दोनों से अलग काव्य, साहित्य, राजनीति और समाज सेवा में लग गये । उनकी कार्यक्षमता कभी धीमी नहीं पड़ी । अगर वे 1857 ई॰ के विद्रोह के बाद के हालात में होते तो सर सैयद, क़ासिम नानौतवी, जमालुद्दीन अफ़ग़ानी और अल्लामा शिब्ली के साथ होते और हाली और अकबर इलाहाबादी की काव्य गोष्ठियों में भी शरीक रहते ।

जो लोग दीन (इस्लाम) की सेवा और भलाई के कामों को खुली दृष्टि से देखते हैं वे किसी वर्ग विशेष, गिरोह, रंग और वंश से बंधे नहीं होते । डॉ॰ अब्दुल बारी ऐसे ही लोगों में से थे । वे पात्र पर नहीं पात्र के भीतर मौजूद सामग्री पर नज़र रखते थे । इसी कारण उनके व्यक्तित्व में नरमी और उदारता पैदा हो गयी थी । वे गद्य और पद्य दोनों के आदमी थे । उनके व्यक्तित्व में भी गद्य की पारदर्शिता और पद्य की अनेकार्थता पैदा हो गयी थी, जिससे विभिन्न रवैयों की अभिव्यक्ति होती थी ।

उनकी किताब, "आज़ाद हिन्दुस्तान और मुस्लिम तंज़ीमें" पढ़ने से पता चलता है कि उनका दृष्टिकोण संगठन के बंधनों में बंधा हुआ और विघटन से पवित्र था । यह कोई साधारण बात नहीं है । विभिन्न मुस्लिम जमाअतों, संगठनों और संस्थाओं से जुड़े कुछ भले लोग भी इस बीमारी का शिकार हो जाते हैं । अब्दुल बारी का व्यक्तित्व इन गंदगियों से पवित्र था । इनकी दूसरी किताब, "मुलाक़ातें" जिसमें मुस्लिम समाज के अग्रणी व्यक्तियों के इंटरव्यू और जीवनियां हैं । इससे भी अनुमान लगाया जा सकता है कि उनका संबंध किसी वर्ग विशेष से जुड़े लोगों से नहीं था, बल्कि उन गुणों और सक्रियताओं से था जो व्यक्तियों को बड़ा बनाती हैं । विभिन्न कार्यक्षेत्रों के अग्रणी व्यक्तियों को अपनी श्रद्धा का केन्द्र बनाये रखने का मतलब है कि शब्नम सुब्हानी की दृष्टि व्यक्ति पर नहीं गुणों पर भी और यह बात बहुत कम लोगों में पायी जाती है । इसके लिए पवित्रीकरण की भट्टी में अपने व्यक्तित्व की बुराइयों को जलाना पड़ता है ।

सामान्य रूप से देखा गया है कि कुछ लोग जब किसी मार्ग पर चल पड़ते हैं तो आगे-पीछे या दाहिने बाएं नहीं देखते । ऐसे कुछ लोग कई बड़े काम भी कर जाते हैं । लेकिन कुछ लोग जीवन के मैदान में दाहिने बाएं की पगडंडियों पर चलकर अनुभव प्राप्त करने की योग्यता रखते हैं । शब्नम सुब्हानी के भीतर भी अनुभव प्राप्त करने की योग्यता मौजूद थी । वे वास्तव में दिल की पुकार पर क़दम उठाने में नहीं झिझकते थे ।

इस्लामी तहरीक से जुड़ने के बाद जो लोग भी इससे अलग हुए उन्होंने अपने और तहरीक के बीच में एक दीवार खड़ी कर ली, लेकिन शब्नम सुब्हानी ने ऐसा नहीं किया । मरहूम इस्लामी तहरीक के साहित्यिक मोर्चे आरंभ से ही शरीक रहे और पहले दिन से ही अदब इस्लामी के नवरत्न में समझे जाते थे । आज इस्लामी अदब के मोर्चे पर जिस पहलू से भी विचार किया जाए तो उसने डॉ॰ सैयद अब्दुल बारी का नाम ज़रूर आएगा । बल्कि सच्ची बात तो यह है कि वे भारत में इस्लामी साहित्य की पहचान बन चुके थे ।

जहां तक उनकी शायरी का सवाल है तो यह सच है कि वे कोई बड़े शायर नहीं थे, लेकिन उनकी शायरी का महत्व यह है कि वह अपने काल में इस्लामी भावनाओं का दर्पण है । शब्नम सुब्हानी की शायरी में 'मीर' या 'इक़बाल'

वाली बात तो नहीं है, लेकिन इसमें उद्देश्यपूर्णता की एक धीमी-धीमी आंच है, जिसमें कलात्मक रचाव के साथ-साथ इस्लामी सभ्यता की सुगंध, भविष्य का मार्गदर्शन, नये सपने और नयी आवाज़ें हैं । यही उनका व्यक्तित्व था, जो उनकी शायरी और उनकी गद्य रचनाओं में नज़र आता है ।

सब जानते हैं कि बड़े व्यक्तियों के दो बड़े अवगुण हैं । एक यह कि वह स्वयं से विजयी होकर अहंकार का शिकार हो जाए और दूसरा यह कि वह अपने स्वयं का प्रियपात्र होकर रह जाए । ऐसा आदमी दूर से अच्छा लगता है, वह काग़ज़ का फूल होता है निकट जाइए तो उसमें कोई सुगंध नहीं होती । दूसरी ओर अहंकारी मनुष्य किसी को लाभ नहीं पहुंचाता बल्कि वह कांटेदार शाखा के समान हो जाता है । शब्नम सुब्हानी इन दोनों त्रुटियों से बहुत दूर थे । उनके निकट जाइए तो उनके व्यक्तित्व से दूसरा खुश होता था और दूर से उनका व्यक्तित्व शिष्टता और शालीनता का उदाहरण था ।

मैंने अक्सर उनको जमाअत इस्लामी हिन्द के मर्कज़ में आते-जाते देखा । मार्ग में कोई मिल जाता तो ठहर जाते, हाल-चाल पूछते । आत्मिक अपनत्व का प्रदर्शन करते । चलने-फिरने, उठने-बैठने, बातचीत करने में कहीं भी कोई अकड़ कोई अहंकार या घमंड लेशमात्र भी नहीं था । जहां चाहिए उनको रोककर बातचीत कर लीजिए । कहीं ले जाना हो तो स्कूटर पर पीछे बिठाकर ले जाइए । तबियत ख़राब थी तो तब भी मना नहीं करते काम के लिए तैयार रहते थे और बड़े आशावान रहते थे । पिछले दिनों दुबई के मुशायरे में मेरी मुलाक़ात हुई तो बड़े खिले-खिले नज़र आये जबकि उनकी तबियत ठीक नहीं थी । इस पर उनकी हिम्मत देखिए कि दुबई वालों को सुझाव दे रहे हैं और ज़रूरत पड़ने पर दोबारा दुबई आने का विश्वास दिला रहे हैं ।

उन्होंने अपने व्यक्तित्व का निर्माण ईशभक्ति की भावना से किया और शालीनता को हमेशा अपनाए रखा, बल्कि उन्होंने अपनी रचनाओं में शालीनता को एक अच्छे कलाकार के व्यक्तित्व का अभिन्न अंग बताया । उन्होंने कहा कि शालीनता अहंकार से रोकने के लिए लगाम का काम करता है और व्यक्तित्व में संतुलन बनाए रखता है ।

मरहूम शब्नम सुब्हानी के लेखों की समीक्षाएं होती रहेंगी । उन्होंने दो चार नहीं दर्जनों किताबों की रचना की है । विभिन्न पत्रिकाओं का सम्पादन किया है, जिनकी व्याख्या भी होगी । उनके विचारों से सहमति और असहमति भी व्यक्त की जाएंगी । लेकिन इस बात से कोई असहमति नहीं जता सकता कि वे पूरा जीवन तन-मन-धन, पूरी एकाग्रता के साथ साहित्य, शिक्षा-प्रशिक्षण और समाज सेवा के कामों में सक्रिय रहे ।

हक़ से नफ़रत न करना मेरे दोस्तो

अब कहें और क्या हम तुम्हें दोस्तो,
हक़ से नफ़रत न करना मेरे दोस्तो

हक़ व बातिल अयां इस क़दर दोस्तो,
रात-दिन में हैं जैसे फ़रक़ दोस्तो ।
हक़ से बनती है दुनिया और आख़िरत,
और बातिल से दुनिया कभी दोस्तो ।

सारे वादे ख़ुदा के सही के सही,
क्योंकि ख़ालिक़ व मालिक वही दोस्तो ।
आख़िरी सांस तक दुनिया साथी रहे,
आख़िरत तो सदा के लिए दोस्तो ।

ज़िम्मेदारी को अपने जो समझा नहीं,
फ़र्ज़ होगा कैसे अदा दोस्तो ।
दिल लगाकर ज़हर खा रहे हैं सभी,
ज़िन्दगी उनको कैसे मिले दोस्तो ।

रात-दिन बो रहे बीज कांटो के जब,
आम खाने को कैसे मिले दोस्तो ।
अपने सजदों को व्यवहार में ढालिए,
अपनी ख़ाहिश पे कुछ न फले दोस्तो ।

रब की सीमा न तोड़ें कभी भूलकर,
मुंह दिखाने के क़ाबिल रहें दोस्तो ।
बात हक़ की सदा से ही कड़वी रही,
सुनके तुमको बुरा न लगे दोस्तो ।

देखो 'बाक़र' को कितना मज़ा आ रहा,
सब ख़ुदा के हवाले किया दोस्तो ।

शेख़ बाक़र अली
मीरा रोड (पूर्व), मुम्बई

हिन्दी कविता की प्रीतभरी सुवास

पुस्तक का नाम	:	प्रीत मंजरी (काव्य-संग्रह)
लेखिका का नाम	:	डॉ॰ प्रीत अरोड़ा
प्रकाशक	:	देवभूमि प्रकाशन, नैनीताल
समीक्षक	:	**गिरीश पंकज**
पुस्तक मूल्य	:	90 रुपये

इधर लिखी जा रही अधिकांश हिन्दी कविता में एक ख़ास क़िस्म की जड़ता है । नयी कविता का ताना-बाना ऐसा है कि नया पाठक कविता की बगिया में जाकर भी वहां के फूलों से जुड़ नहीं पाता । न सौंदर्य, न गंध और न सौंदर्य । लगता है काग़ज़ के सुमन खिले हुए हैं । कविता की मंजरी ही नक़ली है । ऐसा इसलिए है कि अब अधिकांश कविताएं दिल से नहीं, दिमाग़ से लिखी जा रही हैं, जबकि कविता कोमल अनुभूतियों की उपज होती है । जब तक अंतस में प्रीत न जगे, कविता संभव नहीं हो पाती । एक सार्थक कविता आत्मदर्पण भी होती है । वह चंद शब्दों का असंगत कोलाज भर नहीं होती, वह जीवन का जीवंत चित्र होती है । और आत्मा का अनगाया राग भी होती है । मन की बातों को अनुगुंजन है कविता । जबकि समकालीन कविताओं में कविता के अनिवार्य तत्व लगभग अनुपस्थित हैं । यही कारण है ये कविताएं पाठकों से दूर हैं । कविता की प्यास पुरानी कविताओं के पाठ से ही बुझ पाती है लेकिन ऐसा नहीं है कि सारी कवि-बिरादरी एक ढर्रे पर चल रही है । कुछ लोग ऐसे भी हैं, जो कविता को शिल्प के स्तर पर और भाव के स्तर पर भी जीने की कोशिश कर रहे हैं । इनके यहां कविता बिल्कुल कविता की तरह ही उपस्थित होती है । इन लोगों में डॉ॰ प्रीत अरोड़ा सुपरिचित नाम बनता जा रहा है ।

इस युवा कवयित्री ने अपनी कविता-यात्रा को एक प्रखर संभावना में तब्दील कर दिया है । प्रीत की कविताई में आडंबर नहीं है । सादगी है । और वह दिल से अपनी बात कहती है । चाहे वह प्रकृति को देखे, या जीवन के विविध आयामों को । प्रीत की हर कविता प्रभावकारी है । सभी कविताएं अर्थवान हैं । इन्हें पाठक हृदयंगम कर लेगा । अधिकांश कविताओं को मैं फेसबुक या विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में देखता-पढ़ता रहा हूं । कविता की सफलता इसी में है कि वह पढ़ते साथ ही भाव लोक से अर्थलोक की यात्रा करा दे । यह समझना न पड़े कि कविता के गूढ़ार्थ क्या हैं । कविता अपने अर्थ को नदी के जल की तरह पारदर्शी बनाए । एक फूल की तरह सुवास को प्राण तक पहुंचा दे । कविता के अर्थलोक तक पहुंचने के लिए पाठक अतिरिक्ति ज्ञान की कुंजी का सहारा न ले । प्रीत ने कविता की सही रीत से अपना रिश्ता जोड़ा है । उसने कविता को सरल किया । अपनी गहनतम अनुभूतियों को सरलतम अभिव्यक्ति दी है ।

प्रीत की कविताओं की मंजरी मेरे सामने हैं । हर कविता की पंखुड़ी चटक रंग से भरी है । यह मंजरी अपनी सुवास बिखेर रही है । आकर्षित कर रही है । वह जीवंत है। यहां भावनाएं नाना रूपों में सामने आती हैं । कभी कविता नव चेतना जगाती है, तो कभी संस्कारों से रिश्ता जोड़ती है । बेटियों की महत्ता पर विमर्श करती है तो मां के अवदान पर भी अभिभूत होकर उसका गुणगान करती है । कविता नन्हीं चिड़िया से भी बतियाती है तो प्रकृति का विहंगावलोकन भी करती है । प्रीत की कविता में नैतिक मूल्यों की बहुलता है । वह संस्कारों पर ज़ोर देती है । यहां प्रेम भी है मगर उसकी अपनी नैतिकता है । प्रीत की स्त्री भी मुक्तिकामी है लेकिन संस्कारों के साथ । यह बड़ी बात है । क्योंकि इधर की अनेक कवयित्रियां पूरी तरह से मुक्त होने पर आमादा हैं । वे देह से मुक्त हो रही हैं, परिवार से मुक्त हो रही हैं । मुक्ति की ग़लत परिभाषा को दिमाग़ में बिठा कर कविताएं कर रही हैं । जबकि प्रीत की कविताएं दिशा देती हैं और स्त्री को उसकी अस्मिता से प्रतिबद्ध रखती हैं । संस्कारों की जीत कविता में स्त्री का दर्द भी है और आगे बढ़ाने की ललक भी । लेकिन अंततः जीतते हैं संस्कार । यही संस्कार कविता को बड़ा बनाते हैं, कवयित्री को भी भीड़ से अलग कर देते हैं । महान कवयित्री महादेवी वर्मा का स्त्री विमर्श भी कुछ इसी तरह का है । महादेवी भी मुक्ति के लिए बेचैन हैं, मगर वे संस्कारों को नहीं

छोड़ती । वह भारतीयता को नकारती नहीं । वे श्रेष्ठ परंपराओं से बंध कर त्याग भी करती है । वे नीर भरी दुख की बदली भी है, मगर नयी रागिनी भी हैं । प्रीत भी इन्हीं स्थितियों का चित्र खींचती है कि–

"मन कहता उसका, बग़ावत करने को
तभी गूंजने लगती कानों में मां की शिक्षा
और संस्कार देने लगते दुहाई
ठंडी आह भर कर
पुनः कोशिश करती
लड़ती अपने विचारों से
आख़िर
जीत जाते संस्कार और हार जाती वो
आदर्श समझाते और समझ जाती वो ।"

कविता में इस तरह मूल्यवत्ता का आग्रह अद्‌भुत है । इधर की अधिकतर कवियित्रियों में यह बोध ग़ायब है । अब कितनी कवयित्रियां नैतिकता की बातें करती हैं ? नैतिकता एक हास्यस्पद शब्द बनकर रह गया है । यह स्त्री विमर्श से लगभग अनुपस्थित होता जा रहा है । क्योंकि बहुत-सी औरतें नैतिकता को भी बंधन मानती हैं । जबकि प्रीत की कविता में नैतिकता केन्द्रीय स्वर बनकर उभरता है । प्रीत घर की बात करती है । नवचेतना भी जगाती हैं मगर उसके पीछे लोक मंगल है । सुधर जाने की वकालत है । कविता घर को जोड़ने के पक्ष में खड़ी है जबकि अब घर से मोहभंग होने की कविताएं भी रची जा रही है । कुल मिलाकर इस वक़्त जबकि कवयित्रियां क्रांति के नाम पर सब कुछ छिन्न-भिन्न करने पर आमादा नज़र आती है, प्रीत की कविताएं जोड़ने का मंत्र देती हैं । सही कविता जोड़ती है तोड़ती नहीं । वह क्रांति करती है लेकिन सृजन का वातावरण बनाकर । लोगों की चालाकियों को कवयित्री बख़ूबी समझती है इसलिए वह आगाह करती है कि–

जरा संभल के
रोनी सूरत बनाकर
लोग अक्सर हमदर्दी बटोर लेते हैं
भोली सूरत बनाकर
लोग अक्सर दूसरों को लूट लेते हैं
हुस्न के जलवे दिखाकर
लोग अक्सर बरबाद कर देते हैं
यारों, ज़रा संभल के रहना इन ज़माने वालों से
लोग अक्सर निर्दोष को बलि का बकरा बना देते हैं ।"

मतलब यह कि प्रीत की कविताएं सबको संदेश देती है ताकि बेहतर दुनिया रची जा सके । घर को मां को, जीवन मूल्यों को प्रीत ने अधिक महत्व दिया है । लेकिन ऐसा भी नहीं है कि प्रीत निरीह स्त्री के पक्ष में है । वह स्त्री की मज़बूती का आग्रह करती है और मुहिम चलाने पर भी ज़ोर देती है । वह दो टूक कहती है कि बेटी हूं पर कमज़ोर नहीं/ मां-बाप का अभिमान हूं मैं/नये संकल्प और नयी सोच से, देश का मान बढ़ाऊंगी/होंगें सबके सपने पूरे/ये विश्वास दिलाऊंगी/अत्याचारों से लड़कर/जीत का बिगुल बजाऊंगी/ सत्कर्म, सद्‌भावना से/आगे बढ़ती जाऊंगी/करना होगा सबका उत्थान, प्रीत-मंजरी के संग, ऐसी मुहिम चलाऊंगी ।"

मुझे उम्मीद है कि 'प्रीत' की यह काव्य-'मंजरी' लोगों को पसन्द आएगी । इन ताज़ा युवा कविताओं में परम्परा के दर्शन हैं और आधुनिकता का संस्पर्श भी । बग़ावती तेवर भी हैं तो संस्कारों के प्रति प्रबल आग्रह भी ।

इस संग्रह की तमाम कविताओं पर सुदीर्घ विमर्श हो सकता है लेकिन अपनी बात को यहीं पर विराम दे रहा हूं, इस विश्वास के साथ कि समकालीन कविता की गुमराह दुनिया में प्रीत की कविताएं रास्ता सुझाएंगी और मरती हुई नयी कविता को प्राणवान बनाने का काम करेंगी । यह अतिरंजित तारीफ़ नहीं है, दिल से निकली भावनाएं है क्योंकि इस तरह की सरल, तरल और नैतिक कविताएं दुर्लभ होती जा रही है ।

हिन्दी भाषा में दो महत्वपूर्ण पुस्तकें

1. क़ुरआन का पैग़ाम इन्सानियत के नाम

इसमें लगभग 50 विषयों पर क़ुरआन की आयतें एक जगह एकत्र करके उनका भाष्य सरल शब्दों में दिया गया है ।

पृष्ठ-192, मूल्य 60 रुपये ।

2. हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) की बातें

इसमें लगभग 40 विषयों पर हदीसें, उनका भाष्य तथा संक्षिप्त जीवन परिचय प्रस्तुत किया गया है ।

पृष्ठ-160, मूल्य 40 रुपये

इच्छुक भाई निम्न पते पर केवल 30 रुपये और 25 रुपये में (प्रकाशन व्यय पर) प्राप्त कर सकते हैं ।

पता : इं॰ जावेद इक़बाल, डी-82, सफ़ीना, सर्वोदय नगर, लखनऊ-226016, मोबाइल : 09889352652

हमारी कुछ महत्वपूर्ण पुस्तकें

इस्लाम एक सामान्य परिचय	–शैख़ अली तंतावी	90.00
इस्लाम एक स्वयंसिद्ध ईश्वरीय जीवन व्यवस्था	–राजेन्द्र नारायण लाल	25.00
प्यारे नबी की पाक ज़िन्दगी	–एजाज़ुल हक़ क़ुद्दूसी	30.00
इतिहास के साथ यह अन्याय	–बी॰ एन॰ पाण्डे	7.00
मेरे दावती तजुर्बात (प्रथम)	–नसीम ग़ाज़ी फ़लाही	25.00
ग़लत फ़हमियों का निवारण	–डॉ॰ ज़ाकिर नाइक	25.00
क़ुरआन और हम मुसलमान	–नसीम ग़ाज़ी फ़लाही	15.00
क़ुरआन का पैग़ाम	–ख़ुर्रम मुराद	10.00
क़ुरआन पर अनुचित आक्षेप	–नसीम ग़ाज़ी फ़लाही	15.00
हमें ख़ुदा कैसे मिला?	–अब्दुल ग़नी फ़ारूक़	100.00
इस्लाम आतंक या आदर्श?	–स्वामी लक्ष्मी शंकराचार्य	40.00
इस्लाम और इनसान (1-6)	–डॉ॰ सैयद शाहिद अली	84.00
दलित समस्या जड़ में कौन?	–इन्तिज़ार नईम	140.00
हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) और भारतीय धर्म-ग्रंथ	–डॉ॰ एम॰ ए॰ श्रीवास्तव	18.00
इस्लामी सभ्यता	–मुंशी प्रेम चन्द्र	5.00
क़ुरआन पुकारता है "ऐ लोगो..."	–मुहम्मद ज़ैनुल आबिदीन मंसूरी	12.00
आधुनिक नारी	–नुज़हत यासमीन	10.00
इस्लाम एक मात्र रास्ता	–मुहम्मद ज़ैनुल आबिदीन मंसूरी	12.00
शैतानी धोखे के विभिन्न रूप	–डॉ॰ सैयद शाहिद अली	40.00

हमारी सभी पुस्तकें मर्कज़ी मक्तबा इस्लामी पब्लिशर्स से भी प्राप्त की जा सकती हैं।

MADHUR SANDESH SANGAM

E-20, Abul Fazl Enclave, Jamia Nagar, New Delhi-110025

E-mail : madhursandeshsangam@yahoo.co.in, Ph. : 9212356332

بسم اللہ الرحمن الرحیم

"नेकी यह है कि
अल्लाह की मुहब्बत में
अपना दिलपसन्द माल
रिश्तेदारों और यतीमों पर,
मिस्कीनों और मुसाफ़िरों पर,
मदद के लिए हाथ फैलाने
वालों पर और ग़ुलामों की
रिहाई पर ख़र्च करो ।"

(कुरआन)

Ek Hamdard, Ranchi
(Jharkhand)

मौक़ा

■ डॉ० सुरेश उजाला
(लखनऊ, उ०प्र०)

सुयोग-अवसर-मौक़ा-
न काम करता है-
न ही गुलामी-
वह आता है-सदैव-
दूसरों के काम ।

जो दौड़ता है-
उसकी ओर-
पा जाता है-वही
खुशियों का छोर ।

कामयाबी का-
मूल स्रोत है- मौक़ा,

मौक़ा-
तलाश करता है-
जीवन में-हर आदमी ।
लेकिन मौक़ा-
साथ नहीं चलता-
हर किसी के ।

जैसा मौक़ा-
वैसा बनना पड़ता है
समयानुसार, इंसान को
कुछ लोग-
आजीवन
तलाश करते हैं मौक़ा ।

लेकिन मौक़ा-
रहता है-चलता है-
दृढ़ प्रतिज्ञ-
और
तीव्र चैतन्य-
लोगों के साथ ।

जिसके सहारे -
पहुंचते हैं-वे-
सफलता के द्वार ।

अतएव -
सफलता की-
सीढ़ी है-मौक़ा ।

जो पहचानता है-
मौके की नज़ाक़त-
उसे-
पहचानता है-मौक़ा ।

मौक़ापरस्त इन्सान-
नहीं मानते-हार-
वे तलाश करते हैं-
निरंतर-मौक़ा-
एक के बाद एक ।

क्योंकि-
वे जानते हैं-
मौक़ा लगते ही-
दबोच लेता है-बगुला-
मुंह में मछली ।

मौक़ा चूकते हैं-
नादान लोग ।

हर सफल व्यक्ति-
तलाश-अन्वेषण करता है-
मौक़ा ।

मौक़ा
रहता है-सभी के पास
परिन्दों की भांति-
धाम है-इसका-
उड़ता फिरता है-
यत्र-तत्र-सर्वत्र ।

पारस के समान है मौक़ा-
जो छूते ही लोहे को-
बना देता है-सोना ।

अनाथ लड़कियों की पुकार

VOICE OF ORPHAN GIRLS

मुस्लिम लड़कियों का यतीमख़ाना (गया)

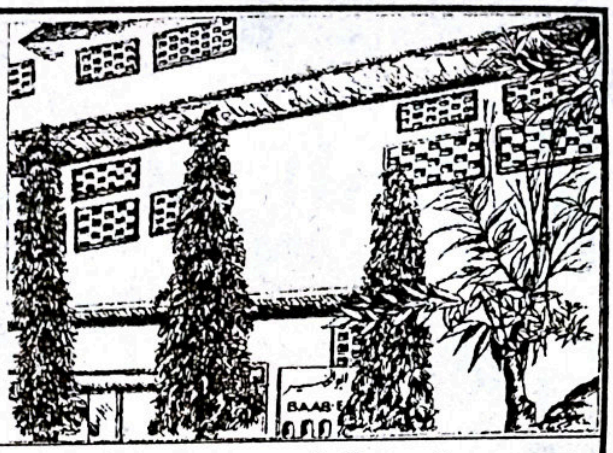

संक्षिप्त परिचय

लड़कियों के लिए आधुनिक और इस्लामी तालीम से लैस राष्ट्रीय स्तर का एक आदर्श रिहाइशी इदारा

● 27 वर्षीय सेवाएं ● 19 विभाग ● शिक्षा : प्राथमिक से मैट्रिक तक ● पत्राचार शिक्षा I.A., B.A. एवं Library Science ● 9 छात्राओं ने हिफ़्ज़ के साथ मैट्रिक पास किया ● प्रौढ़ शिक्षा ● वोकेशनल सेन्टर ● कटिंग और सिलाई: 8 बैच 88 छात्राएं ● ज़री वर्क्स : 5 बैच 53 छात्राएं ● 1993 ई० से 2013 ई० तक 71 अनाथ बच्चियों और 51 मां-बाप वाली बच्चियों ने मैट्रिक पास किया ● वार्षिक ख़र्च : 24 लाख रुपये से अधिक ● आमदनी का स्रोत : मुस्लिम अवाम के चन्दे ● इदारा 120 अनाथ बच्चियों का सारा ख़र्च पूरा करता है ● किफ़ाला स्कीम के तहत एक यतीम बच्ची का वार्षिक ख़र्च 12,000/- रुपये है–आप भी एक अनाथ बच्ची का ख़र्च उठा कर सवाब में शरीक हों ।

सहायता के विभिन्न रूप : ● ज़कात ● सदक़े ● अतिया ● पैदावार की ज़कात ● दीनी किताबें ● ज़मीन की ख़रीदारी और क़र्ज़ की अदायगी ● स्टाफ़ की मासिक आय के लिए 1,00,000/- रुपये से अधिक ● मां-बाप या रिश्तेदारों के नाम कमरा या हॉल बनवाना और निर्माण कार्यों के लिए ईंटें, सीमेंट, सरिया और अन्य सामग्री या उसका मूल्य देना ● यहां प्रतिवर्ष हिसाब चेक किये जाते हैं और ऑडिट होता है । ● इदारा में ख़ुद आकर बराबरी का नमूना देखें कि अनाथ बच्चियां और वे बच्चियां जिनके मां-बाप हैं किस तरह मिलकर रहा करती हैं ।

यह इदारा आप से उदार सहायता की अपील करता है ।

विदेशी चन्दा देने वाले : भारत सरकार से "मुस्लिम लड़कियों का यतीमख़ाना (गया) को विदेशों से चन्दा लेने का इजाज़तनामा प्राप्त हो गया है ।

Foreign Donors विदेशी चन्दा देने वाले

विदेशों में रहने वाले अब BANK A/c No. 300402010009042

BANK CODE NO. UBININBBJAM or IFS Code No. UBIN 0530042

Union Bank of India (Main Branch, GAYA में अपनी रक़म भेज सकते हैं ।

चेक या ड्राफ्ट पर केवल यह लिखें–"THE GAYA MUSLIM GIRLS ORPHANAGE"

Address for correspondence : रक़म भेजने और संपर्क करने का पता

GENERAL SECRETARY, THE GAYA MUSLIM GIRLS ORPHANAGE

At : KOLOWNA, P.O.: CHERKI-824237, Distt.: GAYA (BIHAR) INDIA, Mobile : 9934480190

E-mail : thegayamuslimgirlsorphanage@gmail.com, Website : www.gmgo.org

LOCAL DONORS मक़ामी चन्दा देने वाले

CORE BANKING A/c No. : 300402010007752

BANK IFS CODE-UBI No. 530042 UNION BANK OF INDIA (MAIN BRANCH, GAYA)

नोट : कोर बैंकिंग वाले हज़रात E-mail या डाक से अपना मुकम्मल पता भेज दिया करें ताकि उसी पते पर रक़म की रसीद रवाना की जा सके ।

संस्थापक महासचिव : इक़बाल अहमद ख़ां

जादूगर और साधु

■ हरिशंकर परसाई

हर 15 अगस्त और 26 जनवरी को मैं सोचता हूं कि साल भर में कितने बढ़े । न सोचूं तो भी काम चलेगा बल्कि ज़्यादा आराम से चलेगा । जो इस रोग से मुक्त है और स्वस्थ है, वे धन्य हैं । यह 26 जनवरी 1972 फिर आ गया । यह गणतंत्र दिवस है, मगर 'गण' टूट रहे हैं । हर गणतंत्र दिवस 'गण' के टूटने या नये 'गण' बनने के आंदोलन के साथ आता है । इस बार आंध्र और तेलंगाना हैं । अगले साल इसी पावन दिवस पर कोई और 'गण' संकट आएगा । इस पूरे साल में मैंने दो चीज़ें देखीं । दो तरह के लोग बढ़े-जादूगर और साधु बढ़े । मेरा अंदाज़ा था, सामान्य आदमी के जीवन के सुभीते बढ़ेंगे-मगर नहीं । बढ़े तो जादूगर और साधु-योगी । कभी-कभी सोचता हूं कि क्या ये जादूगर और साधु 'ग़रीबी हटाओ' प्रोग्राम के अंतर्गत ही आ रहे हैं । क्या इसमें कोई योजना है ?

रोज़ अख़बार उठाकर देखता हूं । दो ख़बरें सामने आती हैं । कोई नया जादूगर और कोई नया साधु पैदा हो गया है । उसका विज्ञापन छपता है । जादूगर आंखों पर पट्टी बांधकर स्कूटर चलाता है और 'ग़रीबी हटाओ' वाली जनता कामधाम छोड़कर, तीन-चार घंटे आंखों पर पट्टी बांधे जादूगर को देखती हज़ारों की संख्या में सड़क के दोनों तरफ़ खड़ी रहती है । ये छोटे जादूगर हैं । इस देश में तो बड़े-बड़े जादूगर हैं, जो छब्बीस सालों से आंखों पर पट्टी बांधे हैं । जब वे देखते हैं कि जनता अकुला रही है और कुछ करने पर उतारू है, तो वे फ़ौरन जादू का खेल दिखाने लगते हैं ।

जनता देखती है और ताली पीटती है । मैं पूछता हूं । जादूगर साहब, आंखों पर पट्टी बांधे राजनैतिक स्कूटर पर किधर जा रहे हो ? किस दशा को जा रहे हो । समाजवाद ? खुशहाली ? ग़रीबी हटाओ ? कौन-सा गंतव्य है ? वे कहते हैं । गंतव्य से क्या मतलब ? जनता भी आंखों पर पट्टी बांधे जादूगर का खेल देखना चाहती है । हम दिखा रहे हैं । जनता को और क्या चाहिए ?

जनता को सचमुच कुछ नहीं चाहिए । उसे जादू के खेल चाहिए । मुझे लगता है, ये दो छोटे-छोटे जादूगर रोज़ खेल दिखा रहे हैं, इन्होंने ये प्ररेणा इस देश के राजनेताओं से ही ग्रहण की होगी । जो छब्बीस सालों से जनता को जादू के खेल दिखाकर खुश रखे हुए हैं, तो उन्हें तीन-चार घंटे खुश रखना इन छोटे जादूगर के लिए क्या कठिन है । इसलिए अख़बार में रोज़ फोटो देखता हूं, किसी शहर में नये विकसित किसी जादूगर की । सोचता हूं, जिस देश में एकदम से इतने जादूगर पैदा हो जाएं, उस जनता की अंदरूनी हालत क्या है ? वह क्यों जादू से इतनी प्रभावित है ? वह क्यों चमत्कार पर इतनी मुग्ध है ? वह जो राशन की दुकान पर लाइन लगाती है और राशन नहीं मिलता । वह लाइन छोड़कर जादू के खेल देखने क्यों खड़ी रहती है ? मुझे लगता है, छब्बीस सालों में देश की जनता की मानसिकता ऐसी बना दी गयी है कि-जादू देखो और ताली पीटो । चमत्कार देखो और खुश रहो । बाक़ी काम हम पर छोड़ो ।

भारत-पाक युद्ध भी ऐसा ही एक जादू था । ज़रा बड़े स्केल का जादू था, पर था जादू ही । जनता अभी तक ताली बजा रही है । उधर राशन की दुकान पर भी लाइन बढ़ती जा रही है । देशभक्त मुझे माफ़ करें । पर मेरा अंदाज़ा है, जल्दी ही एक शिमला शिखर-वार्ता और होगी । भुट्टो कहेंगे-'पाकिस्तान में मेरी हालत ख़स्ता । अलग-अलग राज्य बनना चाह रहे हैं । ग़रीबी बढ़ रही है । लोग भूखे मर रहे हैं'.। हमारी प्रधानमंत्री कहेंगी-'इधर भी ग़रीबी हट नहीं रही । क़ीमतें बढ़ती जा रही हैं । जनता में बड़ी बेचैनी है । बेकारी भी बढ़ती जा रही है । 'तब दोनों तय करेंगे-'क्यों न पंद्रह दिनों का एक और जादू हो जाए । चार-पांच साल दोनों देशों की जनता इस जादू के असर में रहेगी ।' देशभक्त माफ़ करें, मगर ज़रा सोचें । जब मैं इन शहरों के इन छोटे जादूगरों के करतब देखता हूं, तो कहता हूं । बच्चों, तुमने बड़े जादू नहीं देखें । छोटे देखे हैं तो छोटे जादू ही सीखे हो ।

दूसरा कमाल, इस देश में 'साधु' है। अगर जादू से नहीं मानते और राशन की दुकान पर लाइन भी लगातार बढ़ रही है, तो लो साधु लो। जैसे जादूगरों की बाढ़ आयी है, वैसे ही साधुओं की भी बाढ़ आयी है। इन दोनों में कोई संबंध ज़रूर है। आत्मा को जगाओ। उसे विश्वात्मा से मिलाओ। अपने को भूलो। अपने सच्चे स्वरूप को पहचानो। तुम सत्-चित्-आनंद हो। आनंद ही ब्रह्मा है। राशन ब्रह्मा नहीं। जिसने 'अन्न ब्रह्मा' कहा था, वह झूठा था। नौसिखिया था। अंत में वह इस निर्णय पर पहुंचा कि अन्न नहीं 'आनंद' ही 'ब्रह्मा' है। पर, भरे पेट और ख़ाली पेट का आनंद क्या एक सा है ? एक ब्रह्मा ठाठ से रहता है, दूसरा ब्रह्मा राशन की दुकान में लाइन से खड़ा रहता है, तीसरा ब्रह्मा रेलवे के पुल के नीचे सोता है। सब ब्रह्मा ही ब्रह्मा है।

शक्कर में पानी डालकर जो उसे वज़नदार बनाकर बेचता है, वह भी ब्रह्मा है और जो उसे मजबूरी में ख़रीदता है, वह भी ब्रह्मा है। यानी ब्रह्मा ही ब्रह्मा को धोखा दे रहा है। साधु का भी यही कर्म कि वह मनुष्य को ब्रह्मा की तरफ़ ले जाए और पैसे इकट्ठे करे; क्योंकि 'ब्रह्मा सत्य जगन्मिथ्या'। 26 जनवरी आते आते मैं यही सोच रहा हूं कि 'हटाओ ग़रीबी' के नारे को, हटाओ महंगाई को, हटाओ बेकारी को, हटाओ भूखमरी को। क्या हुआ ? बस, दो तरह के लोग बहुतायत से पैदा करें।

जादूगर और साधु। ये ही इस देश की जनता को कई शताब्दी तक प्रसन्न रखेंगे और ईश्वर के पास पहुंचा देंगे। हे भारत भाग्य विधाता। हममें यह क्षमता दें कि हम तरह-तरह के जादूगर और साधु इस देश में लगातार बढ़ाते जाएं। हमें इससे क्या मतलब है कि 'तर्क की धारा सूखे मरुस्थल की रेत में न छिपे' (रवीन्द्रनाथ)। वह तो छिप गयी। इसलिए 'जन-गण-अधिनायक', बस हमें तो जादूगर और पेशेवर साधु ही चाहिए। तभी तुम्हारा यह सपना सच होगा कि। हे परमेश्वर उस स्वर्ग में परसाई जी का एक पुराना व्यंग्य लेख, जो अब भी प्रासंगिक है। मेरा यह देश जाग्रत हो (जिसमें जादूगर और साधु जनता को ख़ुश रखें)। यह हो रहा है—परमेश्वर की कृपा से।

(परसाई जी का एक पुराना व्यंग्य लेख, जो अब भी प्रासंगिक है। —संपादक)

तितली

कभी इस फूल से
कभी उस फूल से,
रस पीकर
उड़ जाती तितली।
बैठती है जब
यह फूलों पर,
मीठा-मीठा शोर भी
मचाती तितली।
कई रंग समाये हैं
इसके अन्दर,
इंद्रधनुष का एहसास
कराती तितली।
ख़ुश हो जाते हैं बच्चे सारे
अपने पंख जब
हिलाती तितली।
छुई-मुई सी
कोमल परियों जैसी,
बच्चों के मन को
भाती तितली।
बच्चे पकड़ना चाहते
भागते इसके पीछे,
हाथ न किसी के
आती तितली।
करें प्रकृति से प्यार "लाडी"
जीवन रस सिखलाती तितली।

अमित कुमार लाडी
डोडां स्ट्रीट, फ़रीदकोट-151203 (पंजाब)

मुद्रक एवं प्रकाशक ख़लील अहमद द्वारा दावत ट्रस्ट (रजि०), D-314, दावत नगर, अबुल फ़ज़्ल इन्कलेव, जामिया नगर, नयी दिल्ली-110025 से प्रकाशित एवं भारत ऑफ़सेट, गली क़ासिम जान, बल्लीमारान, दिल्ली-6 से मुद्रित।
फोन: 09818799223, 011-26949430
संपादक : डॉ० मुहम्मद अहमद

संस्था की लिखित अनुमति के बिना सम्पूर्ण या आंशिक पुनर्प्रकाशन पूर्णतः प्रतिबंधित है।

NO BRANCH





Suleman Usman Mithaiwala

THE SWEET PEOPLE

PHONE : 23443966/23465059/23454842

167, IBRAHIM MERCHANT ROAD,
BELOW MINARA MASJID, MUMBAI-400 003

BAKERY :
33, MOHAMEDALI ROAD, MUMBAI-400 003

Posted on 20-21 December 2013
January 2014
E-mail: kantihindimonthly@yahoo.com
Publishing Date: 18.12.2013

हिन्दी भाषियों की मासिक पत्रिका
कान्ति

RNI 53372/91
DL(S)-01/3147/2012-2014
LICENSED TO POST WITHOUT PREPAYMENT
License No. U (SE)-73/2012-14

بسم الله الرحمن الرحيم

• इन्सानियत सूद की ज़ंजीरों में जकड़ी हुई परेशानहाल है।

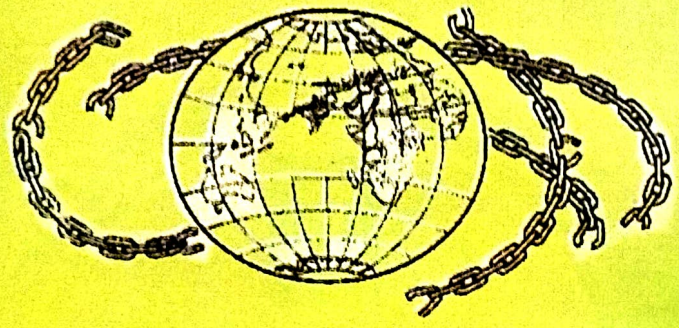

• इस्लाम की आर्थिक व्यवस्था ही इन ज़ंजीरों को तोड़ने में कामयाब हो सकती है।

इस्लामिक वेल्फ़ेयर सोसायटी, भटकल

इसी जिद्दोजेहद में मसरूफ़े अमल है

**Interest is unhuman, unkind, unjust & disastrous.
Islamic System of Interest free Banking can help to establish
Peace and Economic Prosperity for the whole mankind.
Islamic Welfare Societystruggles to achieve this noble task.**

Patel Kadir Meeran
(Secretary)

Syed Abdullah Lanka
(President)

ISLAMIC WELFARE SOCIETY

211, Main Road, BHATKAL - 581320
(Karnataka) Tel.: 08385 - 226601